हिन्दुस्थान के इतिहास की सरल कहानियां

(मानचित्र और चित्र समेत)

ई. मार्सडेन, बी. ए., एफ. आर. जी. एस., एम. आर. ए. एस.

और

लाला सीताराम, बी. ए., एफ. ए. यू., एम. आर. ए. एस.

रचित

विस्तृत संस्करण

मैकमिलन ऐण्ड कम्पनी, लिमिटेड

कलकत्ता, बम्बई, मद्रास, लण्डन

१९२७

सूचीपत्र।

पाठ । पृष्ठ

पाठ। | पृष्ठ

मूल्य १)

हिन्दी-मानचित्रावली

सूचीपत्र

मैकमिलन ऐण्ड कम्पनी, लिमिटेड
कलकत्ता, बम्बई, मद्रास, लण्डन

हिन्दुस्थान के इतिहास की सरल कहानियां

१—बरफ़ की ऊंची भीत।

१—हिन्दुस्थान एशिया महाद्वीप का एक खण्ड है। बड़े बड़े ऊंचे पहाड़ों की एक श्रेणी इसको सब से अलग किये हुए है। यह श्रेणी ऊंची भीत सी बरफ़ से ढकी एक हज़ार मील तक फैली है। इस पर्वतश्रेणी को हिमालय कहते हैं और यह चार पांच मील और कहीं कहीं छः मील तक ऊंची हो गई है और आकाश से बातें करती हैं। तुम लोगों को बीस फुट ऊंची भीत पर चढ़ना अखड़ जायगा। अब सोचो कि एक हज़ार भीतें बीस फुट ऊंची तले ऊपर खड़ी हैं। यह भीतें तो बादलों के ऊपर पहुंच जायंगी।

२—हिम का अर्थ पाला और आलय का अर्थ घर है। हिमालय का अर्थ हुआ पाले का घर। यह नाम इस लिये

पड़ा है कि इन पहाड़ों के ऊपर बरफ़ जमी रहती है जो कभी नहीं गलती। वहां इतनी ठण्डक है कि कोई जीवजन्तु नहीं जी सकता, न कोई पेड़ उग सकता है वहां सदा सन्नाटा रहता है और चारों ओर बरफ़ ही बरफ़ देख पड़ती है।

३—हिमालय के पार भारत के उत्तर का देश मध्य एशिया कहलाता है। यहां भी बड़ी ठण्ड पड़ती है। धरती बहुधा पथरीली है; पानी बहुत कम बरसता है और बहुत थोड़ी नदियां हैं। पठार इतने ऊंचे हैं कि इन देशों को पृथ्वी की छत कहते हैं। इन ठण्डे पठारों के रहनेवाले अपने ढोरों के लिये घास चारे की खोज में इधर उधर फिरा करते हैं। वहां अनाज का उपजाना बहुत कठिन है। इससे वहां के रहनेवालों को अन्न की चिन्ता लगी रहती है।

४—पर हिमालय के दक्षिण की दशा दूसरी है। यहां लम्बे चौड़े मैदान हैं जिन पर सूर्य्य की किरणों का प्रकाश सदा रहता है। दिन में ठण्ड बहुत कम पड़ती है और इनमें बड़ी बड़ी नदियां बहती हैं; धरती उपजाऊ हैं; पानी बहुत है; सब फ़सलें अच्छी होती हैं और थोड़े परिश्रम से यहां के रहनेवाले खाने पीने से सुचित रह सकते हैं। यह मैदान पूर्व से पश्चिम पांच सौ कोस तक एक बड़े बाग की भांति फैला हुआ है और इसका नाम हिन्दुस्थान है।

५—इस हरे भरे बाग़ के उत्तर वह बरफ़ की भीत है जिसका हाल हम ऊपर लिख चुके। यह भीत इसकी उत्तर

बरफ़ की ऊंची भीत।

की ओर से आड़ किये हुए है। इसके पूर्व और पश्चिम और इसके कुछ दूर दक्षिण हिन्द का महासागर फैला है। अगले दिनों में जहाज़ न थे। लोगों के पास छोटी छोटी नावें थीं जिनसे समुद्र पार करना कठिन था। यही कारण है कि भारत पुराने समय में उत्तर में बरफ़ की भीत से और तीन ओर समुद्र से सुरक्षित था।

६—यह भीत भरतखंड के उत्तर पूर्व समुद्र से पश्चिम समुद्र तक चली गई होती तो उत्तर के ठण्डे देशों से कोई भारत में न आ सकता, पर इसके दोनों सिरों पर पूर्व में और पश्चिम में ये पहाड़ बहुत नीचे हो गये हैं और इनके बीच बीच में घाटियां और दर्रे हैं जिन से होकर लोग आ सकते हैं। यह दर्रे बहुत ऊंचे हैं और बरफ़ से इतने ढके रहते हैं कि आना जाना कठिन हो जाता है। पर साहसी वीरों को कौन रोक सकता है।

७—बहुत दिनों से उत्तर के ठण्डे देशों के रहनेवाले इन्हीं घाटियों से होकर हमारे गरम उपजाऊ मैदानों में आते रहे हैं। यहां आने पर उन्होंने जाना कि इस देश में खाने पीने का सुख है और वे यहीं बस गये।

२—भारत की कहानी।

१—जब ये साहसी वीर पहाड़ी घाटियों में होकर उत्तर से हिन्दुस्थान में आये तो, वे यहां के रहनेवालों से लड़े और बहुतेरों को अपना दास बना लिया और बहुतेरों को हिन्दुस्थान के दक्षिण देशों में भगा दिया। हिन्दुस्थान के रहनेवालों से यह उत्तर के आनेवाले लम्बे थे, गोरे थे, डील डौल में बड़े और बलवान थे। यह लोग सूर्य्य, चन्द्र, आकाश, हवा और बादलों को देवता मानते थे और इनकी पूजा करते थे। पहिली जाति के लोग जो इस देश में आये आर्य थे और एक प्रकार की संस्कृत भाषा बोलते थे। आर्य लोग यहां के रहनेवालों को नीच मानते थे क्योंकि वह लोग न ऐसे बलवान, न ऐसे चतुर, न ऐसे गोरे और न ऐसे सुन्दर थे ;

२—जब ये लम्बे और गोरे उत्तरवाले भारत में आये तो उनसे बहुत पहले से इस उपजाऊ देश में रहनेवाले इतने दिनों तक रह चुके थे कि, अब यह जानना कठिन है कि वह भी कहीं बाहर से आये थे या यहीं के रहनेवाले थे। ये सारे देश में फैले थे और इनके कई कुल और कई परिवार थे। इनमें कोल और द्राविड़ मुख्य थे।

३—उत्तरवालों की भांति ये दक्षिणवाले बली और चतुर न थे। पर यह सब के सब जंगली और असभ्य भील थे। उनमें से बहुतेरे नगरों और गावों में रहते थे, खेती

करते थे ; अपने राजा के साथ लड़ाई पर जाते थे और जब देश में शान्ति रहती थी तो, उसके शासन में रहते थे। यह कई प्रकार की भाषायें बोलते थे जिनमें मुख्य वह भाषा थी जिसका तामील एक रूप है। हज़ारों बरस तक गरम देश में

आर्य्यों की सूर्य्य पूजा।

रहते रहते वह काले हो गये थे। ये पुराने रहनेवाले सांपों की, पेड़ों की और अपने पितरों की पूजा करते थे ; अपने देवताओं से डरते थे और उनसे यही मनाया करते थे कि तुम हमको दुख न दो।

४—बहुत दिन पीछे उत्तर से और जाति के लोग भी आये। ये यूनानी, ईरानी, तुर्क, शक और हून थे। इस में सन्देह नहीं कि और लोग भी रहे होंगे पर उनका अब कोई नाम तक नहीं जानता। पहिले यह लोग भी यहां के रहनेवाले आर्य, कोल और द्राविड़ लोगों से जो मिल जुल

द्राविड़ों की नाग-पूजा।

गये थे, उनसे लड़े, पीछे उन्होंने भी मेल कर लिया और यहीं बस गये।

५—भारत के रहनेवाले कई जाति के लोग थे। हर जाति और हर गोत्र का एक नाम था पर और देशों के रहनेवाले उनको एकही नाम से पुकारते थे। परदेशी उनको हिन्दू और उनके देश को हिन्दुस्थान कहते थे।

६—भारत की कहानी सुनने से तुम जानोगे कि बहुत

दिन पीछे इन्हीं घाटियों की राह से उत्तर से और लोगों के झुण्ड के झुण्ड आये थे। यह लोग मुसलमान थे। मुसलमान सब से पहिले नौ सौ बरस हुए आये थे। इसके पीछे उनका आना बन्द न हुआ और पांच सौ बरस में उन्होंने हिन्दुओं को परास्त कर दिया और देश के बहुत से प्रान्तों पर शासन करने लगे।

७—सब से पीछे जहाज़ों पर व्यापार करने के लिये लोग यूरोप से आये। वे अपने जहाज़ों पर माल लाद लाते थे जिसे वे हिन्दुस्थानियों के साथ बेचते थे और यहां से वह माल ले जाते थे जो यहां होता है। यह यूरोपवाले पुर्तगाली, डच, फ़रासीसी और अङ्गरेज़ चार सौ बरस हुए यहां आये थे। यह लोग आपस में लड़ते रहे। अन्त में अङ्गरेज़ों ने सब को मार भगाया और सारे भरतखण्ड को अपने बस में कर लिया। इस समय अङ्गरेज़ लोग इस देश के हाकिम है और इङ्गलैण्ड के बादशाह भारत के सम्राट् हैं।

३—रामकहानी।

१—बहुत दिनों की बात है। कम से कम तीन हज़ार बरस हुए उत्तर-भारत के हिन्दू अनेक जातियों में बंटे हुए थे और एक एक जाति का एक राजा उसपर राज करता था। इन लोगों के आपस में भी चार चार वर्ण थे।

रामचन्द्र जी धनुष चलाना सीख रहे हैं।

२—सब से ऊंचे वर्ण के लोग ब्राह्मण कहलाते थे। यह सब पुजारी थे और इनका काम देवताओं की पूजा करना था। और लोग इनको पूज्य मानते थे। दूसरी जाति क्षत्रियों की थी। यह लोग सिपाही थे और इनका काम लोगों की रक्षा के लिये लड़ना भिड़ना था। राजा सदा इसी वर्ण का होता था। तीसरा वर्ण वैश्यों का था, जो दूकानदारी करते या व्यापारी थे। चौथे वर्ण के लोग शूद्र थे। यह लोग धरती जोतते और, और वर्णों की टहल करते थे। इस जाति में बहुत से चाण्डाल भी रहते थे, जो औरों के दास होते थे।

३—इस समय के क्षत्रिय राजाओं में सब से प्रसिद्ध श्रीरामचन्द्रजी हुए। इनके पिता महाराजा दशरथ कोशल देश के राजा थे, जो आज कल उत्तर भारत में अवध प्रांत के नाम से प्रसिद्ध है। श्रीरामचन्द्रजी देश भर में सब से बलवान और बड़े वीर थे।

४—उसी समय में सब से बढ़कर सुन्दरी कन्या श्रीसीताजी थीं। वे एक दूसरे क्षत्रिय राजा महाराज जनक की बेटी थीं। महाराज जनक के पास एक बड़ा भारी धनुष था, और उन्होंने यह प्रतिज्ञा की थी कि, सीता का व्याह उसी के साथ होगा जो इस धनुष को झुका सके। सीताजी ऐसी सुन्दर ऐसी मोहनी और ऐसी सुशीला थीं कि, देश देश के राजा उनके साथ अपना विवाह करना चाहते थे। राजा पर राजा उस बड़े धनुष को झुकाने आये

पर किसी से धनुष उठा तक नहीं सका। किसी किसी ने तो उसे हाथ भी नहीं लगाया।

५—श्रीरामचन्द्रजी ने उस भारी धनुष को सहज ही उठा लिया और ज्यों हीं उसको झुकाने लगे, उसके दो टुकड़े हो गये ; लोग बहुत प्रसन्न हुए और सीता का श्रीरामचन्द्रजी के साथ बड़ी धूम धाम से विवाह हो गया।

६—श्रीरामचन्द्रजी चार भाई थे। पर उनके पिता महाराज दशरथ उन्हीं को बहुत अधिक मानते थे, और यह चाहते थे कि श्रीरामचन्द्र ही उनके पीछे अवध के राजा हों। पर उनकी तीन रानियां थीं, और उनकी सब से छोटी रानी जिन से श्रीरामचन्द्रजी न थे, अपने बेटे को राज्य का उत्तराधिकारी बनाना चाहती थीं।

महाराज दशरथ ने एक बार उनको यह वचन दिया था कि तुम जो मांगोगी वही तुमको देंगे। उसी वचन की सूध दिलाकर रानी ने कहा "राम को चौदह बरस के लिये वन को भेज दीजिये और मेरे लड़के को अपना उत्तराधिकारी बनाइये, जिसमें आपके पीछे वही राजा हो।"

बूढ़े राजा को रानी की बातें सुन कर बड़ा दुख हुआ। अपने प्यारे बेटे को वन कैसे भेज सकते थे। अवध के रहनेवालों ने जो जाना कि ऐसे सुन्दर और ऐसे वीर राजकुमार को वनवास दिया जाता है तो, उन्हें बड़ा सोच हुआ और वे रामचन्द्रजी से बोले कि "आप वन को

न जायं।" पर श्रीराचन्द्रजी ने किसी की न सुनी। वह बोले, "क्षत्रिय राजा का धर्म है, कि अपनी बात पर दृढ़ रहे। हमारे लिये वन में मर जाना इससे अच्छा है कि, हमारे पिता का वचन टले।"

७—श्रीरामचन्द्रजी की इच्छा न थी कि सीताजी भी साथ जायं। वे समझते थे कि सीताजी वन में न रह सकेंगी। उन्होंने सीताजी से कहा कि तुम घर रहो पर सीताजी ने न माना। वे बोलीं "जहां आप जायंगे वहीं मैं भी जाऊंगी। मैं आपकी धर्म-पत्नी हूं और आपका साथ छोड़ नहीं सकती। क्या मेरा आपका नाता यही है कि जब तक आप महल में रहें आपके साथ रहूं? आप जहां रहेंगे वहीं मुझको सुख मिलेगा। आपके साथ विकट वन महल हो जायंगे और आपके बिना अच्छा से अच्छा महल सूना वन लगेगा। आप मुझे घर रहने को न कहिये। जहां आप रहेंगे वहीं मैं रहूंगी, और जहां आप मरेंगे वहीं मैं भी मर जाऊंगी।"

८—श्रीरामचन्द्रजी के साथ उनके छोटे भाई लक्ष्मण भी चलने को तैय्यार हो गये, और श्रीरामचन्द्र सीता और लक्ष्मण अयोध्या से निकल कर पहले मध्य भारत के पहाड़ी-देशों में पहुंचे और वहां से चलकर दक्षिण देश के एक वन में जाकर ठहरे। जहां नदियां पड़ती थीं वहां नाव पर चढ़कर पार जाते थे।

रामचन्द्र नाव पर गङ्गा पार कर रहे हैं।

९—श्रीरामचन्द्रजी के अवध से जाने के थोड़े ही दिन पीछे बुड्ढे राजा मारे सोच के मर गये।

श्रीरामचन्द्रजी की सौतेली मां ने समझा कि अब मेरा लड़का भरत राज करेगा, पर भरत बड़े सज्जन और बड़े धर्मात्मा थे और श्रीरामचन्द्रजी से बड़ी प्रीति रखते थे।

भरत श्रीरामचन्द्रजी को ढूंढ़ने निकले और उनसे भेंट हुई तो बोले, "आप घर लौट चलें और अपना राज लें।"

पर श्रीरामचन्द्रजी न लौटे और बोले, "हमारे पिता यह वचन दे चुके हैं कि, हम चौदह बरस वन में रहें और हमने उनका वचन मान लिया है। क्षत्रिय राजकुमार को अपनी बात पर दृढ़ रहना चाहिये। जब तक चौदह बरस न बीत जायेंगे हम अवध न जायेंगे।"

इस पर भरतजी लौट आये। पर उन्होंने राजा बनना स्वीकार न किया। उन्होंने राज-सिंहासन पर श्रीरामचन्द्रजी की खड़ाऊं रख दी जिसमें, लोग जानें कि श्रीरामचन्द्र ही राजा हैं और आप उनके लौटने तक राज संभालते रहे।

१०—रामचन्द्रजी वन में कई बरस रहे और वहां उन्होंने बनवासियों से मेल कर लिया। इनमें से कुछ लोग छोटे और कुरूप थे और वनों में रहते थे, इसी से लम्बे गोरे और सुन्दर क्षत्रिय उनको बन्दर कहते थे।

एक दिन जब राम और लक्ष्मण दोनों अहेर को दूर निकल गये थे, एक पापी राजा जिसका नाम रावण था

सीताजी को हर ले गया और अपने लङ्का टापू में ले जा कर रखा।

श्रीरामचन्द्रजी ने इन्हीं वन के रहनेवालों की सहायता से रावण पर चढ़ाई कर दी। इन लोगों के सेनापति हनूमानजी थे जिनको हिन्दू लोग अब तक पूजते हैं।

रावण मारा गया और सीताजी फिर श्रीरामचन्द्रजी के पास आ गईं।

११—इतने में चौदह बरस भी बीत गये। श्रीरामचन्द्र वन से लौटे और अवध में उन्होंने बहुत दिनों तक राज किया। उनकी कथा एक बड़े ग्रन्थ में लिखी है। उसका नाम रामायण है। हज़ारों बरस से हिन्दू इनको ईश्वर का अवतार मानकर पूजते हैं। हर हिन्दू लड़के को चाहिये कि श्रीरामचन्द्रजी की भांति वीर और सत्यवादी बने और हर हिन्दू लड़की को उचित है कि श्रीसीताजी का अनुकरण करे।

४—बुद्धदेव की कथा।

१—पचीस सौ बरस हुए और श्रीरामचन्द्र से बहुत पीछे उसी अवध प्रान्त में एक दूसरे राजकुमार का क्षत्रिय राजा के घर में जन्म हुआ। वह भी ऐसाही प्रसिद्ध हुआ हैं। जैसे श्रीरामचन्द्रजी हैं।

इस राजकुमार के पिता शाक्यवंश के राजा थे। वे बड़े

वीर योद्धा थे और उनकी यह इच्छा थी कि यह राजकुमार भी जो इनका एकलौता बेटा था उन्हीं की भांति योद्धा हो। इससे राजकुमार को तीर चलाना, बरछे और तलवार का काम सिखाया गया। गौतम बड़े सुन्दर थे और उनके पिता और उनके कुल के लोग उनको बहुत मानते थे। उनका विवाह एक परम सुन्दरी राज-कन्या के साथ हुआ था और इनसे एक लड़का भी था।

गौतम।

२—उनका नाम गौतम था और उनको सिद्धार्थ भी कहते हैं। वे बचपन ही में बहुत सोचा करते थे। उनकी बोली बहुत ही मीठी थी। उनका चित्त बड़ा कोमल था और वे बड़े दयालु थे। कभी अहेर को जाते और देखते कि निरापराध हरिण खेत में चर रहा है तो, चढ़ी कमान उतार लेते थे। वे अपने मन में कहते "मैं इन बेचारे जीवों को क्यों मारूं ? और वान को तरकस में रख कर लौट आते। घुड़दौड़ में घोड़े को हांफता देखकर ठहर जाते और कहते थे कि खेल में हमारे हार जाने से क्या बिगड़ेगा। घोड़े को क्यों दुख दिया जाय।"

३—एक दिन वसन्त ऋतु में उनके पिता ने उनसे कहा

"चलो हरे भरे खेत देखें"। दोनों बाप बेटे सुन्दर सुहावने बाग़, बावली, हरे हरे खत, फलों से लदे पेड़ देखते चले जा रहे थे। गौतम को भी बड़ा आनन्द मिलता था। इतने में उनको आंख एक हलवाहे पर पड़ी। यह हलवाहा एक बैल हांक रहा था जिसकी पीठ पर बड़ासा घाव था और उसको लाठी से मार मार कर चला रहा था। बेचारा बैल पीड़ा के मारे गिर पड़ता था। इस के पीछे गौतम ने देखा कि एक बाज़ एक पिड़की को मार कर खा रहा है। आगे देखा कि एक पिड़की कीड़े चुन चुन खा रही है। यह चरित्र देख गौतम को बड़ा दुःख हुआ और वह घर लौट गये।

४—इसके कुछ दिन पीछे गौतम ने एक सपना देखा। उन्हें एक बुड्ढा देख पड़ा। वह बुढ़ापे से ऐसा निर्बल हो गया था कि उससे चलने की कौन कहे खड़ा भी न हुआ जाता था। इसी समय उनसे सपने में किसी ने कहा "गौतम तुम भी एक दिन ऐसे ही बुड्ढे और निर्बल हो जाओगे।" "फिर उनने देखा कि एक रोगी दुख के मारे कराह रहा है" फिर उनसे किसी ने कहा "गौतम तुम भी एक दिन ऐसे ही दुखी होगे।" फिर उन्हें एक मनुष्य धरती पर पड़ा दिखाई दिया उसका शरीर ठण्डा था और उसके हाथ पैर अकड़ गये थे। उसी समय कोई बोल उठा "गौतम तुम्हें भी एक दिन मरना है।"

५—गौतम इस समय तीस बरस के हो चुके थे। दूसरे दिन गौतम, अपने मा, बाप, स्त्री, बच्चे सब को छोड़ कर वन को

चले गये। वहां सात बरस तक यही विचार करते रहे कि जो दुख, पाप और संताप संसार में फैला है उससे बचने का उपाय न हो तो उसके घटने ही का कोई यत्न निकले। अन्त को उनने समझ लिया कि हमने सुख का भाग निकाल लिया।

बुद्धदेव।

६—ऐसा निश्चय करके वह वन से निकल आये और पैंतालीस बरस तक देश में घूम घूम कर एक नये धर्म का प्रचार किया। उनको राजकुमारपन देखाने का कोई प्रयोजन न रह गया था, इस से उनने अपना नाम बदल कर बुद्ध रख लिया जिसका अर्थ जगा हुआ या बुद्धिमान् है। उन का धर्म बौद्धमत कहलाता है। उन के जीते जी लाखों भारतवासी उनके मत में आ गये और उन के पीछे छः सौ बरस तक इस देश का प्रधान धर्म बौद्धमत ही था। उनके मरने पर सैकड़ों बरस तक उन के मतवाले उन को देवता

मानकर पूजते थे और उन की बहुत सी मूर्त्तियां स्थापित की गईं। हम ने ऐसी ही मूर्त्ति का एक चित्र छाप दिया है।

७—बुद्ध जी बड़े कारुणिक थे। उन्होंने यह सिखाया कि जितने जीव जन्तु हैं सब पर दया करना हमारा धर्म है और उनको दुःख देना पाप है। उनका यह वचन है कि सब मनुष्य स्वतन्त्र और सब बराबर हैं और यदि लोग सच बोलें, पाप न करें, शुद्ध आचरण रखें, तो नीच से नीच बड़े से बड़े के बराबर हो जायं।

५—विक्रमादित्य और उनका सिंहासन।

१—हम तुमको बता चुके कि बौद्धमत हिन्दुस्तान का छः सौ बरस तक प्रधान धर्म था। इसके पीछे हिन्दू-धर्म के एक नये रूप ने उसे धीरे धीरे यहां से निकाल दिया। बुद्ध के उपदेशों के माननेवाले घटते गये और ब्राह्मणों के धर्म पर चलनेवाले बढ़ते रहे। धीरे धीरे चार सौ बरस में यहाँ बौद्धमत का कोई न रह गया।

२—इस चार सौ बरस के समय को—जब नये रूप का हिन्दूधर्म धीरे धीरे बौद्धधर्म की जगह स्थापित हुआ था, "नया हिन्दूकाल" कहते हैं। इसका आरम्भ आज से १६०० बरस पहिले हुआ था। इस समय में बहुतेरे हिन्दू राजा हुए। इन में विक्रम सब से प्रसिद्ध हो गये हैं।

इनका पूरा नाम विक्रमादित्य था और इन्हें विक्रमार्क या विकरमाजीत भी कहते हैं। यह अपने समय के बड़े वीर हो गये हैं। उनके बारे में सैकड़ों कहानियाँ प्रसिद्ध हैं और इनको एक एक बच्चा जानता है क्योंकि ये कहानियाँ सब भाषाओं में लिखी गई हैं।

३—विक्रम को हुए इतना समय बीत गया कि अब उनका ठीक समय निश्चय करना कठिन है। वह इतने प्रसिद्ध हुए कि उनके पीछे कितने राजाओं ने अपना नाम विक्रमादित्य रख लिया। कई विक्रम हुए और उनमें से कोई कोई बड़े प्रसिद्ध राजा थे। उनकी कीर्त्तियों की कहानियाँ पहिले विक्रम की कीर्त्तियों के साथ ऐसी मिल गई हैं कि अब इन में भेद करना कठिन हो गया है। पर विद्वानों का यह मत हैं कि वह विक्रमादित्य पन्द्रह सौ बरस पहिले हुए थे। उनका उपनाम विक्रमादित्य था और उनका मुख्य नाम चन्द्रगुप्त द्वितीय था। वह गुप्त वंश के सम्राटों में सब से बड़े थे। गुप्त वंश के राजा कई सौ बरस तक विन्ध्याचल के उत्तर हिन्दुस्तान में राज करते थे।

४—हम तुमको चन्द्रगुप्त का एक चित्र दिखाते हैं यह चित्र एक सिक्के पर है जो उन्होंने चलाया था। यह सिक्का थोड़े दिन हुए धरती में गड़ा मिला था। उनके दाहिने हाथ में एक बड़ा भारी धनुष हैं जिसको वही झुका सकते थे और बायें हाथ में बड़ा सा बाण है। मालवा

देश में उज्जैन उन की राजधानी थी। यह देश पीछे से पूर्वीय राजपूताने के नाम से प्रसिद्ध हुआ और अरवली की पहाड़ी और विन्ध्याचल के बीच में अब भी बड़ा सुहावना लगता है।

५—चन्द्रगुप्त के पहिले शक जाति के लोग हिन्दुस्थान के पश्चिम-दक्षिण कोने में राज करते थे। यह सिथियावाले भी कहलाते हैं और भारत के उत्तर-पश्चिम देशों से आये थे। चन्द्रगुप्त ने उनको परास्त किया और तब से उनका नाम शकारि पड़ गया।

विक्रमादित्य चन्द्रगुप्त।

६—चन्द्रगुप्त की सभा में बहुत से कवि और विद्वान् थे। चन्द्रगुप्त बड़े गुणग्राहक थे और इसी कारण भारत के हर कोने से विद्वान् उनकी सभा में जाया करते थे। इन में नव विद्वान् ऐसे प्रसिद्ध हुए कि वह उनकी सभा के नवरत्न कहलाते थे। इनमें सब से बड़ा रत्न कालिदास थे जो हिन्दुस्थान के महाकवि माने जाते हैं। विक्रमादित्य की सभा सूर्य की भाँति थी जिसका प्रकाश सारे देश में व्याप रहा था और उस की छटा दूर दूर देशों में भी पहुँचती थी।

७—विक्रम बड़े प्रतापी राजा और बड़े वीर तो थे ही, उनका न्याय भी बड़ा प्रसिद्ध था। लोग कहते थे कि उनके बराबर न्याय करनेवाला न पहले कभी हुआ था न आज तक हुआ है। उनसे न्याय में कभी भूल चूक न हुई। जो कोई उनके पास न्याय कराने आता वह हारता तो भी प्रसन्न रहता और जीतता तो भी उनकी बड़ाई करता था। जिस सिंहासन पर वह बैठते थे उसमें सिंह के रूप के बारह पाये थे। गांव के लोग न उस सिंहासन को भूले और न उस पर बैठनेवाले न्यायकारी राजा को। आज तक लोग अच्छे न्यायाधीश को कहते हैं कि यह विक्रम के सिंहासन पर बैठा है! इस कहावत की जड़ एक विचित्र कहानी है जो इस सिंहासन के विषय में प्रसिद्ध है।

८—विक्रम के सैकड़ों बरस पीछे जिस नगर में वह राज करते थे, वह निपट उजाड़ हो गया था और उस पर जंगल के पेड़ उग आये थे। कुछ बलदियों के लड़के इसी वन में खेला करते थे। एक दिन दो लड़के आपस में लड़ने लगे और एक तीसरे लड़के से बोले कि हमारा न्याय कर दो। वह एक छोटे टीले पर बैठ गया जिस पर घास जमी थी और दोनों लड़कों से बोला कि हम हाकिम बनते हैं तुम्हारा न्याय करेंगे। दोनों लड़कों ने उससे अपना अपना व्योरा कहा। हाकिम लड़के ने चट न्याय

कर दिया और ऐसी बुद्धिमानी से झूठे को झूठा और सच्चे को सच्चा बतलाया जैसे कोई बुद्धिमान् बुड्ढा आदमी न्याय करता है और कुछ गांववाले जो पास खड़े थे बड़ा अचरज मानने लगे। बलदियों को यह खेल बहुत अच्छा लगा और नित एक नये लड़के को हाकिम बनाते पर वह लड़का भी उस ढूहे पर बैठ कर बुद्धिमानों की सी बात करता था और न्याय में न चूकता था।

९—यह बात दूर दूर तक फैली और सयाने लोग भी बलदिये हाकिम के पास अपने मुक़द्दमें लेकर आने लगे। जो लड़का ढूहे पर बैठ कर हाकिम बनता वही बुद्धिमान् हो जाता था और सच्चा न्याय करता था। यह बात उस समय के राजा के कान में पड़ी। उसने अपनी सभा के विद्वानों से पूछा कि यह क्या बात हैं। एक बुद्धिमान् बुड्ढा सरदार बोला, "जहाँ वन लगा है वहाँ पहले विक्रम की राजधानी थी और उनका सिंहासन उसी ढूहे के नीचे गड़ा जाना पड़ता हैं। बलदिया लड़का बोलता है पर जो बात उसके मुँह से निकलती है उसमें सिंहासन के प्रभाव से विक्रम के विचार होते हैं।"

१०—यह राजा भी बहुत ही अच्छा शासक था। इसकी भी इच्छा थी कि जैसा विक्रम पहले हो चुका है वैसा ही मैं भी बुद्धिमान् और न्यायकारी हो जाऊँ। वह बोला, "अच्छा जाओ खोद कर देखो, सिंहासन वहाँ गड़ा

हो तो उसे यहां उठा लाओ हम भी उसी पर बैठ कर न्याय कर जिसमें हमसे कोई भूल चूक न हो।"

११—इस पर बहुत से बेलदार और मज़दूर वहां गये और उन्होंने धरती को दूर तक खोद डाला। दिन भर कठिन परिश्रम करने पर उनको विक्रम का सिंहासन मिला। यह एक मोटे संगमरमर का बना था और उसी पत्थर में खुदे हुए बारह पंखधारी सिंह उसे उठाये हुए थे। इस सिंहासन को पचास मनुष्य उठाकर राजा के महल में ले गये। सिंहासन ऐसा भारी था कि उठानेवाले राह में कई जगह उठते बैठते गये। यह सिंहासन दरबार के कमरे में रखा गया और धोने पोंछने पर पत्थर दर्पण की भांति चमकने लगा।

१२—दूसरे दिन राजा दरबार के कपड़े पहिन कर सिंहासन पर बैठने चला पर ज्योंही उसने बैठना चाहा सिंह बोल उठे और राजा घबरा कर हट गया। हर सिंह बारी बारी यह कहता था "क्या आप विक्रमादित्य के सिंहासन पर बैठने के योग्य हैं? क्या आपने कभी दूसरे राजा का देश या उसका धन लेने की इच्छा नहीं की, जिसका कि आप को कोई अधिकार न था? क्या आपने कभी ऐसा काम किया जिसे आप उचित न समझते थे? क्या आप का अन्त:करण ऐसा शुद्ध और ऐसा पाप रहित है जैसा कि एक छोटे बच्चे का होता है? क्या आप इसके योग्य हैं?

१३—राजा जानता ही था कि मैं ने कई बार और राजाओं का धन और उनका देश लेने के लिये उनसे लड़ाई की है और बहुतेरे ऐसे काम किये हैं जिन को मैं आप उचित न समझता था। सिंहासन का गौरव उसके चित्त पर छा गया और उसने सच बोलना अपना धर्म समझा। वह बोल उठा, "मैं इसके योग्य नहीं हूं" उसके पीछे सिंहों ने अपने पंख फैलाये और सिंहासन को आकाश में उड़ा ले गये।

१४—इस विचित्र घटना के देखनेवालों को बड़ा अचरज हुआ पर राजा उदास हो गया। तब वही बुड्ढा सरदार जो पहिले बोला था राजा को समझाने लगा "महाराज आप उदास न हों। संसार में कोई राजा नहीं है जो उस सिंहासन पर बैठ सके। बलदिये के लड़के का अन्तःकरण शुद्ध था। इस से वह उस पर बैठ सका था। पर वह राजा कौन है कि जिसका अन्तःकरण छोटे बच्चे की भांति शुद्ध और पाप रहित हो।"

६—राजपूत।

१—नये हिन्दू समय के पीछे राजपूतों का समय आया। इस समय में राजपूत राजा लोग भारतवर्ष के हर प्रान्त में राज करते थे। हिन्दुओं के चित्त में नया हिन्दूधर्म गड़ गया था। राजपूत 'राजपुत्र' का अपभ्रंश शब्द है

जिसका अर्थ है राजाओं के बेटे। कुछ राजपूत पुराने क्षत्रिय राजाओं के वंश में हैं जो आर्य थे और कुछ उन राजाओं की संतान है जो आर्यों के पीछे हिन्दुस्थान में आये थे। इन राजाओं के साथी और परिवार हिन्दुस्थान में बस गये थे और हज़ारों बरस से रहते हैं और हिन्दूधर्म मानते हैं। पुराने क्षत्रियों की भाँति इनकी एक जाति बन गई है जो और हिन्दुओं से भिन्न है और जिसका काम राज करना और लड़ना है—व्यापार करना या हल चलाना नहीं।

२—राजपूतों के कई परिवार या उपजातियाँ बनीं। एक उपजाति के सब लोग एक दूसरे के नातेदार थे। हर उपजाति का एक शासक होता था जिसे कहीं राजा कहीं राना और कहीं राय कहते थे। अपने सरदार के लिये और अपनी उपजाति के किसी मनुष्य के लिये भी राजपूत प्राण देना अपना धर्म समझता था। पर ये उपजातियां आपस में भी लड़ा करती थीं। राजपूतों में एक बड़ा दोष यह था कि जब कभी दूसरी उपजाति या गोत्र के ऊपर बैरी चढ़ाई करता तो उस गोत्र की कभी सहायता न करते थे। यही कारण है कि जब हिन्दुस्थान के उत्तर से बैरी उतर आये तो बहुत से राजपूत राज नष्ट हो गये। कुछ नियम ऐसे थे जिन्हें तोड़ना राजपूत अधर्म मानते थे; पाहुने से अच्छा बर्ताव करना, अपनी बात पर दृढ़ रहना, बैरी को पीठ न दिखाना और अपना अपमान न सहना।

३—अपने घर में शान्त रहकर मर जाने से राजपूत को घृणा थी। उसकी यह बड़ी लालसा रहती थी कि रणभूमि में लड़ता हुआ मर जाय। हिन्दुओं के सब से पुराने धर्मशास्त्र के रचनेवाले मनु का वचन है कि राजा को लड़कर मरना चाहिये। मनुस्मृति में लिखा है कि जब राजा बुड्ढा होजाय तो उसे चाहिये कि अपना धन ब्राह्मणों में बांट दे, अपना राज अपने बेटे को दे दे और रणभूमि में लड़ता मर जाय। और जो लड़ाई का अवसर न मिले तो अन्न जल छोड़ दे और मर जाय।

४—जैसलमेर का एक रावल राजपूत था। जब वह बहुत बुड्ढा हो गया और उसने सोचा कि अब बहुत दिन नहीं जी सकते तो उसे बड़ा दुख हुआ क्योंकि उस से किसी बैरी से लड़ाई न थी। इस समय में अफ़गानी बादशाह थे और एक अफ़गान सरदार मुलतान का हाकिम था। इस से रावल कई बार लड़ चुका था। रावल ने सरदार से कहला भेजा कि "हम तुमसे एक युद्ध और चाहते हैं। तुम स्वीकार कर लो तो बड़ा उपकार हो जिसमें हम हथियार हाथ में लिये हुए मर जायं और हमको स्वर्ग मिले।" सरदार ने मान लिया और कहा कि "आओ हम तैयार हैं।" रावल ने अपने सगोतियों को बुलाया। सात सौ राजपूत जो जन्म भर लड़ाई में उसका साथ देते रहे घर से बिदा होकर उसके साथ लड़कर मरने को चल खड़े हुए।

पठान सरदार के साथ बड़े बड़े वीर थे और उनकी गिनती राजपूतों से छः गुनी थी। दो घण्टे तक लड़ाई रही और रावल और उसके सारे सगोती कट मरे। पर उन्होंने दो हज़ार पठान भी खेत में बिछा दिये।

५—राजपूत स्त्रियां भी ऐसी ही वीर, ऐसी ही सच्ची और ऐसी ही उदार होती हैं। वह भी मरने से नहीं डरतीं। यह कई बार हो चुका है कि जब राजपूत राजा का कोई नगर या गढ़ घिर गया और उसके बचने की कोई आस न रही तो मर्द तलवार लेकर बैरियों पर टूट पड़े और स्त्रियों ने आग जलाई और उसी में जलकर मर गईं। इस रीति से वह बैरी के हाथ में पड़ने से बच गईं।

६—राठौरवंश के महाराज जसवंत सिंह भी बड़े भारी राजा थे। मुग़ल सम्राट् औरंगजेब ने उनको लड़ाई में परास्त कर दिया। वह बेचारे अपने प्राण बचाने को अपनी राजधानी योधपुर को भागे। योधपुर में उनकी रानी के हुकुम से फाटक बन्दकर लिया गया। बहुतेरा कहा पर उसने फाटक न खुलवाया। उसने कहा, "मुझे विश्वास नहीं होता कि यह भगेलू मेरा पति महाराज जसवन्त सिंह है। यह कोई नीच, कोट के भीतर आना चाहता है। मेरा पति रणभूमि में पड़ा है और जो बैरी उसने मारे हैं उसकी लोथ के चारों ओर पड़े हैं। महाराज जसवन्त सिंह कभी बैरी को पीठ न दिखायेंगे।

७—इस समय में—आज से १२०० बरस पहिले से ७०० बरस पहिले तक—भारतवर्ष में राजपूतों के राज थे। पश्चिमोत्तर भारत का एक भाग जो विन्ध्याचल के उत्तर और अरवली की पहाड़ी के पूर्व और पश्चिम है अब तक राजपूताना कहलाता है। बहुत से राजपूतवंश यहाँ पहिले से रहते थे और अब तक उन्हीं के वंशज राज करते हैं।

८—नौ सौ बरस हुए राजपूतों को कुछ ऐसी सेनाओं का सामना करना पड़ा था जो उसी देश से आई थीं जहाँ से सैकड़ों बरस पहिले राजपूतों के पुरुषा आये थे। यह ठण्डा देश हिन्दुस्थान के उत्तर पश्चिम हैं और इसमें से हिन्दुस्थान में आने की राह हिमालय के दर्रों में होकर है। यह देश अब अफ़ग़ानिस्तान कहलाता है और यह लोग यहीं के रहनेवाले थे और मुसलमान थे। अब हम तुमको यह बतायेंगे कि मुसलमान कौन थे।

७—इस्लाम मज़हब के प्रचार करनेवाले अरब के पैग़म्बर महम्मद साहेब।

१—अरब के रहनेवाले पहिले मुसलमान हुए। अरब एक उजाड़ रेतीला बेपानी का देश है। अरब के रहनेवालों के परिवार जो क़ाबले कहलाते हैं, रेतीले मैदान में अपने

घोड़ों, ऊंटों और अपने गल्लों के लिये चारे की खोज में इधर उधर फिरा करते हैं। पुराने समय में इनमें बहुत सी बुरी रीतियाँ थीं। सब आपस में लड़ा करते थे और मूर्त्तियां पूजते थे।

२—तेरह सौ बरस हुए इस अरब में एक सरदार मुहम्मद साहेब रहते थे। उनको अपने देशवासियों की बुरी रीतियों को देखकर बड़ा दुःख हुआ और उन्होंने उनके सुधारने का बड़ा उद्योग किया। उन्होंने अरबवालों से यह कहा कि, "ईश्वर एक है जिसको अल्लाह कहते हैं और उसी अल्लाह ने हमको तुम्हें यह सिखाने को भेजा है कि आपस में लड़ना कटना पाप है। अरबवालों को चाहिये कि भाई भाई का सा बरताव करें।" उन्होंने यह भी कहा कि मूर्त्तिपूजा पाप है।

३—पहले तो अरबवालों ने उनका कहना न माना। और उनमें कुछ महम्मद साहेब को मार डालने पर उतारू हो गये। अन्त को सब उनकी सम्मति में आ गये और उन्हों ने अपनी मूर्त्तियां तोड़ डालीं। उनके मरने से पहिले अरब के सारे रहनेवाले उनके साथ हो गये थे। यह लोग मुसलमान कहलाये। मुसल्मान कहते हैं कि अल्लाह एक है और महम्मद उसके पैग़म्बर हैं। इनका दीन इसलाम कहलाता है।

४—इस दीनके अनुसार अरबवाले सब भाई भाई हो गये और उनकी आपस की लड़ाई बन्द हो गई। पर उन का

लड़ने का स्वभाव वैसा ही बना रहा। अब उन्हों ने सोचा कि हमारे लिये मूर्त्ति पूजना पाप है तो जो लोग मूर्त्ति पूजते हैं वह सब पापी हैं। उन्होंने बिचारा कि सबको अपनी मूर्त्तियां तोड़ डालनी चाहिये और मुसल्मान हो जाना चाहिये। ऐसा निश्चय करके उन्होंने और देशों पर चढ़ाई की और उनको परास्त कर दिया। जो लोग मुसल्मान हो गये उन को उन्हों ने छोड़ दिया और अपना भाई बना लिया। अरबवाले यह समझते थे कि दीन के लिये लड़ते लड़ते मर जाने से अल्लाह प्रसन्न होता है और उनको बिहिश्त मिलता है।

५—अरबवालों ने थोड़े ही दिनों में अरब के उत्तर के देश ले लिये। इन देशों को लूटने से उनके हाथ बहुतसा धन लगा और उनको और देश परास्त करने की लालसा बढ़ी। और वह देश पर देश जीतते गये। ईरान तुर्किस्तान और अफ़गानिस्तान उनके बस में हो गये और इन के रहनेवाले मुसल्मान बना दिये गये। यह लोग अब तक मुसल्मान हैं। यूरोप के टरकी देश में भी मुसल्मान रहते हैं।

८—तारीख़—ईसवी सन्—काल की गिनती।

१—जब कोई कहता है कि कोई बात दस बरस पहिले हुई थी तो हम समझ जाते हैं कि उस बात को हुए

आज से दस बरस बीत गये। ऐसे ही जब यह कोई कहता है कि हज़ार बरस पहिले एक लड़ाई हुई थी या कोई बड़ा राजा हुआ था तो उस से यह समझा जाता है कि उस समय से आज तक एक हज़ार बरस बीते हैं।

२—समय जानने की एक रीति और है। जब हम पुराने समय की कोई बात कहते हैं तो कोई बड़ी घटना चुन लेते हैं और कहते हैं कि यह बात इस घटना के इतने दिन आगे या पीछे हुई है। गांववाले बहुधा कहा करते हैं कि बड़े काल के दस बरस पीछे या छ बरस पहिले कोई विशेष बात हुई थी। उनके लेखे बड़ा काल ही बड़ी घटना है और इसी घटना से वह समय की गिनती करते हैं।

३—कभी कभी एक जाती के सब लोग, और कभी कभी कई जातियों के सब लोग एक बड़े राजा, बड़े धम-गुरु या पैग़म्बर के जन्म दिन से या उसके जीवन की किसी विशेष बड़ी घटना से काल की गणना करते हैं, क्योंकि उनके लेखे यही बड़ी घटना है। इस घटना को संवत या सन् कहते हैं।

४—मुसलमान लोग काल की गिनती उस दिन से कहते हैं जब उनके पैग़म्बर महम्मद साहेब अरब के मक्का नगर से मदीने को भागे थे। इसको वह हिजरत या भागना कहते हैं और इसी से उनका सन् हिजरी कहलाता है।

५—हिन्दुओं का एक राजा चन्द्रगुप्त हो गया है। इस राजा ने सब से पहिले विक्रमादित्य की पदवी धारण की थी। प्रायः सभी हिन्दू घरों में उसी के समय से काल की गिनती की जाती है।

६—ईसाई लोग काल की गिनती ईसामसीह के जन्म दिन से करते हैं। ईसा उनके धर्म के मूल अधिष्ठाता थे और उनके जन्म को ईसाई लोग संसार की बड़ी घटना मानते हैं। ईसा का जन्म ईसवी सन् कहलाता है। जो घटना ईसा के जन्म से पहिले हुई उसे ईसा से पहिले बरस लिख कर उसकी गणना करते हैं। इतिहास में लिखा है कि बुद्धदेव का जन्म ५६७ बरस ईसा से पहिले हुआ था। इसका अर्थ यह है कि बुद्धदेव ईसा से ५६७ बरस पहिले जन्मे थे।

७—कोई घटना ईसा के जन्म से पीछे हुई हो तो उसे सन्, ई०, के आगे बरसों की गिनती लिखकर उसका समय दिखाया जाता है। जब हम इतिहास में पढ़ते हैं कि पैग़म्बर महम्मद साहब मक्के से ६२२ ईसवी में भागे थे तो उससे हम यह समझते हैं कि यह घटना ईसा के जन्म से ६२२ बरस पीछे हुई है।

८—आज कल चिट्ठी या पुस्तक लिखने में बहुधा ई० सन् शब्द छोड़ दिये जाते हैं। जब हम कहते हैं कि आज कल १९१५ का साल है तो उसका अभिप्राय यह है कि ईसा के जन्म से १९१४ बरस बीत गये।

६—तारीख से किसी सन् का साल समझा जाता है। अङ्गरेज़ी किताबों में ईसवी सन् चलता है। कोई पूछे कि बुद्ध के जन्म की तारीख़ क्या है तो, इस से यह समझा जाता है कि ईसवी सन् के किस साल में बुद्धदेव का जन्म हुआ था।

१०—हर बड़ी घटना की एक तारीख़ होती है और यह सब जानते हैं कि इतिहास के ग्रन्थों में तारीखें भरी रहती हैं। इस छोटी सी किताब में बहुत कम तारीखें लिखी जायँगी पर बहुत बड़ी बड़ी घटनाओं की तारीखें लिखी ही गई हैं।

११—ईसा के पहिले किसी घटना का समय जानना हो तो आज के साल में पहले के बरस जोड़ लेना चाहिये। जैसे हम यह जाना चाहें कि बुद्ध के जन्म को आज से कितने बरस हुए तो ५६७ को १९१४ में जोड़ा, हुए २४८१। बुद्धदेव के जन्म को २४८१ बरस हुए। इसको स्मरण करने में सरलता के विचार से यों कहते हैं कि बुद्ध जी लगभग २५०० बरस पहले जन्मे थे।

१२—जो हम यह जानना चाहें कि कोई घटना जिसकी तारीख ईसवी सन् है आज से कितने बरस पहले हुई थी तो आज के सन् से उस सन् को घटा देते हैं। जैसे हम यह जानना चाहें कि हिजरत को के बरस हुए तो ६२२ जो १९१४ में से घटाया बचे १२९२ इसको सरलता के विचार से यों कहते हैं कि हिजरत को कोई १३ सौ बरस हुए।

६—ग़जनी का सुबुक्तगीन।

हरिणी और उसके छौने की कहानी।

१—अफ़गानिस्तान का सब से पुराना बादशाह जो राजपूतों से लड़ा था सुबुक्तगीन था। जवानी में वह एक छोटे जिले का सरदार था और इतना ग़रीब था कि उसके पास एक ही घोड़ा था। जिस नगर में वह रहता था उसके आस पास मैदानों में शिकार खेलता फिरता था।

२—एक दिन उसने देखा कि एक हरिणी अपने बच्चे के साथ बेखटके चर रही है। उसने घोड़े को एड़ लगाई और बच्चे को पकड़ कर उसके पांव बांध दिए और अपने आगे काठी पर रख लिया और अपने शहर की ओर चला।

३—बेचारी हरिणी उसके पीछे पीछे चली। हरिणी की आंखों से उसका दुःख प्रकट होता था। सुबुक्तग़ीन को दया आ गई। उसने घोड़ा रोक लिया और बच्चे को खोल कर छोड़ दिया।

४—हरिणी बहुत प्रसन्न हुई और अपने बच्चे के साथ वन को लौट आई। पर लौटते समय जब तक सुबुक्तग़ीन उसकी आखों की ओट न हुआ उसकी ओर नेह और कृतज्ञता की दृष्टि से ताकती रही।

५—उसी रात सुबुक्तग़ीन ने एक सपना देखा। सपने में पैगम्बर साहेब ने उनसे कहा, "अमीर सुबुक्तग़ीन, इस

दुखिया हरिणी पर तुमने जो आज दया की उससे अल्लाह तुम से बहुत प्रसन्न हुआ है और तुम्हारा नाम उसके दरबार में आज बादशाहों में लिखा गया है। तुम एक दिन

सुबुक्तगीन और हरिणी ।

बादशाह होगे। तुम जब बादशाह होना तो अपनी प्रजा के साथ ऐसा ही बरताव करना। दया न छोड़ना क्योंकि लोक पर लोक दोनों में राजा का गुण इससे बढ़ कर दूसरा नहीं है।"

९—सुबुक्तग़ीन पीछे बड़ा प्रतापी बादशाह हुआ। उसका बिवाह अफ़गानिस्तान के बादशाह की बेटी के साथ हुआ था और जब बादशाह मरा तो सुबुक्तग़ीन उसके तख़्त पर बैठा और उसका सपना सच्चा हो गया। उसने पञ्जाब के राजपूत राजाओं के साथ कई लड़ाईयाँ लड़ीं। उससे भी बढ़कर उसका बेटा महमूद प्रसिद्ध हुआ है।

१०—ग़ज़नी का महमूद।

हिन्दुस्थान की लूट मार।

१—महमूद ग़ज़नवी के समय में जिसको आज से नौ सौ बरस हुए भरतखण्ड संसार के बड़े धनी देशों में गिना जाता था। हिन्दुओं ने बड़े बड़े नगर बसाये थे और बड़े बड़े मन्दिर बनवाये थे जिसमें सोना चांदी भरा पड़ा था। इनमें बनारस जिसको काशी भी कहते हैं सब से पुराना और सब से पवित्र तीर्थ माना जाता था। भारतखण्ड का व्यापार अपने पड़ोस के देशों से यूरोप तक फैला था। बड़ा बड़ा महंगा सामान वहाँ से ऊंटों पर लदकर अफ़गानिस्तान के दर्रों की राह दूर दूर देशों में जाता था।

२—महमूद ने अपने लड़कपन ही से ऐसे व्यापारी अपने बाप के राज्य से होकर जाते देखे थे। वह व्यापारियों से बातें किया करता था, और वह उस से कहा करते थे कि हिन्दुस्थान में बड़े बड़े शहर हैं, और बड़े बड़े मन्दिर हैं

जिनकी धन-सम्पत्ति का पारापार नहीं। महमूद यह कहता था कि जब मैं बड़ा होकर बादशाह हो जाऊंगा तो हिन्दू राजाओं से लड़ूँगा, उनका सोना चाँदी उनसे छीन लूँगा और ग़ज़नी लाऊंगा।

काशी।

२—तीस बरस की उम्र में महमूद सिंहासन पर बैठा और जो कुछ वह पहिले कहा करता था वह सब उसने करके दिखा दिया। जब तक बरसात रही और दर्रे बरफ़ से भरे ढके थे वह चुप चाप बैठा रहा। इसके पीछे वह दल बादल से भारत पर चढ़ जाया और लूट का माल लाद

कर ले जाने को बहुत से ऊँट और घोड़े अपने साथ लाया। राजपूत बड़ी वीरता से लड़े पर अफ़गान उनसे डीलडौल में बड़े और बली थे और अच्छे घोड़ों पर सवार थे। हिन्दू हार गये, कितने मारे गये और कितने भाग गये।

४—गङ्गा और यमुना के तीर पर बड़े बड़े नगरों में ऐसे मन्दिर थे जिनकी सोने की छतें थीं, सोने के खम्भे थे, गच तक में सोना जड़ा था, मूर्त्तियाँ सोने की ढली थीं और उनकी आँख माणिक की थीं। हीरा मोती और पन्नों के हार मूर्त्तियाँ पहिने हुई थीं।

५—महमूद और उसके क्रूर अफ़गानी ऐसी लूट की सामग्री देखकर फूल गये। महमूद मन्दिरों में घुस गया अपने हाथ से मूर्त्तियाँ तोड़ डाली और सोना चांदी मोती माणिक सब उठा ले गया। उसके सिपाही नगर में घर घर घुसते फिरे, जो चाहा सो ले लिया और जिसने उन्हें रोका उसे मार डाला। कहते हैं कि एक ही शहर से वह तीन सौ पचास हाथी और हजारों ऊँटों पर लूट का माल लाद कर ले गया था। इसी एक शहर से पचास हजार हिन्दू पकड़ कर गज़नी पहुँचाये गये और वहाँ की गलियों में दो दो रुपये को बेंचे गये; बहुत से हिन्दू बरजोरी से मुसलमान बना डाले गये।

६—गज़नी पहुँच कर महमूद ने बड़ा भारी भोज का सामान किया। सारे अफ़गानों को बुलाया तीन दिन

तक सब की दावत की और हिन्दुस्तान से जो हीरा मोती रेशम कमख़ाब सोना चाँदी लूट कर ले गया था चौकियों पर सजा कर सब को दिखाया। सरदारों और अमीरों का तो कहना ही क्या है उनको बड़े दाम की चीज़ें भेंट दी गईं, पर ग़रीब अफ़गान भी कोई ऐसा न था जो उस दावत से खाली हाथ गया हो और जिसने अच्छी भेंट न पाई हो।

७—इस रीति से महमूद भारत में सत्रह बार अपने पठानों को लाया। हर चढ़ाई में उसका उत्साह बढ़ता जाता था और वह दूर दूर का धावा मारता था। सब से पिछली बार यह दक्षिण में गुजरात देश को चला गया। यहाँ एक बहुत पुराना मन्दिर था जो अपने असंख्य धन के लिये हिन्दुस्तान में प्रसिद्ध था। इस में १० हाथ ऊँची सोमनाथ की मूर्त्ति थी। पुजारी समझते थे कि इस दूर देश में हम को कौन छेड़ सकता है। रेतीले देश में साढ़े तीन सौ मील की यात्रा करके महमूद इस मन्दिर पर चढ़ दौड़ा और हिन्दुओं की एक बड़ी सेना को जो इस मन्दिर के बचाने के लिये आई थी मार कर भगा दिया।

८—इसके पीछे महमूद मन्दिर में घुसा तो पूजारियों ने डरते काँपते यह बिनती की कि आप हमारे देवता की मूर्त्ति को छोड़ दें तो हम आप को बहुतसा धन दें। महमूद ने न माना और बोला, "मैं मूर्त्ति तोड़ने आया हू मूर्त्ति

बचाने नहीं" और इतना कह कर उसने अपनी लोहे की गदा इतने ज़ोर से मारी कि मूर्त्ति के टुकड़े टुकड़े हो गये।

६—महमूद सोमनाथ से बहुत सा लूट का माल और कई अच्छे कारगीर अफ़ग़ानिस्तान को ले गया। वहाँ उसने ग़ज़नी नगर में बड़े बड़े मकान और महल बनवाये और उसको सुन्दर नगर बना दिया। एक मसजिद ऐसी सुन्दर बनी जिसको देख कर सब लोग अचरज करते थे। उसका नाम स्वर्ग की दुलहिन है। बहुत से कवि और गुणी लोग ग़ज़नी में आये और सुलतान ने सब का आदर किया और सब को बहुत सा धन दिया।

११—सुलतान महमूद—कवि का सत्कार।

१—महमूद को अपनी कीर्त्ति का ऐसा घमण्ड था कि उसने उस समय के महाकवि फ़िरदौसी से कहा कि एक बड़ा काव्य रचो और यह प्रतिज्ञा की, एक शेर के लिये एक दिरहम दूंगा। उस समय में दिरहम सिक्का सोना और चाँदी दोनों का होता था; पर फ़िरदौसी यह समझा और सब लोग यही समझे थे कि महमूद बड़ा भारी बादशाह है सोने ही के दिरहम देगा।

२—फ़िरदौसी ने काम में लग्गा लगा दिया और ३० बरस में यह ग्रन्थ समाप्त किया। इसका नाम शाहनामा है और यह

फ़ारसी भाषा का सब से प्रसिद्ध काव्य है और इसकी गिनती संसार के महाकाव्यों में होती है। इसमें ६०,००० शेर हैं।

३—यह ग्रन्थ सुलतान को दिखाया गया तो वह बहुत प्रसन्न हुआ पर उसने कवि को ६०,००० चाँदी के दिरहम दिए। फ़िरदौसी समझा था कि सोने के दिरहम मिलेंगे पर सुलतान के डर के मारे वह कुछ न बोला और अपने शहर को भाग गया। जब वह अपने घर पहुँचा तो उसने एक कविता लिखी जिसमें सुलतान की निन्दा थी। सुलतान बड़ा बादशाह था पर वह बड़ा कुरूप भी था, उसके चेहरे पर शीतला के दाग थे और उसकी माँ लौंडी थी।

४—महमूद बहुत लज़्ज़ित हुआ और उसने ६०,००० सोने के दिरहम ऊँटों पर लाद कर कवि के घर भेज दिये पर जब यह ऊँट फ़िरदौसी के नगर में पहुँचे तो उसकी लोथ निकल रही थी। उसकी लड़की ने दिरहम ले लिये और उसने उनसे नगर में मीठे पानी के एक नहर निकलवाई।

५—जब महमूद मरने लगा तो उसने सोना और हीरा मोती जो उसके खज़ाने में रखा था सब मंगवाया और बोला "हमारे सामने इनका ढेर लगा दो कि हम अन्तिम बार इनको अपनी आँखों से देख लें।" उस ढेर को देख कर वह रोने लगा और बोला कि "हाय! अब यह धन औरों का हो जायगा।"

६—फ़ारसी के प्रसिद्ध कवि शेख सादी ने अपनी गुलिस्तां में लिखा है कि खुरासान के एक बादशाह ने सुलतान महमूद को

सपने में देखा कि उसकी सारी देह सड़ गल कर मिट्टी में मिल गई है पर आँखें वैसेही कोयों में फिर रही हैं ।

७—कोई बुद्धिमान् इसका अर्थ न कह सका पर एक फ़कीर ने समझ कर कहा कि अभी उसकी आँखें यह देखती हैं कि उसका राज्य औरों के हाथ में है ।

१२ सुल्तान महमूद ।

व्यापारी की माँ का उलहना ।

१—एशिया के बहुतेरे देशों में एक जगह से दूसरी जगह माल ऊँटों पर लेजाते हैं। सौदागर लोग अपने ऊँटों की पीठ पर माल लादे हुए एक साथ चलते हैं और ऊँटों की लम्बी पांत को कारवान कहते हैं। महमूद ने इतने देश जीत लिये थे कि उनका प्रबन्ध करना कठिन हो गया था। एक देश में डाकू एक कारवान पर टूट पड़े ; व्यापारियों का माल छीन लिया और बहुतेरों को मार डाला। एक व्यापारी की माँ चलते चलते ग़ज़नी पहुँची और सुल्तान के आगे अपना दुख रोई ।

२—महमूद बोला, "बुढ़िया हम इतने दूर देश का प्रबंध कैसे कर सकते हैं। वह देश ग़ज़नी से सैकड़ों कोस दूर है। इतनी दूर डाकुओं का दमन या सड़कों पर यात्रियों की रक्षा हम से नहीं हो सकती।"

३—बुढ़िया ने कहा, "तो तुम ऐसे देश क्यों लेते हो जिसमें तुम शासन नहीं कर सकते। तुम जिन जिन देशों के बादशाह हो उनके शासन के लिये मरने पर तुम्हें ईश्वर को जवाब देना पड़ेगा।

कारवान।

४—कहते हैं कि महमूद को बुढ़िया की बात लग गई। उसने जाना कि बुढ़िया सच कहती है। उसकी शक्ति न थी कि बुढ़िया के बेटे को जिला देता पर उसने उसके माल का दाम दे दिया और उस देश की रक्षा के लिये राजपुरुष भेज दिये।

१३—सुल्तान महमूद और उसके उल्लू गुरु ।

१—एक बार महमूद ग़ज़नवी पश्चिम का देश उजाड़ कर रहा था। उसकी सेना खड़ी फ़सल काटती, गांवों में आग लगाती और ढोर हाँक ले जाती थी। ऐसा जान पड़ता था कि कुछ न बचेगा और सारा देश उजाड़ हो जायेगा। उसका एक मन्त्री धार्मिक और बुद्धिमान् था। वह सोचने लगा कि कौन सा ऐसा उपाय करूँ कि सुल्तान को दया लगे।

२—एक दिन मन्त्री ने सुल्तान से कहा, "मैंने लड़कपन में एक पीर की सेवा की थी। पीर ने प्रसन्न होकर मुझे चिड़ियों की बोली सिखा दी है।"

३—दूसरे दिन सुल्तान और मन्त्री दोनों साथ साथ शिकार को गये। साँझ को घर लौटे आते थे कि राह में एक पेड़ की डली पर दो उल्लू आपस में बातें करते हुए देख पड़े।

४—सुल्तान ने मन्त्री से कहा, "कल तुम ने कहा था कि हम चिड़ियों की बोली जानते हैं, बताओ, तो यह उल्लू क्या बात कर रहे हैं।"

५—मन्त्री ने थोड़ी देर तक कान लगा कर उल्लुओं की बात सुनीं, फिर बोला, "बादशाह सलामत इन की बातें आपके सुनने के योग्य नहीं हैं। मेरा अपराध क्षमा कीजिये मैं आप से कुछ कह नहीं सकता।"

महमूद और उल्लू ।

६—महमूद ने कहा "नहीं हमें बता दो, हम सुनना चाहते हैं। डरो न तुम्हारा कुछ न बिगड़ेगा।"

७—मन्त्री बोला, "हजूर, इन उल्लुओं में एक को एक लड़की है और दूसरे को एक लड़का है। दोनों उनके व्याह की बातें कर रहे हैं। लड़के का बाप लड़कीवाले से कहता है, "तुम अपनी बेटी मेरे बेटे के साथ व्याहना चाहते हो तो दहेज में पचास उजाड़ गाँव दो।" इसपर लड़की का बाप कहता है, "अजी उजड़े गाँवों की क्या कमी; जब तक ईश्वर की दया से सुल्तान महमूद सलामत हैं। तुम पचास गाँव मांगते हो मैं पांच सौ देता हूं।

८—सुल्तान इसको सुनकर बहुत लजाया और उजाड़ने का काम बन्द कर दिया। लोग अपने अपने गाँव लौट आये। चतुर मन्त्री को यह जान कर बड़ा सुख हुआ कि उसकी चालसे राजा और प्रजा दोनों का कल्याण हो गया।

१४—महम्मद ग़ोरी और पृथ्वीराज।
(पिरथीराय)

१—जिस वंश के बादशाह सुबुक्तगीन और महमूद ग़ज़नी में राज करते थे उसके थोड़े ही दिनों में अन्त हो गया और एक दूसरे वंश के बादशाह जो ग़ोर देश के रहनेवाले थे

ग़ोरी सुल्तान के नाम से अफ़ग़ानिस्तान के बादशाह हुए। इन में महम्मद ग़ोरी सब से प्रसिद्ध था। वह महमूद ग़ज़नवी से लग भग दो सौ बरस पीछे बादशाह हुआ और वह महमूद की भाँति हिन्दुस्थान पर पठानों की सेना लेकर कई बार चढ़ आया।

महम्मद ग़ोरी।

२—उसके समय में उत्तर-भारत में मुख्य राजपूत राज्य तीन थे, दिल्ली, अजमेर और कन्नौज। इनमें तीन कुल के राजपूत राज करते थे, तोमर, चौहान और राठौर। अनङ्गपाल तोमर, दिल्ली का राजा था। पृथ्वीराज चौहान जिसको कवि लोग पिरथीराय कहते हैं अजमेर का और जयचन्द राठौर कनौज का शासन करता था।

३—यह तीनों राजा आपस में नातेदार थे। अनङ्गपाल सब में बड़ा था। उसकी एक बेटी जयचन्द के बाप को और दूसरी पृथ्वीराज के बाप को ब्याही थी। दोनों राजा अनङ्गपाल के नाती थे और आपस में भाई थे।

४—अनङ्गपाल के कोई बेटा न था जो उसके पीछे दिल्ली के सिंहासन पर बैठता। इस लिये उसने मरने से पहिले अपने नाती पृथ्वीराज को गोद ले लिया और पृथ्वीराज

दिल्ली और अजमेर दोनों का स्वामी हो गया। वह बड़ा वीर और सुन्दर था और तोमर और चौहान दोनों कुल के राजपूत उस को बहुत मानते थे।

५—कन्नौज का राजा जयचन्द उस से बहुत बड़ा था। जब उसके नाना ने उसे अपनी गद्दी न दी तो उसने बहुत बुरा माना। वह समझता था कि राज मुझी को मिलना चाहिये। इस पर राठौरों और चौहानों में बड़ी अनबन हो गई, जिस का परिणाम यह हुआ कि दोनों कुल नष्ट हो गये।

६—दिल्ली के सिंहासन पर पृथ्वीराज को बैठे बहुत दिन न हुए थे कि महम्मद ग़ोरी ने एक बड़ी सेना लेकर हिन्दुस्थान पर चढ़ाई कर दी। पृथ्वीराज ने और उसकी राजपूत सेना ने दिल्ली के उत्तर थानेश्वर के मैदान में जहाँ बड़ी बड़ी लड़ाइयाँ हो चुकी थीं तराउड़ी के पास उसको परास्त कर दिया। यह बड़ी लड़ाई आज से ७०० बरस हुए ११६१ ई० में हुई थी। इस में बहुत से अफ़ग़ान मारे गये। महम्मद गोरी भी घायल हो गया और वह और उसके साथी जो बचे थे सिन्धु पार अपने देश को भाग गये।

७—इसके पीछे राजा जयचन्द ने दूर दूर यह घोषणा कर दी कि मैं भारत के राजपूत राजाओं का राजाधिराज हूँ। उसने आर्यों के समय के क्षत्रिओं की रीति से अश्वमेध यज्ञ ठाना और सारे राजपूत राजाओं को अपने

अधीन मान कर सब के नाम न्योता भेजा कि सब लोग आकर मेरे घर की टहल करें। पृथ्वीराज को द्वारपाल बनने की आज्ञा दी गई।

८—इसी अवसर पर जयचन्द ने अपनी बेटी संयुक्ता का स्वयंवर भी ठान लिया। यह क्षत्रियों की पुरानी रीति थी जिस में सब राजा लोग बुलाए जाते थे और उनमें से राजकुमारी अपना वर आप चुन लेती थी जैसे सीता ने राम को वरा था। संयुक्ता परम सुन्दरी राजकुमारी थी और उस समय के भाट और कवि लोग उसकी सुन्दरता बखानते फिरते थे। पृथ्वीराज की सभा में चन्द कवि रहता था उसने उस से संयुक्ता का वर्णन इस रीति से किया है, "वह लम्बी और परम सुन्दरी है। उसके रूप में मोहनी भरी है उसके केश काले नीले हैं और उसकी आँखें उजले कमल पर भौंरों की भाँति मंडराती है।"

९—पृथ्वीराज संयुक्ता को चाहता था और वह भी उस पर आसक्त थी। दोनों एक दूसरे के नातेदार थे पर दोनों ने कभी एक दूसरे को न देखा था। पृथ्वीराज की एक पुरानी दाई थी, जिसने उसे बचपन में खेलाया था। उससे उसने अपना मन का भाव कह दिया। राजकुमारी का बाप उसका कट्टर बैरी था, ऐसे अवसर पर उसे कोई चाल न सूझती थी। बुढ़िया ने उसको चाल सुझा दी। यह बुढ़िया अपने लड़कपन में कन्नौज की रानी की लौंडी थी।

पृथ्वीराज ने उसको हाथी दाँत पर बना हुआ अपना चित्र दिया। बुढ़िया उसे लेकर कन्नौज पहुंची और वहाँ फिर नौकर हो गई। वह संयुक्ता के पास रहती और उसकी टहल किया करती थी। यहाँ उसने संयुक्ता को पृथ्वीराज का चित्र दिया और उसके प्रेम का सन्देशा सुनाया। संयुक्ता ने पृथ्वीराज की वीरता का बखान सुना ही था। पठानों पर विजय पाने का हाल सुन कर उसने पृथ्वीराज के साथ व्याह करना निश्चय कर लिया। बुढ़िया दाई फिर दिल्ली लौट गई और वहाँ पृथ्वीराज से सारा ब्यौरा कह दिया। पृथ्वीराज ने प्रतिज्ञा की कि मैं संयुक्ता को अपने घर लाऊंगा चाहे इस यत्न में मेरे प्राण भले ही चले जायँ।

१०—इसी अवसर पर पृथ्वीराज के पास जयचन्द के दूत आ गये और उससे बोले कि तुमको यज्ञ में द्वारपाल का काम करने के लिये बुलाया है। पृथ्वीराज को बड़ा क्रोध आया। वह जयचन्द को राजाधिराज कैसे मान सकता था और द्वारपाल का काम करना उसके लिये बड़ी गाली थी क्योंकि द्वारपाल सदा नीच जाति के लोग हुआ करते थे।

११—स्वयंवर में बहुत से राजपूत राजा और राजकुमार दूर दूर से आये। सब को यह आस थी कि राजकुमारी हम ही को वरेंगी। सभामण्डप में सब को उचित स्थान दिये गये और वह दर्शकों से भर गया। पृथ्वीराज न आया तो जयचन्द ने उसकी सोने की मूर्त्ति बनाई और द्वारपाल की

जगह मूर्त्ति खड़ी कर दी। कुछ राजा और राज-कुमार हँसे पर सब समझते थे कि ऐसा अपमान पृथ्वीराज सह न सकेगा और रक्त की धारा बहेगी।

१२—जयचन्द तो न जानता था पर पृथ्वीराज सभामण्डप के बाहर खड़ा था। उसके साथ कविचन्द जो बड़ा वीर योद्धा भी था और एक सौ चुने हुए चौहान वीर थे। वह सब भिखमंगों के रूप में थे जिसमें उन्हें कोई पहिचान न सके और फाटक के बाहर भीड़ में मिले जुले खड़े थे। पर इन सब के कपड़ों के नीचे तलवारें छिपी थीं और सब के घोड़े थोड़ी दूर वन में खड़े थे।

१३—इसके पीछे संयुक्ता स्वयंवर करने चली। उसके हाथ में एक माला थी। यह माला वह उस राज-कुमार के गले में डालने के लिये थी जिसे वह अपना वर चुनती। वह राजाओं और राज-कुमारों की पाँति में होती हुई सीधी फाटक पर चली गयी और माला उस मूर्त्ति के गले में डाल दी जो पृथ्वीराज के नाम से द्वारपाल बनाकर यहाँ खड़ी थी।

१४—संयुक्ता ने मूर्त्ति के गले में ज्योंही माला डाली, पृथ्वीराज जो थोड़ी दूर पर खड़ा था फाटक पर झपटा और उसने राज-कुमारी को अपनी बड़ी भुजाओं से उठा लिया और अपने घोड़े पर बैठाकर दिल्ली की ओर भागा। उसके साथी वीर भी झटपट अपने अपने घोड़ों पर सवार हुए और उसके साथ चल खड़े हुए।

पृथ्वीराज और संयुक्ता ।

१५—सभामण्डप मे बड़ी गड़बड़ मच गई। जयचन्द और राठौर वीरों ने अपने घोड़े मंगवाये और उनके पीछे दौड़े। पर चौहान बड़ी दूर निकल गये थे। चन्द कवि लिखते हैं कि पांच दिन तक राह में लड़ाई होती रही और दोनों ओर के कई सामन्त मारे गये। पृथ्वीराज अपनी दुलहिन के साथ दिल्ली पहुँच गया और वहाँ दोनों का बड़ी धूम से विवाह हुआ।

१५—राजपूतों की हार।

१—कन्नौज के राजा जयचन्द ने जब यह जाना कि पृथ्वीराज को बल से हरा नहीं सकते तो वह क्रोध से जल मरा और उसने ऐसा नीच काम किया जो राजपूत वीर के लिये महा अयोग्य था। उसने महम्मद ग़ोरी से कहला भेजा कि आप एक बार दिल्ली पर फिर चढ़ाई करे और मैं आप की मदद करूंगा। शहाबुद्दीन अपनी हार के पीछे चुप चाप न बैठा था। उसने अपने सरदारों और सेनापतियों को बहुत ही झिड़का था जो तराउड़ी के मैदान से भाग

पृथ्वीराज।

निकले थे; तोबड़ों में जौ का दाना भरवा कर उनके मुंह से बंधवाया मानो वह गदहे और खच्चर थे और मर्द कहलाने के योग्य न थे। इन सरदारों को बड़ी ग्लानि हुई और वह एक बार फिर लड़ने और अपने को मर्द सिद्ध करने को तैयार हो गये।

२—जब सब ठीक हो गया तो महम्मद ग़ोरी अफ़ग़ानिस्तान से १२०००० अफ़ग़ानों और तुरकों की सेना साथ लिये हुए एक बार फिर हिन्दुस्थान के मैदानों में उतरा। पृथ्वीराज फिर अपने चौहानों को लेकर उनका सामना करने को आगे बढ़ा। कई राजपूत राजा अपने सगोतियों के साथ उसकी सहायता को आये पर जयचन्द और राठौर और जो राजपूत उनके पक्ष के थे अलग रहे। बड़ी भारी लड़ाई हुई। महम्मद ग़ोरी ने एक चाल चली। लड़ाई होते होते उसने ऐसा दिखलाया मानो खेत छोड़ कर भागा जा रहा है। राजपूत अपनी पाँति तोड़ कर उसके पीछे दौड़े जब महम्मद ग़ोरी ने जाना कि राजपूत छिटक गये तो वह लौट पड़ा और घमासान लड़ाई होने लगी। पृथ्वीराज मारा गया। राजपूत हार गये और उनके बड़े बड़े वीर कट मरे।

३—यह समाचार दिल्ली पहुँचा तो संयुक्ता और राजपूत स्त्रियों के साथ आग में जल कर मर गई। अफ़ग़ानियों ने दिल्ली और अजमेर पर अपना अधिकार जमा लिया और बहुतसा लूट का माल लेकर अपने देश को लौट गये।

जयचन्द् यह समाचार पाकर बहुत प्रसन्न हुआ पर उसका सुख थोड़े ही दिनों तक था। दूसरे साल महम्मद ग़ोरी फिर भारत में आया और अब की बार कन्नौज पर चढ़ दौड़ा। जयचन्द् उसका सामना करने को चला पर उसके दिल्ली और अजमेर के राजपूत न थे जो उसकी सहायता करते। अकेले पठानों से लड़ने की शक्ति न थी।

४—जयचन्द् भी हार गया और मारा गया। मुसलमानों ने कन्नौज और बनारस दोनों को लूटा और एक हज़ार मन्दिर गिरा दिये। लूट का सोना और चाँदी ४००० ऊँटों पर लाद कर अफ़ग़ानिस्तान पहुंचाया गया।

५—इसी रीति से राजपूत राज्यों का नाश हुआ और १२०० ई० से अफ़ग़ान बादशाहों ने हिन्दुस्तान का एक एक राज अपने अधीन कर लिया। राजपूत राजा लोग मिले रहते और एक दूसरे की सहायता करते तो आप भी बने रहते और उनका राज्य भी बना रहता।

१६—तुर्की और पठान बादशाह।

१—महम्मद ग़ोरी ने दिल्ली के चौहान राजा पृथ्वीराज, कन्नौज के राठौर राजा जयचन्द् और हिन्दुस्थान के कई राजपूत राजाओं को परास्त किया और उनके नगर छीन लिये पर वह देश में न ठहरा। उसने पंजाब में अपने

सेनापति कुतुबुद्दीन को छोड़ दिया और इसने कई बरस तक इस देश का शासन किया।

२—महम्मद ग़ोरी के मरने के पीछे कुतुबुद्दीन बादशाह हुआ। उसने और उसके पठान सिपाहियों ने देखा कि हिन्दुस्तान एक अच्छा देश है यहाँ रहना सहना बड़े सुख से हो सकता है; अपने ठण्डे पहाड़ों में यह आनन्द कहाँ है। इससे वह सब इन्हीं हरे भरे मैदानों में ठहर गये और अपना घर बना लिया। उन्हों ने अपने कुल के लोगों और मित्रों को भी बुलाया और थोड़े ही दिनों में बहुत से तुर्क अफ़ग़ान और अरब हिन्दुस्तान में आ गये इन जातियों के बादशाह दिल्ली के सिंहासन पर बैठे और किसी किसी ने उसके आस पास देशों में आपना राज्य स्थापन कर लिया। बहुतेरे सरदार अपने बड़े के साथ आये और जहाँ उनको जगह मिली वहीं बस गये। हर एक सरदार जहाँ बसा, उसके आस पास के गाँवों का राजा बन गया और हिन्दू प्रजा से पोत और बटाई लेने लगा।

कुतुबुद्दीन।

३—अफ़गानी लोग पठान भी कहलाते थे क्योंकि उनका एक फिरका अफ़गानिस्तान के पठान प्रान्त से आया था और वह लोग पखतो या पश्तो भाषा बोलते थे। यह सब मुसलमान थे, क्रूर और लड़ाके, हिन्दूओं से डील डौल में बड़े और बलवान थे और हिन्दुओं पर बड़ी कड़ाई के साथ शासन करते थे।

४—१२०६ ई० से १५२६ ई० तक २६ बादशाह हुए जिनमें कुतुबुद्दीन सब से पहिला था। यह बादशाह पांच भिन्न भिन्न जाति के थे। पांचों अरब तुर्क और पठान थे। इनको कभी कभी लोग अफ़गानी कहते हैं क्योंकि यह लोग या तो अफ़गानिस्तान से आये थे या अफ़गानिस्तान हो कर मध्य एशिया से। कुतुब भी लड़कपन में एक दास था। इस कारण उसके वंश के लोग जो पीछे बादशाह हुए दासवंशी कहलाते हैं। कुतुब ने दिल्ली के पास २५० फुट ऊँचा एक मीनार बनवाया जिसका नाम कुतुब-मीनार है। यह संसार के सब से ऊंचे मीनारों में गिना जाता है। इसको बने ७००० बरस हुए पर यह अब भी वैसा ही खड़ा है।

५—उत्तर-भारत के राजपूत बिना लड़े मुसलमानों के अधीन न हुए। कई बार घोर युद्ध हुआ और हज़ारों आदमी मारे गये और बहुत सा देश उजाड़ हो गया। जिसके पास रुपया पैसा गहना होता था वह उसे गड़हा खोद कर गाड़ देता था कि कहीं अफ़गान उससे छीन न लें। राठौर

और बहुत से और राजपूत वंश कन्नौज और गङ्गा यमुना के बीच की उपजाऊ भूमि छोड़ कर अपनी स्त्री बच्चे ढोर माल

कुतुब मीनार।

असबाब लेकर सैकड़ों मील दक्षिण और पश्चिम चले गये और विन्ध्याचल के पहाड़ या अरवली पहाड़ी के पूर्व और

पश्चिम जाकर बस गये। यहाँ इन लोगों ने बहुत से गढ़ बनवाये। यह देश तब से राजपूताना कहलाता है। हम आगे पढ़ेंगे कि इनमें बहुत से राजपूत गोत्रों को मोगल बादशाह भी परास्त न कर सके; उनके आधीन रह कर राजपूत राजा लोग अपने राज शासन करते रहे जैसा कि वह श्रीमान राजराजेश्वर जार्ज पञ्चम को अपना सम्राट् मान कर आज भी कर रहे हैं।

१७—सुल्तान रज़िया की कहानी।

१—सुल्तान मुसलमान बादशाह को कहते हैं। पर यह प्रसिद्ध बीबी भी सुल्तान कहलाती थी। यही एक स्त्री दिल्ली के सिंहासन पर बैठी थी, दूसरी स्त्री को यह सौभाग्य प्राप्त न हुआ। उसके सिक्कों पर उसका पूरा नाम यों लिखा है "मुलतान आज़म् संसार और दीन की शोभा"।

२—रज़िया दिल्ली के गुलाम बादशाह अलतमश की बेटी थी। अलतमश एक बड़े तुर्की सरदार का लड़का था। जब वह बहुत छोटा था तो उसके भाइयों ने जो उस से बैर रखते थे एक दिन शिकार खेलते उसको पकड़ लिया और दास के व्यापारियों के हाथ उसको बेंच दिया। अलतमश बढ़ते बढ़ते ऐसा वीर और ऐसा चतुर हो गया कि कुतुबुद्दीन ने उसे पचास हज़ार रुपये में मोल ले लिया। कुतुबुद्दीन अपना बेटा करके पाला। दिन दिन उसका आदर मान

बढ़ता गया और कुतुब ने उसे अपनी बेटी व्याह दी। कुतुब के मरने पर यही अलतमश दिल्ली का बादशाह हुआ।

३—अलतमश के कई बेटे बेटियां थीं पर वह रज़िया को सब से बढ़ कर जानता था। उसने उसे स्त्रियों के गुण सिखाये ही थे, पुरुषों के गुण भी सिखा दिये; वह शाहज़ादे की भाँति सिखाई पढ़ाई गई; राज काज समझती थी और पढ़ना लिखना जानती थी। वह घोड़े पर चढ़ सकती थी और तीर तलवार का काम जैसा उसके भाई जानते थे वैसाही वह भी जानती थी।

रज़िया।

४—रज़िया बड़ी सुन्दरी थी। उस समय के एक पुराने लेखक ने लिखा है कि उसकी सुन्दरता देख कर बालियों का अनाज पक जाता था। वह हर बात को बहुत सोचती थी; किताबें पढ़ा करती थी, सब पर दया करती थी और उसका बाप और सारे दरबारी लोग उसको प्यार करते थे।

५—रज़िया छोटी ही थी तब अलतमश को एक बड़ी सेना लेकर दक्षिण में राजपूतों से लड़ने के लिये दिल्ली छोड़ कर जाना पड़ा। अलतमश जानता था कि मुझे बहुत

दिनों तक बाहर रहना पड़ेगा इस लिये दिल्ली में शासन के लिये किसी को सिंहासन पर बैठा देना चाहिये। रज़िया से बढ़ कर उसे कोई योग्य न जंचा और उसी को सिंहासन पर बठाना अलतमश ने निश्चय किया। पर उसके सरदार न चाहते थे कि स्त्री कैसी ही योग्य क्यों न हो उसके शासन में रहें। उन्हों ने कहा, "आप अपने किसी बेटे को सिंहासन पर बैठा दीजिये।" पर उसने सब को बुलाया और कहा कि "हमारे मित्रो, राज का भार हमारे लड़कों से न उठेगा यह सब विषय भोग के चाहनेवाले हैं। इनमें सन्देश नहीं कि हमारी बेटी रज़िया स्त्री है पर उसमें पुरुषों के गुण हैं और वह बीस लड़कों से अच्छा है।"

६—अलतमश छः बरस बाहर रहा और इस समय में रज़िया ने बड़ी चतुराई और सावधानी से राजकाज किया। वह नित्य ईश्वर से यह मांगा करती थी कि, "मुझे बुद्धि और बल दे और मुझे अच्छा काम करने में प्रवृत्त कर।" उसने देश का शासन ऐसा अच्छा किया और वह ऐसी योग्य और धार्मिक थी कि उसके भाई शाहजादे भी यह कहते थे कि हमारे पिता ने बहुत अच्छा किया जो हमारी बहिन को बादशाह बनाया। जब उसका बाप लौटा तो उसने राज उसे सौंप दिया और फिर घर में प्यारी और आज्ञाकारिणी बेटी बनकर रहने लगी।

७—चार बरस पीछे अलतमश मुलतान को जा रहा था

कि उसे मौत ने आ घेरा। उसकी प्यारी बेटी ने बड़ा शोक किया। अलतमश की इच्छा थी कि रज़िया सिंहासन पर बैठे पर उसके मरने पर उसका एक लड़का फ़ीरोज़ सिंहासन पर बैठ गया। उसका शासन ऐसा बुरा था कि छः ही महीने में सरदारों ने उसे तख़्त से उतार दिया और रज़िया से कहा कि आप तख़्त पर बैठें। सरदार जानते ही थे कि जब अलतमश बाहर रहा था तो रज़िया ने कैसा अच्छा शासन किया था।

८—रज़िया ने दो बरस तक निर्विघ्न राज किया। वह बादशाही कपड़े पहनती और नित्य सिंहासन पर बैठती थी। वह मरदाने कपड़े पहनती सिर पर मुकुट रखती मुँह खोले रहती और सब सरदारों के आगे हाथी पर सवार चलती थी। यह सारी नालिश फरियाद आप सुनती और न्याय करती थी। वह सारा राजकाज आप देखती थी सब को अपने कानून के अनुसार चलाती और एक उदार रानी की भाँति शासन करती थी।

६—कुछ दिन पीछे उसने अपने व्याह का अवसर जाना और एक वीर और सुन्दर सरदार जो उसके रिसाले का सेनापति था और जिसका नाम याकूत था उसके प्रेम का अधिकारी बन गया वह उसके योग्य था पर उसमें दोष यह था कि वह हबशी था और किसी समय में दास रह चुका था। अभिमानी तुर्की सरदार यह चाहते थे कि मलका

उन लोगों में से किसी को चुने और उससे बिगड़ खड़े हुए। इन सरदारों में मुख्य अलतूनियां था। रज़िया ने याकूत के साथ उस पर चढ़ाई कर दी पर उसकी सेना हार कर भाग गई। याकूत मारा गया और रज़िया पकड़ ली गई। यह वीर सरदार अपने मलका का दुख देख कर बहुत दुखी हुआ और उसे छोड़ दिया। अलतूनियां ने उससे यह भी कहा कि जो तुम मेरे साथ विवाह कर लो तो मैं तुम्हारी ओर से और सरदारों से लड़ूं। अलतूनियां बड़े ऊंचे कुल का और सब तरह उसके योग्य था इससे रज़िया ने बड़ा उपकार माना और उसकी बात मान ली और दोनों का विवाह हो गया।

१०—इस बीच में और सरदारों ने उसके एक निकम्मे भाई को सिंहासन पर बैठा दिया था। रज़िया और उसके पति अलतूनियां ने सरदारों पर चढ़ाई की दोनों बड़ी बीरता से लड़े पर दोनों दो लड़ाइयों में हार गये और पकड़ लिये गये।

११—यह बात विचित्र है कि दरबार के बड़े बड़े सरदार इस बात को भूल गये कि रज़िया ने कैसा अच्छा शासन किया था। सच तो यह है कि उनको उस पर दया करना उचित था क्योंकि यह स्त्री थी उनकी मलका थी। पर इन अभिमानी और क्रूर सरदारों ने बेचारी रज़िया और उसके पति को मार डाला। रज़िया ने कुल साढ़े तीन बरस राज किया।

१८—नसिरुद्दीन।

अपनी रोटी कमानेवाला बादशाह।

१—नसिरुद्दीन रज़िया के बाप अलतमश का पोता था। उसके एक चचा ने जो रज़िया के पहले सिंहासन पर बैठा था उसको पकड़ कर बन्दी घर में डाल दिया था। वह खाना और कपड़ा भी जो उसका चचा उसके पास भेजता था न लेता था। वह कहता था कि मैं आप अपने खाने पहिनने के लिये रुपया कमा लूँगा।

२—उस समय यानी अब से साढ़े छः सौ बरस पहले हिन्दुस्थान में किताबें छपतीं न थीं। सब किताबें हाथ ही से लिखी जाती थीं। उस समय किताबें कम और महंगी थीं। नसिरुद्दीन अपने खाने भर को फ़ार्सी और अरबी की किताबें नक़ल करके धन कमा लेता था। वह लिखने में बड़ा निपुण था और अपना सारा समय जब वह क़ैद था पढ़ने लिखने में बिताता था। वह कुछ दिनों में बड़ा विद्वान् हो गया। और वह अपने समय के बड़े विद्वानों और पुस्तक लिखनेवालों में से था।

३—कुछ दिन पीछे उसका निर्दयी चचा मर गया। नसिरुद्दीन ही अब उत्तराधिकारी था, सो दरबारियों ने उसी को सिंहासन पर बैठा दिया। उसने २१ बरस राज किया। जब वह बादशाह था तब भी उसने अपने लिये

शाही खज़ाने का धन न लिया। वह एक गरीब आदमी की तरह रहता था और किताबें नक़ल करके अपने लिये रुपया कमाता रहा।

४—वह बड़े कोमल चित्तका था। एकदिन उस के पास उसके दरबार का एक बड़ा सरदार आया और नसिरुद्दीन ने अपने कुरान की नक़ल उसे दिखाई। उस सरदार ने उसको एक शब्द दिखा कर कहा कि यह शब्द अशुद्ध लिखा है। नसिरुद्दीन ने उसको देखा और मुस्करा कर कृतज्ञता प्रगट की जिससे यह जाना जाय कि उसने बुरा न माना और उस पर कुण्डल कर दिया। जब वह सरदार चला गया उसने उस कुण्डल को मिटा दिया। किसी ने उससे पूछा कि आपने ऐसा क्यों किया। उसने उत्तर दिया कि शब्द ठीक लिखा है। पर मैं अपने मित्र का दिल दुखाना और उसको लज्जित करना नहीं चाहता था इसी से उससे यह नहीं कहा कि तुम ठीक नहीं कहते।

नसिरुद्दीन।

५—उन दिनों बादशाहों के बहुत सी बेगमें होती थीं पर उसको एक ही स्त्री थी जिसका नाम सलीमा था। वह

उसकी चचेरी बहिन भी थी और उसी की तरह बहुत दिनों तक क़ैद में रह चुकी थी। उसके कोई नौकर न था इस लिये सलीमा ही को खाना बनाना और घर का काम करना पड़ता था।

एक दिन रोटी बनाते समय सलीमा की अंगुलियाँ जल गईं। तब उसने नसिरुद्दीन से एक टहलनी रखने को कहा पर उसने न माना और कहा कि 'मैं बादशाह हूँ तो क्या मैं ख़ज़ाने का रुपया न छूऊँगा। वह प्रजा की भलाई के लिये है। एक ग़रीब आदमी की स्त्री को टहलनी न चाहिये। मेहनत किये जाओ जैसी मैं करता हूँ और जब मरोगी परमेश्वर तुम्हें इसका फल देगा।'

१६—अरगल की वीर रानी का गङ्गा-स्नान।

१—साढ़े छः सौ बरस हुए जब नसिरुद्दीन दिल्ली का बादशाह था एक छोटी सी रियासत अरगल के राजपूत राजा ने कर देने से इनकार किया। उसका नाम गौतम था। बादशाह ने अवध के सूबेदार को आज्ञा दी कि उसपर चढ़ाई करो और उससे कर लो। लड़ाई में राजपूत राजा ने उसको हरा दिया और उसको अपने राज से निकाल दिया। सूबेदार के दस हज़ार आदमी मारे गये।

२—बूढ़ा राजा अपनी जीत से बहुत प्रसन्न हुआ क्योंकि वह एक ऊंचे कुल का था और उसके पुरखा लड़ाई में कभी न हारे थे। उसने एक बड़ा ज्योनार किया जिसमें धनी कंगाल सब बुलाये गये। यह रास रंग कई दिन तक रहा। उसकी रानी ने भी अपने पाहुने का बड़ा आदर सम्मान किया।

३—ज्योनार समाप्त भी न हुआ था कि अमावस्या आ गई। रानी और उनकी सहेलियाँ अपने कुल धर्म की रीति से नहाने जाया करती थीं। रानी बड़ी धर्मात्मा थी और कभी उसने धर्म कर्म नहीं छोड़ा था। उस समय गङ्गा जी अरगल राज के बाहर बहती थीं और उसका किनारा पठान पलटनों के हाथ में था। रानी बेचारी क्या करती; वह अपने पति से इस डर से पूछना नहीं चाहती थी कि कहीं वह मना न कर दें, और कहें कि अगले महीने में अमावस्या नहा लेना। और जो वह एक बार नाहीं कर देंगे तो उनका कहना मानना ही पड़ेगा।

४—रानी ने बिना किसी सिपाही के अपने सहेलियों के साथ जाना निश्चय किया। जैसे तारे खिले और राजा और उसके पाहुने खाना खाने बैठे थे वह और उसकी सहेलियाँ एक एक करके चुपके चुपके महल के बाहर निकलीं और आंगन में साथ हो, गलियों से चुप चाप जङ्गल की ओर चलीं। और रातों रात जल्दी जल्दी चल कर तड़के गङ्गा जी के घाट पर पहुँच गईं।

५—थोड़ी देर में घाट नहानेवालों से भर गया। कुछ लोग आते थे, कुछ जाते थे, कुछ पूजा कर रहे थे, कुछ माला जप रहे थे, कुछ पानी में खड़े होकर गङ्गामाता की पूजा कर रहे थे, कुछ लोग भजन कर रहे थे और बहुतेरे सूर्य को अर्घ्य देते थे।

६—रानी और उसकी सहेलियाँ गङ्गा जी में नहाईं। नाक दबा कर आँख बन्द करके उन्हों ने ऐसी बुड़की लगाई कि पानी ने बिलकुल ढक लिया। ऐसा करने से वह समझती थीं कि उनके पापों का नाश होगा।

७—रानी को नहाते बहुतों ने देखा। उनमें से किसी ने अवध के सूबेदार से जो पास ही किनारे पर डेरा डाले पड़ा था कह दिया कि कोई बड़े घराने की स्त्री नहाने आई है पर यह नहीं जानते कि वह कौन है। उसने अपनी लड़कियों को जाँच करने के लिये भेजा। उन्हों ने उनसे बातों बातों जान लिया कि यह अरगल की रानी है और अमावस्या नहाने आई है।

८—सूबेदार बड़ा प्रसन्न हुआ और अवसर जान कर अपने आदमी ले कर उनको पकड़ने चला। रानी घर की ओर चल चुकी थी। थोड़े ही देर में राह पर उसको लोगों ने घेर लिया पर उसने सच्ची राजपूतनी की भाँति कुछ भय न दिखाया। उसने निडर होकर बेसूदार की ओर देखा और कहा "अरगल के राजा ने तुझ को हराया है

अरगल की वीर रानी और सूबेदार।

और तेरे साथी मर्दों से लड़ कर भाग चुके हैं। और अब तू स्त्रियों से लड़ने आया है, तू बड़ा नीच है और मर्द कहलाने योग्य नहीं।"

९—रानी की यह बात सूबेदार को डंक सी चुभी और उसने अपने आदमियों को उसको पकड़ने का हुकुम दिया। रानी ने चिल्लाकर कहा कि "मेरे वीर पति ने कभी अपने बैरी से हार नहीं मानी और न मैं मानूँगी। क्या यहाँ कोई राजपूत ऐसा नहीं है जो एक राजपूत माता और बहिन की मर्यादा रखे! क्या कोई राजपूत यहाँ ऐसा नहीं जो एक राजपूत राजा की रानी के लिये लड़े। कोई हो तो मैं उसको पुकार कर कहती हूँ कि ऐसे अवसर पर मेरी सहायता करे और मेरी पत रखे।"

१०—रानी के मुँह से यह शब्द निकलने भी न पाये थे कि दो राजपूत अभय और निर्भयचन्द जो वहीं खड़े थे अपने साथियों के साथ रानी के शत्रुओ पर टूट पड़े और रानी और उसकी सहेलियों को बीच में करके सूबेदार के सिपाहियों को काटते चले गये। इतने में उन्हीं में से एक घोड़े पर अरगल की मदद को दौड़ गया। कोसों तक लड़ाई होती गई। उनमें बहुत घायल हुए और बहुतेरे मारे गये। अन्त में थोड़ी देर पीछे अभयचन्द और उनके दो तीन सगोतियों के सिवा कोई न बचा। अब उनके भी बचने की आशा जाती रही। इतने में एक शब्द सुनाई दिया और राजा गौतम

कुछ राजपूतों के साथ आता हुआ देख पड़ा। सूबेदार के आदमियों ने राजा को आता हुआ देखा तो भाग खड़े हुए और रानी अपने घर पहुँच गई।

११—अरगल का राजा बहुत प्रसन्न हुआ और उस जवान सरदार अभयचन्द को अपनी बेटी व्याह दी। अभय ऐसा कुलीन और बड़ा सरदार न था पर राजा उसका ऐसा कृतज्ञ हुआ कि उसको राव की पदवी दी जिससे उसके वंशवाले अब भी पुकारे जाते हैं। राजा ने उसको एक जागीर भी बख़्शी।

१२—सारे देश में बहुत दिनों तक गाँव-गाँव में अभय और निर्भय की कहानी (उन्हों ने कैसे रानी की रक्षा की) प्रसिद्ध रही।

१३—अवध के सूबेदार को बादशाह नसिरुद्दीन ने निकाल दिया। उसने स्त्रियों को छेड़ा इस से शत्रु मित्र सब ने उसको बुरा कहा। उसके घरवाले भी उसके काम से लज्जित थे।

२०—अलाउद्दीन।

१—रज़िया और नासिरुद्दीन गुलाम बादशाहों की सन्तान थे। उस वंश में कुल दस बादशाहों ने लगभग ८१ बरस राज किया। उनमें से केवल तीन अपनी मौत से मरे और सब मारे गये। तीन सौ बरस के लगभग जैसा

आगे कहा जा चुका है तुर्की और अफ़ग़ानी बादशाहों के समय में सारे हिन्दुस्तान में मारकाट ही मची रही।

२—गुलाम बादशाहों के राज्यकाल के पीछे चार ख़िलज़ी बादशाह हुए जिन्हों ने लगभग तीस बरस राज किया। ख़िलज़ी तुर्की थे और अफ़ग़ानिस्तान से आये थे। इनमें पहला बादशाह बूढ़ा सरदार था। जब वह बादशाह हुआ उस की आयु सत्तर बरस की थी। उसके कोई लड़का न था। इसलिये उसने आलाउद्दीन को गोद ले लिया और उसको बहुत मानता था। पर आलाउद्दीन बड़ा निर्दयी था और आप बादशाह होना चाहता था। उस ने बूढ़े बादशाह के मरने का आसरा तक न किया और एक दिन जब वह उसको गले लगा रहा था, उसके आदमी जिन को उसने पहिले ही सिखा रखा था बादशाह पर टूट पड़े और उसकी छाती में कटार भोंक दी।

३—आलाउद्दीन दिल्ली के सब ख़िलज़ी बादशाहों में बड़ा और बली था। अब तक मुसलमान ग़ज़नी ग़ोरी और गुलाम बादशाह विन्ध्याचल के उत्तर का देश अधिकार में लाये थे। धीरे धीरे उन्हों ने बहुत से राजपूत राज जीत लिये थे पर आलाउद्दीन और उसका सेनापति काफ़ूर दक्षिण और दक्षिण-भारत तक चला गया। उन्हों ने बहुत से राजाओं को जो वहाँ राज करते थे परास्त कर दिया और बहुतसा सोना, चाँदी, हीरा, मोती, जो उन राज्यों और

बड़े बड़े मन्दिरों में सैकड़ों बरस से बटोरा रखा था लूट लाए।

४—आलाउद्दीन के बहुत सी बेगमें थीं। जैसे ही वह राज का अधिकारी हुआ वह एक बड़ी सेना लेकर गुजरात की ओर चला जहाँ एक राजपूत राजा करन राय राज करता था वह अपने राज के लिये बड़ी बहादुरी से लड़ा पर हार गया। उसको अपनी रानी कमला देवी और अपनी लड़की देवल देवी के साथ भागना पड़ा। करन राय का तुर्की सिपाहियों ने ऐसा पीछा किया कि रानी जङ्गल में छूट कर उनके हाथों में पड़ गई और उनको आलाउद्दीन के पास ले गये और उसने उससे ज़बरदस्ती ब्याह कर लिया। रानी ने भी यह सोच कर कि अब कभी राजा के पास लौट कर नहीं जा सकती पहिली सब बातें भूला दो और दिल्ली की मलका हो गई। बादशाह उसको बहुत मानता था और उसको प्रधान बेगम बना दिया। एक दिन रानी ने उससे कहा कि मैं अपनी लड़की देवला देवी को देखना चाहती हूँ। अलाउद्दीन ने उसको लाने की प्रतिज्ञा की और उसी दिन काफ़ूर को

अलाउद्दीन।

सेनाके साथ दक्षिण भेज दिया और यह कह दिया कि छोटी राजकुमारी को लिये बिना न लौटना।

५—उस समय देवल देवी पन्द्रह बरस की हो गई थी। एक दिन एक बुढ़िया ने उसके हाथ की रेखा देख कहा था "तुम्हारे हाथ की रेखा से यह जाना जाता है कि तुम्हारे जीवन का ताना दूर देश के बाने से बुना जायगा। देवल की समझ में कुछ न आया पर कोई उसे समझ भी नहीं सकता था।

६—थोड़े दिनों में काफुर दक्षिण पहुँचा। उसने करन राय से कहला भेजा कि "देवल देवी को उसकी माँ दिल्ली की मलका ने बुलाया है। जो वह न भेजी जायगी तो जो कुछ बचा खुचा राज है वह भी दिल्ली का बादशाह छीन लेगा।" करन राय ने उत्तर दिया 'तुम मुझे चाहे मार डालो। मैं अपनी लड़की किसी और को दूँगा न कि उन लोगों को कि जिन्हों ने मेरी रानी चुरायी है। तुम लोग देवल देवी को चाहते हो तो मेरी लोथ पर से उसे ले जाओ।"

७—देवगिरि के एक महरठा राजा रामदेव ने पहिले ही अपने लड़के शङ्करदेव का व्याह देवल देवी के साथ करने को करन राय से कहा था। पहिले तो राजपूत राजा ने उसकी न मानी क्योंकि वह उससे नीच था पर जब उसने देखा कि दिल्ली का बादशाह देवल देवी को बरजोरी से ले जानेवाला है तब उसने रामदेव की बात मान ली। देवल देवी ने

मन में सोचा कहीं यही दूर देश का व्याह न हो जो बुढ़िया ने कहा था। करन राय कुछ करने भी न पाया था कि उसको तुरकी सेना ने पकड़ लिया। उसको अपनी जान बचाकर भागना पड़ा और उसने देवल देवी को एक दूसरी राह देवगिरि भेज दिया। वह राह भी तुरकी सवारों से भरी थी सो वह अपनी दाई के साथ अलोरा की गुफ़ाओं में लगभग एक महीना छिपी रही।

८—अलाउद्दीन के सैनिकों को बहुत ढूंढ़ने पर भी कुछ पता न लगा। अन्त में निराश होकर दिल्ली की ओर फिर रहे थे कि वह लोग अलोरा की सुप्रसिद्ध गुफ़ाओं को देखने गये जो राह में पड़ी। यहाँ अचानक उनके हाथ वही राजकुमारी लग गई जिसकी खोज में फिर रहे थे। उसे वह दिल्ली ले गये और उसकी माँ को सौंप दिया। कुछ दिन पीछे अलाउद्दीन के बेटे खिज़र ने उसको देखा और उसपर मोहित हो गया। वह भी उसे चाहती थी और दोनों का विवाह हो गया। इस रीति से उसके जीवन का ताना दूर देश के बाने के साथ बुना गया। यह कथा फ़ारसी के कवि खुसरो ने एक प्रसिद्ध काव्य में वर्णन की है।

२१—चित्तौर की रानी पद्मिनी।

"अलाउद्दीन ने कैसे दर्पण में उसका रूप देखा।"

१—लगभग छः सौ बरस हुए जब अलाउद्दीन दिल्ली का बादशाह था। मेवाड़ की राजधानी चित्तौर में भीमसीं या भीमसेन नाम राजपूत राजा राज करता था। उसकी रानी पद्मिनी परम सुन्दरी बड़ी बुद्धिमती और वीरा थी। उसकी सुन्दरता सारे देश में प्रसिद्ध हो गई थी और अलाउद्दीन के कानों तक भी पहुँची। हम पहिले कह चुके हैं कि अलाउद्दीन कमला देवी के साथ अपना विवाह कर चुका था। इसके सिवाय उसके और भी बेगमें थीं। तिसपर भी उसकी लालसा हुई कि पद्मिनी को भी अपनी बेगम बना लें। इस प्रयोजन से उसने एक बड़ी सेना लेकर चित्तौर पर चढ़ाई कर दी।

२—वीर राजपूत बड़ी बहादुरी से लड़े और ख़िलजी बादशाह से चित्तौर गढ़ न टूट सका। तब अलाउद्दीन ने कहला भेजा कि "हम केवल पद्मिनी को देखना चाहते हैं। जो राजपूत हमारा कहना मान लेंगे तो हम दिल्ली लौट जायंगे।"

३—भीमसीं बोला कि "बादशाह मेरी रानी को नहीं देख सकता। हाँ वह चाहे तो पद्मिनी का रूप दर्पण में दिखा दिया जाय; बादशाह माने तो दो एक सिपाही लेकर चला आये।"

४—अलाउद्दीन मान गया। वह जानता था कि राजपूत राजा अपनी बात का सच्चा है और उससे न बोलेगा। यह

अलाउद्दीन और दर्पण में पद्मिनी का प्रतिविम्ब।

सोच कर वह क़िले में एक ही दो सिपाहियों के साथ गया। वह राजपूतों के हाथ में था। वह चाहते तो उसे मार भी डालते पर वह अपनी बात के सच्चे थे। अलाउद्दीन ने पद्मिनी का मुख दर्पण में देखा। चित्र में पद्मिनी की टहलनी एक दर्पण लिये खड़ी है उसमें पद्मिनी का मुँह देख पड़ता है। परदे के पीछे वह खड़ी है।

५—अलाउद्दीन ने तब भीमसेन से कहा कि जैसे मैंने तुम्हारा विश्वास किया वैसा ही तुम मेरा करो और क़िले के बाहर आकर ऐसे बिदा दो जैसे मित्र मित्र से। भीमसीं उसका विश्वास करके जैसे ही गढ़ के बाहर गया वैसे ही तुरकी सिपाही जो इधर उधर छिपे थे उस पर टूट पड़े और उसको पकड़ लिया। अलाउद्दीन ने कहा कि मैं भीमसेन को न छोड़ूँगा जब तक पद्मिनी आप मेरे पास न आयेगी और मेरे साथ अपना व्याह कर न लेगी।

६—राजपूतों ने जब यह सुना तो उनके क्रोध का वारापार न रहा। पद्मिनी को भी यह डर लगा कि कहीं राना मार न डाला जाय। पर वह बड़ी चतुर थी उसने अपने मन में कहा "तुर्क बड़े नीच होते हैं; उन्होंने हम लोगों को धोखा दिया। हमें भी चाहिये कि उन्हें छकाव। यह निश्चय करके उसने अलाउद्दीन से कहला भेजा कि मेरा पति छोड़ दिया जाय तो मैं अपने को सौंप दूँगी। पर मैं अलाउद्दीन की मलका होने आऊंगी इस लिये मैं अपने साथ

सब हीरे ज़वाहिरात और अपनी सब टहलनियाँ बन्द डोलियों में लाऊंगी जिनको तुरुक सिपाही न देखें। अलाउद्दीन यह समझा कि पद्मिनी सचमुच दिल्ली की मलका होने आती है और यह बात मान ली।

७—पद्मिनी की डोली किले के बाहर लाई गई और सब ने सोचा कि पद्मिनी इसी में होगी पर डोली में एक वीर राजपूत लड़का बादल था। उसके साथ कोई सत्तर और डोलियाँ थीं जिन में तुर्कों ने समझा कि टहलिनियाँ होंगी पर उनमें भी एक एक वीर राजपूत था। एक एक पालकी का छः छः आदमी जो कहारों के भेष में वीर राजपूत थे उठाये हुए थे और वह अपनी ढाल तलवार डोली में छिपाये थे।

८—पद्मिनी के चचा गोरा ने तब अलाउद्दीन से कहा कि पद्मिनी राजा से बिदा होना चाहती है। ख़िलजी बादशाह अलाउद्दीन इस समय यह जान कर कि अब पद्मिनी और उसके सब हीरा मोती उसके हाथ में हैं बड़ा प्रसन्न था; उसने कहा "बहुत अच्छा भीमसीं उस डेरे में है पद्मिनी उससे बिदा हो ले पर वह एक ही घड़ी ठहरे।"

९—पद्मिनी की डोली उस डेरे में पहुँचाई गई। बादल ने उसमें से उतर कर भीमसीं को कवच पहिना दिया। थोड़े समय में जब अलाउद्दीन उस डेरे में गया तो राजपूत लोग अपने डोलियों से निकल पड़े। डोली

उठानेवालों ने भी अपनी तलवारें खींच लीं और वे तुर्कों पर टूट पड़े। उन्हों ने उन को मार भगाया।

१०—भीमसीं भी घोड़े पर चढ़ कर पद्मिनी के पास पहुँचा। तुर्कों और राजपूतों में बड़ी लड़ाई हुई जिसमें बहुत लोग मारे गये और बहुत थोड़े राजपूत जीते बचे। अलाउद्दीन ने फिर क़िले पर चढ़ाई की पर हार कर दिल्ली लौट गया।

११—बादल भी जीता बचा था। जब वह अपनी चाची (गोरा की स्त्री) के पास गया तो उसने पूछा कि तुम्हारे चचा ने क्या किया और अब वह कहाँ हैं? यह लड़का बारह ही बरस का था पर बड़ी वीरता से लड़ा था और बोला कि "उसने अपने शत्रुओं को अपनी तलवार से खेत की तरह काट डाला अब वह लड़ाई के मैदान में है। उसका बिछौना शत्रुओं की लोथ हैं और तकिया एक शाहज़ादे की लोथ है। वह बड़ी सुख की नींद सो रहा है और अब न उठेगा।" उसकी चाची बोली "क्या मैं जीती रहूँगी। मेरा पति मुझे बुलाता है और मैं देर करूँगी तो बुरा मानेगा" इतना कह कर आग में कूद पड़ी और जल कर मर गई।

२२—भीमसीं का सपना ।

अलाउद्दीन का चित्तौर ले लेना ।

१—अब हम तुमको एक बड़े दुख की कहानी सुनाते हैं । अलाउद्दीन जिस काम को उठाता था उसको निरास होकर अधूरा छोड़नेवाला मनुष्य न था । दो एक बरस पीछे वह एक बड़ी अफ़ग़ानी और तुर्की सेना लेकर जिस में कवच पहिने सिपाही थे चित्तौर की ओर चला । इस सेना ने काली घटा की भाँति चित्तौर को घेर लिया ।

२—राणा भीमसीं के बहुत से आदमी पहिली लड़ाई में काम आ चुके थे । जो राजपूत बचे थे बड़े वीर थे पर इस बड़ी तुर्की सेना के बराबरी के न थे । छः महीने तक लड़ाई होती रही । नित राजपूत मरते गये पर तुर्की सेना में दिल्ली से आदमी आते गये और वह बढ़ती गई ।

३—एक रात भीमसीं दिन भर की लड़ाई से थका हुआ सो रहा था । उसको एक बड़ा भयानक सपना दिखाई दिया । उसने वह शब्द सुने "मैं भूखी हूँ" । राजा राजपूतों को देवी काली भवानी को देख कर डर के मारे काँपने लगा और बोला "क्या हमारे आठ हजार आदमी जो मारे गये हैं उनसे तुम्हारा पेट नहीं भरा ।" देवी ने कहा "हमें राजा चाहिये । बारह राजा तुम्हारे कुल के न मारे जायंगे तो मैं चित्तौर छोड़ दूँगी और तुम्हारे कुल का नाश हो जायगा"

दूसरी रात फिर भीमसीं को वही सपना हुआ। तब उसने अपने सरदारों को बुलाया और उनसे सारा ब्यौरा कहा। सब ने काली देवी का कहना मानना निश्चय कर लिया।

४—राजा के बारह बेटे थे। दूसरे ही दिन सब से बड़ा लड़का राजा बनाया गया वह तीन दिन राज करके लड़ाई में मारा गया। ऐसे ही सब बारी बारी राजा बनाये गये और सब तीसरे दिन तुरकी सेना में वीरता से लड़ कर काम आये। अब सब से छोटा लड़का बचा। राणा ने तब कहा "अब मैं अपने को चढ़ाता हूं। भवानी भी सन्तुष्ट हो जायगी।

५—भीमसीं ने तब थोड़े से बड़े वीर राजपूत चुन लिये और अपने छोटे बेटे के साथ कर कहा कि "तुम तुर्की सेना को काटते हुए कैलवाड़ा चले जाओ। वहाँ मेवार में राज करो जब तक चित्तौर फिर आने का अवसर न मिले।" राजकुमार अपने बाप के साथ लड़ाई में लड़ कर मरना चाहता था पर भीमसीं ने न माना और उसको समझाया कि हमारा वंश न नाश हो, इस लिये तुमको जीता रहना चाहिये। अन्त में राजकुमार ने पिता की आज्ञा मान ली। वह राजपूतों के साथ तुर्कों को काटता हुआ निकल गया और कुछ काल पीछे उसके वंश के लोग चित्तौर में आकर फिर राज करने लगे।

६—जब भीमसीं ने जाना कि उसका बेटा निकल गया

तब वह और उसके बचे खुचे राजपूत अपनी पुरानी चाल चले। एक बड़ी आग जलाई। सब स्त्रियां पद्मिनी के साथ उसी में कूद पड़ीं और जल कर राख हो गईं।

मर्द पीले वस्त्र पहिन और हथियार लेकर निकल पड़े और बड़ी वीरता से लड़ कर जितने तुर्कों को मार सके मारा और सब कट कट मर गये। अलाउद्दीन नगर में पैठा तो वहाँ उस ने किसी को जीता न पाया।

२३—तैमूरलङ्ग।

दिल्ली की लूट।

१—पिछले अफ़ग़ान बादशाहों के समय में उत्तर का एक बड़ा सरदार तुर्कों और तातारों की एक बड़ी सेना लेकर भारत पर चढ़ आया। यह सेना मध्य-एशिया से आई थी और इसके सरदार ने सारा तुर्किस्तान और बहुत से देश जीत लिये थे।

२—इस सरदार का नाम तैमूरलङ्ग था। यह लङ्गड़ा था। इसी से इसको तैमूरलङ्ग या लङ्गड़ा तैमूर भी कहते हैं। इसकी बड़ी मोटी मोटी उंगलियाँ और बड़ी लम्बी लम्बी टांगें थीं। इसका रंग गोरा, डील डौल लम्बा और उसकी आंखें चमकीली थीं, जो और मनुष्य के मानो आरपार देखती जान पड़ती थीं। इसका हृदय पत्थर का था।

यह कहा जाता है कि इसने जितने आदमी मारे उतने कभी किसी ने न मारे होंगे।

३—तुम लोग पढ़ चुके हो कि महमूद ग़ज़नवी, महम्मद ग़ोरी और और बहुत से तुर्की राजा हिन्दुओं से लड़े पर तैमूरलङ्ग ने मुसलमान हिन्दू सब मारे। यह देश लेना नहीं चाहता था न राज ही करना। यह मारना लूटना खसोटना ही जानता था।

४—यह निठुर तुर्क सरदार दिल्ली पर बड़ी सेना लेकर चढ़ आया और राह में गाँव नगर सब जलाता गया। इस के इतने बन्दी थे कि इस के सिपाही उनकी रखवाली न कर सकते थे और यह उनको छोड़ना भी न चाहता था। सो इसने एक लाख के लगभग आदमी मरवा डाले। दिल्ली जीतने के पीछे यह अपने देश की ओर लौट गया और जो कुछ बन पड़ा साथ लेता गया।

तैमूरलङ्ग।

५—तैमूरलङ्ग केवल पांच महीने हिन्दुस्थान में रहा पर लोग उसको कभी न भूलेंगे। बहुत दिनों तक जब कभी कोई हिन्दू माता अपने बच्चे को डरवाना चाहती तो तैमूर का नाम लेती और कहती कि तुमको तैमूर पकड़ ले जायगा।

२४—मुग़ल बादशाह ।

१—सन् १२०६ ई० से सन् १५०२ तक लगभग तीन सौ बरस तक तुर्की और पठान बादशाह हिन्दुस्थान में राज करते थे। उन के पीछे एक और वंश ने राज किया जो मुग़ल कहलाता था। मुसलमान बादशाहों में मुग़ल घराने के सब से बड़े बादशाह हुए। इन्हों ने उत्तर-भारत में दो सौ बरस राज किया। इस घराने में पन्द्रह बादशाह हुए, इन में पहिले छः बड़े बादशाह थे; और नाम मात्र के बादशाह थे और उनका अधिकार भी बहुत कम था।

२—पहिले छः मुग़ल बादशाह कई देशों पर राज करते थे। इसी से वह सम्राट् कहलाते थे। वह यूरोप में ग्रेट या बड़े मुग़ल के नाम से प्रसिद्ध थे। वह बड़े बादशाह थे और संसार के बहुत बड़े बादशाहों में उनकी गिनती है। उस समय के हिन्दू दूसरे देशों का हाल बहुत कम जानते थे और समझते थे कि उन का पहिला बादशाह बाबर मङ्गोलिया से जो एक छोटा सा देश एशिया के मध्य में है आया था। वह वास्तव में तुर्किस्तान से आया था जो मङ्गोलिया के पश्चिम में एक देश है। मुग़ल सम्राटों को इसलिये तुर्की सम्राट् कहना चाहिये पर वह सदा से मुग़ल ही सम्राट् कहे जाते हैं इसी से किताबों में भी यही लिखा है। बाबर ने मुग़ल राज की नीव सन् १२५६ ई० में डाली थी।

३—जब बाबर का बाप मरा यह तेरह बरस का था। उस को अपनी जान बचाने के लिये अपने निर्दयी चचा से लड़ना पड़ा जिस ने उस से तुर्किस्तान की छोटी रियासत छीन ली थी। बीस बरस तक वह इधर उधर घूमता फिरा। उसे बिना बिछौने के धरती पर कभी कभी खुले मैदान में सोना पड़ता था। अन्त को उसने देखा कि जन्मभूमि तुर्किस्तान में ठहरने में कोई लाभ नहीं क्योंकि यहाँ मुझ से भी बढ़ कर वीर सरदार रहते हैं। तब उसने अपने सिपाहियों से कहा तुम मेरे साथ अफ़ग़ानिस्तान चलो। उनको भी बाबर की भाँति कोई घर बार न था, इसलिये वह भी चलने को तैयार हो गये। तुर्क अफ़ग़ानों से बली और वीर थे और सहज ही उनका देश दबा बैठे।

२५—वीर बाबर।

पानीपत की लड़ाई और मुग़लराज की स्थापना।

१—बाबर ने काबुल में थोड़े ही दिन राज किया था कि उसका यश भारत में फैलने लगा। वह बड़ा बुद्धिमान् और उदार बादशाह था और बड़ा वीर और चतुर सेनानायक भी था। दिल्ली के बादशाह इब्राहीम लोदी का शासन ऐसा बुरा था कि उसी के सरदार उस से बिगड़ गये और राजपूत उस से द्वेष मानने लगे। बड़े बड़े राजपूत

राजाओं और पंजाब के पठान हाकिम ने बाबर को लिख भेजा कि आप आयें और इब्राहीम लोदी को परास्त करने में हमारी सहायता करें।

२—बाबर पहिले ही से हिन्दुस्थान के हरे भरे मैदानों को देख कर ललच रहा था। वह तीन बार पंजाब में उतर चुका था और उसने देख लिया था कि हिन्दुस्थान के पठान कैसे हैं और कैसे लड़ते हैं। उसने जान लिया था कि यहाँ के पठानों में न उनके पुरखों का सा बल पौरुष है और न उनका सा उत्साह ही है। हिन्दुस्थान के गरम देश में सैकड़ों बरस रहने से पाठान निर्बल हो गये थे और वह मध्य-एशिया के ठण्डे देश में रहनेवाले तुर्कों का सामना करने में समर्थ न थे।

३—बाबर के पास राजपूत राजाओं और पठान सरदारों की चिट्ठियाँ पहुँची तो वह समझ गया कि हिन्दुस्थान विजय करने का समय आ गया। वह सन् १५२७ ई० लगते ही १३,००० सिपाही साथ लेकर भारत के मैदान में निःशङ्क उतर आया। बाबर ने अपना जीवन चरित आप लिखा है उस से सारा व्यौरा जाना जाता है।

४—इस समय तक भारत में बन्दूकें काम में लाई न गई थीं। सिपाही धनुषों से तीर मारते थे या छोटे बरछे फेंकते थे। थोड़े ही दिन पहिले यूरोपवालों ने तोप और बारूद बनाने की रीति निकाली थी। ईरान और अफ़ग़ानिस्तान के

लोग यह रीति जान गये थे पर भारत में इसका प्रचार न हुआ था। उस समय बन्दूक को पथरकला कहते थे और फ़लीते से दागी जाती थी। बाबर के पास बहुत सी तोप और बन्दूकची थीं।

५ [illegible] लोदी ने सुना कि बाबर आ रहा है तो उसका सामना करने को दिल्ली से धीरे धीरे चला। उसके साथ एक लाख आदमियों की बड़ी सेना और १०० हाथी थे पर तोपें न थीं। बाबर ने लिखा है कि लोदी को लड़ाई का कौशल न आता था और लालच के मारे सिपाहियों का वेतन न देता था। उसको रुपये की कमी न थी क्योंकि उसके पास उससे पहिले के पठान बादशाहों का जोड़ा रुपया पड़ा था।

६—२१ अप्रैल १५२६ के सबेरे सरागियों ने बाबर से कहा कि पठान सेना सजी सजाई चली आ रही है। बाबर लिखता है "सबेरे का तड़का, हम लोगों ने अपने अपने कवच पहिने, हथियार बांधे और घोड़ों पर सवार हुए।" दो तीन दिन पहिले बाबर ने अपने सिपाही ठिकाने से बैठा दिये थे और सब को उनका काम बता दिया था।

७—सामने के पृष्ठ पर पानीपत की रणभूमि का चित्र दिया हुआ है। इस से जान लोगे कि बाबर की सेना का कौनसा खण्ड कहाँ खड़ा था और उसने क्या काम किया इब्राहीम लोदी की सेना की चाल हम नहीं बता सकते।

प
इब्राहीम लोदी का खीमा
इब्राहीम लोदी की
२००,००० सेना
और १०० हाथी
अफगानों सेना
बायें पक्ष वालों का अफगानों के पीछे से हमला करना
दाहिने पक्ष वालों का अफगानों के पीछे से हमला करना
अफगानों की दाहिनी तरफ हमला
अफगानों के केन्द्र पर हमला
अफगानों के केन्द्र पर हमला
अफगान की बांयीं तरफ हमला
बाबर की सेना
१२००० फौज
ऊंची भूमि और सम्मिलित तोपें
बन्दूक चलाने वाली पैदल सेना
अश्वारोही
बायां पक्ष
अश्वा-रोही
म० सुलतान मिर्जा
बायां केन्द्र
अश्वा-रोही
खलीफा
दाहिना केन्द्र
अश्वा-रोही
चीन तैमूर
दाहिना पक्ष
अश्वा-रोही
हुमायूं
बाबर
अब्दुल अजीज
बांयीं तरफ के अश्वारोही
करा कूजी
दाहिने तरफ के अश्वारोही
वली काजी
पानीपत का किला और शहर
पू

बाबर लिखता है कि पठानों का क्रम ठीक न था और जो धावा करते थे उनमें न शक्ति थी और न चतुराई।

८—लड़ाई में चतुर सेनानायक सदा इस बात का उद्योग करता है कि बैरी को घेर ले और बगल से उसपर धावा कर दें। वह इस बात का भी प्रबन्ध करता है कि उसकी सेना की बगल पर बैरी का घात न लगे। यही काम बाबर ने पानीपत की लड़ाई में किया और इसी से उसकी जीत हुई। यही इब्राहीम लोदी ने न किया और इसी से वह हार गया।

९—चित्र ही से तुम जान सकते हो कि बाबर ने कैसी चतुराई से अपनी सेना की बगलों की रक्षा की थी। उसकी दाहिनी ओर पानीपत का किला और नगर है। उधर से उस पर धावा नहीं किया जा सकता था। बाईं ओर बाबर ने गहरी खाइयां खोदवाई थीं और उनके बाहर पेड़ों के ठूंठ और डालियों के ढेर लगा दिये थे जिसमें पठान सवार बाईं ओर से न टूट पड़ें।

१०—सेना के आगे ऐंठें हुए तसमों से बंधी हुई तोपें सजी थीं और बीच बीच में बालू भरे भरे बोरे तले ऊपर आदमी की छाती की ऊंचाई तक गंजे थे; उन बोरों को तुरा कहते हैं। तोपों और बोरों से एक ऐसी भीत बन गई थी जिससे आगे से उनपर धावा न हो सकता था। इस भीत के पीछे बन्दूकची खड़े थे जो तोपों के बीच बीच में

बोरों की आड़ में खड़े होकर बन्दूक चलाते थे। इस रीति से बाबर की सेना मानो चारों ओर से कोट में बन्द थी, इस से निकल कर बैरी पर धावा बोल सकती थी और बैरी प्रबल निकले तो इसी के भीतर अपनी रक्षा कर सकती थी।

११—सेना के आगे हरवल था और उसके पीछे कोतल। अच्छा सेनापति सदा एक प्रबल परतल रखता है। कोतल सेना के उस खण्ड को कहते हैं जो पहले लड़ाई को नहीं बढ़ता पर जहाँ कहीं काम पड़ता है वहाँ सहायता करने को तैयार रहता है।

१२—मुख्य सेना के दो बराबर खण्ड किये गये। दहिना मध्य-भाग जिसको गोल कहते हैं दहिना अङ्ग और दहिना पक्ष और बायाँ गोल बायाँ अङ्ग और बायाँ पक्ष। हर खण्ड के नायक का नाम चित्र में दिया है। दहिने अङ्ग का नायक बाबर का बड़ा बेटा हुमायूं था जो उस समय कुल १८ बरस का था। बाबर सारी सेना पर कमान करता था।

१३—बाबर लिखता है कि सूर्य्य आकाश में नेजे भर ऊंचा चढ़ आया था जिससे यह समझना चाहिये कि कि सबेरे के सात बज गये थे जब बैरी देख पड़ा। पहले तो लोदी की सेना बढ़ी चली आती थी पर जब उन्हों ने तोपों की भीत और मोरचे देखे तो उनकी समझ में कुछ न आया और वह खड़े रह गये। वह समझे थे कि खुले मैदान में

पैदल और सवार का सामना करना पड़ेगा। इतने में तोपों से आग बरस ने लगी और बीच बीच में पथरकलों ने गोलियाँ चलाईं। तोपों की गरज और बारूद की चमक एक नई बात थी। घोड़े और हाथी उसके आगे ठहर न सके जब गोले गोलियाँ चलने लगीं और सिपाही धमाधम गिरे तो पठान हट गये।

१४—इस बीच में बाबर के दोनों पक्ष जिसमें तेज घोड़ों पर सवार हाथ में तीर कमान और बरछे लिये बड़े बड़े वीर थे पठानों की आँख बचा कर दहिने बायें दौड़े और पठान सेना के पीछे पहुँच गये और उलट कर तीर बरसाने लगे।

१५—जब बाबर ने देखा कि बैरी तोपों के आगे से हटा जा रहा है तो उसने अपनी सेना के बायें और दहिने अङ्गों को आज्ञा दी कि बैरी के दहिने और बायें पक्षों पर टूट पड़ो। बैरी की सेना इनका सामना करने के लिये दहिने बायें मुड़ी अब उनका मुँह तोपों की ओर न रह गया। जो उनका हरवल न था वह उनका पक्ष हो गया।

१६—जब बैरी की सेना यों मुड़ी तो बाबर ने अपने दहिने बायें गोलों को आज्ञा दी की बैरी के बीच में घुस जाओ। गोलों के सिपाही चुने हुए वीर थे और लोहे के कवच पहिने थे। अब पठानों पर चारों ओर से भीड़ पड़ गई। आगे पीछे दोनों पक्षों पर तोपों की गरज धूर और

पथरकलों के धुंए से वह घबरा गये, पीछेवाले कहते थे आगे बढ़ो और आगेवाले चिल्लाते थे कि पीछे हटो। उन्हें यह भी न जान पड़ा कि तुर्क कहाँ है और कितने हैं। पठान सिपाही इतने थे कि उन्हें आगे बढ़ने की जगह न मिली और तुर्क उनके चारों ओर थे उनकी समझ में यह भी न आया कि किधर बढ़ना चाहिये और वह भाग खड़े हुए।

१७—दोपहर होते होते लड़ाई समाप्त हो गई। हज़ारों पठान खेत में बिछ गये और उनके बीच में उनका बादशाह इब्राहीम लोदी भी पड़ा हुआ था। बाबर इस लड़ाई के वर्णन में लिखता है कि यों ही ईश्वर की दया से यह बड़ी सेना आधे ही दिन में धूर में मिल गई।

१८—उसी दिन बाबर ने हुमायूं के साथ कुछ सवार भेज दिये कि वह आगरे के किले और ख़ज़ाने को हाथ में कर ले और कुछ सिपाही दिल्ली को भेज दिये कि किले पर अपना झण्डा खड़ा कर दें। आगरे में हुमायूं ने ऐसा प्रबन्ध किया कि किसी राजा या सरदार को कोई दुःख न दिया जाय और न उनका धन छिना जाय। बाबर लिखता है कि एक सरदार ने आप से आप हुमायूं को एक हीरा दिया जो आलाउद्दीन दक्षिण से लाया था। लोग कहते हैं कि इसका इतना दाम था जिस से आधे दिन तक संसार भर खाना खा सके।

२६—वीर बाबर ।

हुमायूं की प्राण-रक्षा ।

१—बाबर का अर्थ सिंह है। बाबर सिंह की तरह बली और वीर था। वह दो लम्बे आदमियों को काँख में दाबकर ऊँची दीवार पर दौड़ जाता था और गिरता न था। जो नदी आगे आती उसे तैर जाता था और दिन भर में पचास कोस घोड़े पर दौड़ सकता था। वह तैमूर सा निर्दयी न था। उसका चित्त बड़ा कोमल था। वह भारत में प्रजा को मारने या उनको दुःख देने न आया था। न वह चाहता था कि हिन्दुओं के मन्दिर ढहा दे या उनका माल लूट ले जाय। उसकी इच्छा यह थी कि बुद्धिमान् और अच्छे राजा की भाँति उन पर शासन करे।

२—वह जब हिन्दुस्तान में आया तो उसे पठानों और राजपूतों—दोनों से लड़ना पड़ा। राजपूतों ने उसे इब्राहीम लोदी से लड़ने के लिये बुलाया था। वह न समझे थे कि बाबर भारत में रह जायगा और दिल्ली में राज्य स्थापित करेगा। राजपूतों का नायक उन दिनों चित्तौर का राणा सांगा था। उसकी एक लड़ाई में एक आँख जाती रही थी दूसरी में एक बाँह, तीसरी में एक टांग और उसकी देह भर में तलवार और बरछे के अस्सी घाव थे। सात राजा और २०४ सामन्त (सरदार) उसके साथ लड़ाई के मैदान में

आये। वह सब बड़ी वीरता से लड़े पर फ़तेहपुर सिकरी की लड़ाई में बाबर ने उनको परास्त कर दिया।

३—बाबर ने दिल्ली में बहुत दिन राज न किया। वह भारत में चार बरस राज कर चुका था जब उसका बेटा हुमायूं जिसे वह बहुत चाहता था बहुत बीमार हो गया। उसका रोग बढ़ता गया और ऐसा जान पड़ता था कि उसका जीना कठिन है। बाबर को अपने प्यारे बेटे की दशा देख कर बड़ा दुःख हुआ। उसने अपने दरबार के धर्मज्ञों से पूछा कि क्या करना चाहिये। एक बोला "आप ईश्वर से दुआ मांगिये और यह कहिये कि मैं तेरे नाम पर मेरे पास जो सब से महंगी वस्तु है जिसे मैं संसार में सब से बढ़ कर समझता हूँ दे दूँगा तो कदाचित् वह आपके बेटे की जान बचा दे।"

४—बाबर बोल उठा "मेरे पास सब से अच्छी वस्तु क्या है?" एक सरदार बोला "सब से महंगी वस्तु वह हीरा है जो आप को आगरे में मिला था। वह कई लाख का है। उस से बढ़ कर और क्या है। उसे ईश्वर के नाम पर दे डालिये। उसको बेच डालिये और जो दाम मिले उसे दीन दुखियों को बाँट दीजिये।"

५—बाबर बोला "नहीं नहीं, इसमें सन्देह नहीं है कि वह हीरा बड़े दाम का है पर मेरे पास एक वस्तु और भी है जो मैं बहुत महंगी समझता हूं। वह मेरी

हुमायूं की बीमारी।

जान है। ईश्वर मेरे बेटे की जान बचा दे तो मैं अपनी जान दे दूँगा।"

६—इतना कह कर बाबर ने नमाज़ पढ़ी और ईश्वर से यह बिनती की कि तू मेरी जान लेकर हुमायूं की जान बचा दे। हुमायूं उस समय पलङ्ग पर बहुत ही बीमार पड़ा था। इस के पीछे बाबर उठा और पलङ्ग की तीन परिक्रमा करके एकाएक बोल उठा, "मैंने ले लिया, मैंने ले लिया" जिस का अभिप्राय यह था कि मैंने अपने बेटे का रोग ले लिया। चित्र में हुमायूं पलङ्ग पर पड़ा है। एक नौकर एक हाथ में जूस का कटोरा लिये है और दूसरे हाथ से चम्मच से उसे पिला रहा है। एक नौकर एक और कटोरा लिये आता है। हकीम उस की नाड़ी देख रहा है। बाबर जाय नमाज़ पर नमाज़ पढ़ रहा है। नीचे चौकी पर दवाइयों की बोतल और कटोरे रखे हैं।

७—उस समय ऐसा जान पड़ा मानों ईश्वर ने उस की विनती मान ली। उसी दिन से हुमायूं अच्छा होने लगा और कुछ दिन में चङ्गा हो गया; बाबर को रोग लग गया और लटते लटते मर गया।

२७—सुजन हुमायूं।

उस का प्राणरक्षक भिश्ती।

१—हुमायूं दूसरा मुग़ल बादशाह था। हुमायूं का अर्थ है भाग्यवान् पर छः मुग़ल बादशाहों में सब से भाग्यहीन यही था। पर यह उसी का दोष था। वह बड़ा वीर था और बड़ा दयालु। पर वह हमेशा आलसी था और विषय भोग में डूबा रहता था। अच्छा भोजन करना मद पीना अफ़ीम खाना उसे अच्छा लगता था।

२—बाबर के चार बेटे थे और वह चारों को प्यार करता था। यह तो तुम पढ़ चुके कि उस ने हुमायूं के लिये अपनी जान दे दी। मरने से पहिले उसने हुमायूं से कहा "हमारे मरने के पीछे अपने भाइयों पर कृपा रखना।" हुमायूं आँखों में आँसू भर लाया और बोला कि "मैं आप की बात कभी न भूलूंगा।" यह बात उस के लिये कुछ कठिन भी न थी क्योंकि वह भी अपने भाइयों को बहुत चाहता था हुमायूं ने अपने मरते बाप से जो प्रतिज्ञा की थी उस पर दृढ़ रहा। उस ने अपने एक एक भाई को एक एक राज दिया और दिल्ली की बादशाहत अपने लिये रखी। अगले पृष्ठ पर जो चित्र है उस में बाबर मर रहा है। उस का बेटा हुमायूं पलङ्ग के नीचे बैठा है। हकीम नाड़ी देख रहा है। एक नौकर जूस का कटोरा लिये खड़ा है पर रोगी के प्राण

बाबर की मृत्यु ।

निकले जा रहे हैं और पी नहीं सकता। आस पास लोग उदास खड़े हैं।

३—थोड़े ही दिन पीछे शेरशाह नामक एक पठान सरदार ने हुमायूं पर चढ़ाई कर दी। हुमायूं उस से लड़ने को पूर्व की ओर चला। शेरशाह पहाड़ को भाग गया और हुमायूं चलता चलता बङ्गाल में पहुंचा और वहाँ विषय भोग में पड़ गया मानो उसे किसी बेरी का डर ही न था।

४—ज्योंही बरसात आई और देश में पानो पानी हो गया शेरशाह पहाड़ पर से उतर आया। अपने दूतों से जान लिया था कि हुमायूं अपना समय नष्ट कर रहा है। उस ने बङ्गाल से जो दिल्ली की सड़क जा रही थी उस पर ऊंची और दृढ़ दीवार बनवा दीं और उन पर सिपाही बैठा दिये। उस ने राह ऐसी बन्द की कि कोई दिल्ली से न बङ्गाल को आ सके न बङ्गाल से दिल्ली जा सके। हुमायूं को न कोई समाचार मिला और न सहायता के लिये सिपाही।

५—तब हुमायूं ने विचारा कि बङ्गाल से चल देना चाहिये पर उस के सिपाहियों घोड़ों और बैलों तक को ज्वर आ गया। जब उस ने देखा कि शेरशाह से लड़ाई में जीत न होगी तो उस ने सन्धि कर ली और कहा कि हम तुम को सारा बङ्गाल देश देते हैं। शेरशाह ने कहा अच्छा तो आप दिल्ली को लौट जाइये।

६—हुमायूं और उस के सिपाही शेरशाह की बातों में

आ गये और दूसरे दिन गङ्गा पार करने की तयारी करने लगे। दिन के थके सिपाहियों ने अपने हथियार उतार दिये और अपने अपने डेरों में सो रहे। पर पिछले पहर अंधेरे में पठान उन पर टूट पड़े और बहुतेरों को काट डाला।

७—हुमायूं अपने सरदारों को लेकर भागा। सब ने यह चाहा कि घोड़ों पर गङ्गा पार करें। पर नदी चढ़ी हुई थी धारा में घोड़े ठहर न सके, हुमायूं पानी में गिर पड़ा और डूबते डूबते बच गया।

८—इसी समय एक भिश्ती अपनी मशक फुलाये उस के सहारे से नदी के पार जा रहा था। उस ने हुमायूं से कहा कि आप मशक पकड़ लीजिये। हुमायूं मशक और भिश्ती के सहारे से नदी पार हो गया। भिश्ती का नाम निज़ाम महम्मद था। हुमायूं ने उस को वचन दिया कि आगरे पहुच जायँ तो तुम को तीन घण्टे के लिये बादशाह बना दूंगे।

६—आगरे पहुँचने से पहिले ही भिश्ती ने हुमायूं से कहा कि आप अपनी बात पूरी कीजिये। हुमायूं ने उसे तीन घण्टे तक सिंहासन पर बैठने की आज्ञा दी। सामने के चित्र में निज़ाम महम्मद सिंहासन पर बैठा है। कहते हैं कि उस ने अपनी पखाल के गोल टुकड़े कटवाये; उन पर अपना नाम छपवाया और उन को सिक्का करके चलाया। उस ने अपने मित्रों और नातेदारों को भी बड़ी बड़ी भटें दिलवाईं।

१०—चित्र में कुछ दूर पर यमुना देख पड़ती है और उस के पार आगरा नगर है। भिश्ती और मुसाहबों के पीछे हुमायूं का डेरा खड़ा है, बाहर भिश्ती का बैल है जिस की पीठ पर पखाल लदी है, सिंहासन की जगह वह कुरसी है जिस पर हुमायूं बाहर जाता था तो बैठा करता था।

हुमायूं के सिंहासन पर भिश्ती।

११—हुमायूं आगरे से दिल्ली चला गया। वहाँ भी शेर शाह अपनी सेना लिये हुए आ पहुँचा और हुमायूं को परास्त करके उसे दिल्ली से निकाल दिया। हुमायूं ने अपने भाइयों से सहायता मांगी पर सहायता तो अलग रही वह हुमायूं से

लड़ बैठे और उस के प्राण लेने पर उतारू हो गये। तब वह ईरान को भाग गया। ईरान के बादशाह ने उस की आव भगत की और उसे सहायता दी। हुमायू ने ईरानी सेना की मदद से काबुल ले लिया और शेरशाह और उस के बेटे के मरने तक उस पर शासन किया। उस के पीछे वह फिर भारत में आया और पन्द्रह बरस पीछे दिल्ली को अपने अधीन कर लिया।

१२—जब वह अपनी स्त्री और थोड़े से मित्रों के साथ पठानों के डर से जो उस के पीछे पड़े थे ईरान भागा जा रहा था तो वहीं सुनसान मैदान में उस के लड़के का जन्म हुआ। मुग़ल बादशाहों की यह रीति थी कि बेटे के जन्म का आनन्द दिखाने के लिये सोना चाँदी हीरा मोती सरदारों को भेंट दिया करते थे।

१३—पर बेचारे हुमायूं के पास उस समय न सोना था न हीरा मोती। उस के खाने का भी ठीक न था पर उस के पास थैली में कस्तूरी का एक टुकड़ा पड़ा हुआ था। उस में बड़ी महक थी। उसने कस्तूरी निकाली और उस में से थोड़ा थोड़ा अपने साथियों को बांट दिया। जब उस की वास चारों ओर फैली तो हुमायूं बोला "मेरा बेटा जब बादशाह हो तो उस का भी यश संसार में ऐसे ही फैले। मैं उस का नाम अकबर रख रहा हूँ जिस का अर्थ बहुत बड़ा है। मुझे आशा है कि यह बहुत बड़ा बादशाह होगा।

२८—पन्ना दाई ।

अपने स्वामी के प्राण बचानेवाली ।

१—राजपूत वीर और उदार होते हैं और राजपूतिनों में भी पुरुषों कीसी वीरता होती है। अब हम तुम को एक राजपूतिन पन्ना दाई की कहानी सुनाते हैं जिस ने अपने बच्चे को मरवा कर अपने स्वामी के प्राण बचाये थे।

२—राजपूताने का एक बड़ा राज मेवाड़ है जिस की राजधानी चित्तौर है। हम लोग चित्तौर के एक राजा प्रसिद्ध राणा सांगा का नाम सुन चुके हैं जो बाबर से लड़ा था। जब वह मारा गया तो उसका बेटा उदयसिंह निरा बच्चा था। वह राज्य करने के योग्य न था इस से मेवाड़ के सामन्तों ने जब तक उदयसिंह सयाना न हो जाय वनवीर को मेवाड़ का हाकिम बना दिया।

३—पहिले तो बनवीर ने अच्छा शासन किया पीछे वह सोचने लगा कि मैं ही मेवाड़ का राजा बना रहूं। ऐसा निश्चय करके वह बच्चे के मारने का उपाय सोचने लगा। उदयसिंह को एक राजपूत स्त्री जिस का नाम पन्ना था दूध पिलाती थी। उदयसिंह ही के बराबर उसका भी एक लड़का था और वह दोनों को बहुत चाहती थी।

४—पन्ना किसी से यह जान गई कि वनवीर राजकुमार को मारना चाहता है। वह बड़ी चौकसी रखती थी और कभी

उसे अकेला न छोड़ती थी। उस ने फाटक पर चौकसी करने के लिये एक बारी बैठा रक्खा था। एक दिन बारी दौड़ा हुआ आया और पन्ना से बोला कि वनवीर हाथ में नंगी तलवार लिये फाटक की ओर लपका आ रहा है।

पन्ना दाई और वनवीर।

५—पन्ना ने झट पट एक टोकरा उठा लिया जिस में फल आये थे। उस ने सोते राजकुमार को उस में लिटा दिया। उसे पत्तों से ढांक दिया और बारी से बोली तुम इसे गढ़ के बाहर पेड़ के नीचे ले जाकर रक्खो, मैं अभी आती हूं।

६—फिर उस ने अपने बच्चे को उठा लिया। राजकुमार का कंठा उस के गले में डाल दिया उसे राजकुमार के पालने में लिटा दिया और अन्तिम बार उस का मुँह चूम कर उस के

पास बैठ गई। वनवीर कमरे में धीरे धीरे घुसा और चारों ओर देखता जाता था। वह समझा कि बच्चा पालने में सो रहा है और उस निर्दयी ने तलवार के एक ही हाथ से उस को मार डाला और बाहर चला गया।

७—पन्ना दुखिया चिल्ला उठी और स्त्रियाँ भी दौड़ आईं पर वनवीर के डरके मारे किसी ने कुछ न कहा। बच्चे की लोथ जला डाली गई।

८—पन्ना चुपके से गढ़ के बाहर पेड़ के तले चली गई और बिश्वासी बारी के साथ रातों रात कमलमेर पहुँची। यह एक छोटा सा राजा था। पन्ना ने कमलमेर के राजा से कहा, "यह राणा सांगा का बेटा है इसे लो इस को पालो पर जब तक यह सयाना न हो जाय इसे कोई जानने न पाये।"

९—पन्ना चित्तौर को लौट गई। जब उदयसिंह बड़ा हुआ तो उस ने यह ब्यौरा कहा। चित्तौर के राजपूतों ने उसे अपना राजा बनाया। उस ने मेवाड़ के राजा वनवीर को निकाल दिया इस का हाल आगे बतायेंगे।

२९—अकबर महान।

१—अकबर १५५६ ई० में बादशाह हुआ। वह मुग़ल बादशाहों में सब से अच्छा था। वह मुसलमान था पर उस की हिन्दू प्रजा उसे बहुत चाहती थी और आज तक

हिन्दू लोग उस को ऐसी प्रशंसा और बड़ाई करते हैं मानो वह हिन्दू राजा था।

२—अकबर का बाप मरा तो वह केवल तेरह ही बरस का था उस की अवस्था ऐसी न थी कि वह शासन करता। इस लिये एक बुढ़ा तुर्की सरदार बैराम खाँ जिस ने हुमायूं की बहिन ब्याही थी और जो बाबर के साथ रहकर जन्म भर उस की ओर से लड़ा था उस का रक्षक और शिक्षक दोनों बनाया गया और पांच वर्ष तक उस ने राज संभाला।

३—अकबर ने लड़कपन ही में अपनी वीरता और उदारता का परिचय दिया। ज्योंही हुमायूं मरा हिमू नाम एक हिन्दू सरदार ने एक सेना इकट्ठा करके अकबर पर चढ़ाई कर दी। पानीपत के खेत में उसी जगह बड़ी लड़ाई हुई जहाँ बाबर ने पठान बादशाह इब्राहीम लोदी को परास्त करके दिल्ली की बादशाही पाई थी। बैराम ने उस की सेना को मार भगाया। हीमू घायल हो गया और पकड़ लिया गया और लोग उस को अकबर के सामने ले गये। बैराम ने बादशाह से कहा कि आप अपनी तलवार से अपने बैरी को मार डालिये क्योंकि वह आपका राज लेना चाहता था। अकबर ने न मारा और बोला, "हम घायल आदमी को कैसे मारें, यह आप मरे के बराबर है।"

४—बैराम ने अपने भतीजे को घोड़े पर सवार होना तीर मारना, बर्छा और तलवार चलाना सिखा दिया।

पढ़ना लिखना वह आपही न जानता था अकबर को क्या सिखाता।

५—अठारह बरस की अवस्था में अकबर पूरे अधिकार से बादशाह हुआ और उस ने पचास बरस तक बादशाही की। उस को मरे आज तीन सौ बरस हुए। भारत के मुसलमान बादशाहों में वह सब से अच्छा और सब से बड़ा था और इसी से उसको महान अकबर कहते हैं।

अकबर के तख्त पर बैठने के समय का राज्य।

६—जब वह सिंहासन पर बैठा तो उस के शासन में केवल दिल्ली और पञ्जाब था जिसपर उस का बाप हुमायूं उसके पहले बादशाही करता था। सामने के नक़शे में तुम देखोगे कि यह राज कितना छोटा था। मरने से दो तीन बरस पहिले वह विन्ध्य पहाड़ के उत्तर-भारत के सारे प्रान्तों का बादशाह या शाहंशाह था। विन्ध्य के दक्षिण बरार और अफ़गानिस्तान भी उस के अधीन थे। दूसरे नक़शे को देखो और तुम समझ जाओगे

मुगल साम्राज्य

अहमदनगर

गोलकुण्डा

कृष्णा नदी

मैसूर

पोलिगार

हिन्द महासागर

कि अकबर ने अपने मरने से पहिले कितनी बड़ी बादशाहत बनाई थी।

७ अकबर बड़ा बुद्धिमान् था और जो काम करता बहुत समझ बूझ कर करता था। उस ने यह देखा कि मेरा अधिकार दृढ़ तभी होगा जब हिन्दू मुझ से प्रीति रखेंगे इस से उस ने हिन्दुओं के साथ बहुत अच्छा बर्ताव किया। वह जैसी कृपा मुसलमानों पर करता था वैसेही अपने राज्य के हिन्दुओं पर। उस ने हिन्दुओं के मन्दिर नहीं गिरवाये न उन की मूर्तियां तोड़ीं और न उन को दुःख दिया। हिन्दू राजा भी होता तो अकबर से बढ़कर क्या कर सकता था।

८ राजपूत अकबर को बहुत चाहते थे। पहिले तो राजपूतों ने यह समझा था कि पठान बादशाहों की तरह अकबर भी उन को दुःख देगा और वह अकबर का कहना न मानते थे। अकबर को उन से लड़ना पड़ा पर उन्हों ने जान लिया कि अकबर बड़ा बली और बड़ा वीर है इस से वह अकबर से डरने लगे और उस से प्रीति भी करने लगे क्योंकि राजपूत बड़े उदार होते हैं और वीरों को अच्छा समझते हैं। अकबर ने पहिले राजपूत राजाओं को परास्त किया पीछे उन को अपना मित्र बना लिया। उस ने राजपूत राजाओं का अधिकार दे दिया कि अपने देश पर राज करें; केवल उस को अपना सम्राट् मानते रहे और जब कभी बैरियों से लड़ने का अवसर आ पड़े तो सेना लेकर उस की

सहायता करें। कभी कभी अकबर हिन्दुओं के कपड़े पहिनता था, माथे में तिलक लगाता था और कानों में बालियाँ पहिनता था। लोग कहते हैं कि वह अपनी हिन्दू रानियों को प्रसन्न करने के लिये ऐसा रूप बदला करता था। उस रूप का एक चित्र भी हम को मिला है और वह यह है।

हिन्दू के वेश में अकबर।

६—अकबर ने कई राजपूत राजकुमारियाँ व्याहीं और उनके बाप और भाइयों को सेना में ऊँचे पद दिये। इस से वह लोग अकबर के नातेदार और मित्र बन गये। अकबर को पहिली हिन्दू स्त्री एक सुन्दर राजकुमारी जीया रानी थी। वह आमेर के राजा बिहारीमल की बेटी थी। आमेर को अब जयपुर कहते हैं। उस का भाई भगवान दास और उस का भतीजा मानसिंह दोनों अकबर के प्रसिद्ध

जीया रानी।

सेनानायक थे, अकबर ने दोनों को बड़े बड़े सूबों का हाकिम बना दिया था।

१०—जीया रानी अकबर के बड़े बेटे सलीम की माँ थी जो पीछे जहाँगीर के नाम से दूसरा मुग़ल बादशाह हुआ। जब वह सयाना हुआ तो अकबर ने उस का विवाह एक राजपूत राजकुमारी से कर दिया जिस का नाम जोधबाई था।

११—अकबर के यहाँ और भी कई हिन्दू नौकर थे। इन में सब से बड़ा राजा टोडरमल था। वह बड़ा गणितज्ञ था और उस के पास सारे राज्य का हिसाब किताब रहता था। उस ने सारा देश नपवा डाला और अनाज की उपज के विचार से आठ प्रकार के खेत बनाये और गांववालों पर मालगुजारी बांध दी।

१२—तुम पढ़ चुके हो कि हिन्दू राजा विक्रम के दरबार में नवरत्न थे। अकबर के यहाँ भी ऐसे ही नवरत्न थे। अगले पृष्ठ पर जो चित्र है उस में अकबर अपने नौ रत्नों के बीच में बैठा दिखाया गया है। यह अकबर के बुढ़ापे का चित्र है। दाहिनी ओर तीन हिन्दू राजा बैठे हैं और अकबर उन्हीं को देख रहा है। इन में दूसरा मानसिंह और तीसरा टोडरमल है। और छः मुसलमान सरदार हैं। अकबर की बाईं ओर फ़ैजी और अबुल फ़ज़ल दोनों भाई हैं जो अकबर के बड़े बिश्वासी मित्र थे। अकबर अबुल फ़ज़ल

अकबर और उसकी सभा के नवरत्न ।

और हिन्दू राजाओं के दाढ़ियाँ नहीं हैं; और मुसलमानों ने दाढ़ियां रखवाई हैं। अकबर के सामने पेचवान रखा है और उसके हाथ में मुँहनाल है।

उदय सिंह।

१३—पर एक राजपूत राजा ऐसा था जिस ने न अकबर से मेल किया न उस से हार मानी। यह मेवाड़ का राजा उदयसिंह था। चित्तौर का नाम तुम सुन चुके हो। उसी के आस पास के देश को मेवाड़ कहते हैं। उदयसिंह मोटा राजा के नाम से भी प्रसिद्ध है। वह वीर राणा साङ्गा का बेटा था जो बाबर से लड़ा था। अकबर ने चढ़ाई कर दी और चित्तौर गढ़ ले लिया। उदयसिंह अरबली की पहाड़ी पर भाग गया और वहीं लड़ते लड़ते मर गया।

राणाप्रताप।

१४—उसके वीर बेटे प्रतापसिंह ने भी लड़ाई बन्द न की। यह पूरा सिपाही था जैसा कि उस के चित्र से जान पड़ता है। उसने यह प्रतिज्ञा की कि जब तक चित्तौर गढ़ न ले लूंगा

चाँदी सोने के बरतनों में खाना न खाऊँगा, न राजपूतों की भाँति दाढ़ी ऐंठूँगा और न पुआल छोड़ दूसरे बिछौने पर सोऊँगा। वह चित्तौर न ले सका। तब उस ने अपने बाप उदयसिंह के नाम पर उदयपुर नगर बसाया। उदयपुर के राणा आज तक प्रतापसिंह की प्रतिज्ञा पालते हैं। वह अपनी दाढ़ी नहीं ऐंठते, बिना पत्ता बिछाये चाँदी सोंने के बरतनों में भोजन नहीं करते और बिना पुआल बिछाये पलङ्ग पर नहीं सोते। हिन्दुस्थान के राजपूतों में इन से शुद्ध दूसरा वंश नहीं माना जाता और इन को अब भी अभिमान है कि हम ने कभी मुसलमान से हार नहीं मानी और न हमारे कुल की स्त्री मुग़ल बादशाह को व्याही गई।

१५—अब हम तुम को अकबर का रूप बताते हैं। वह लम्बा था उस का डील डौल भारी था, उस की छाती चौड़ी और बाहें लम्बी थीं। उस का चेहरा गुलाबी रंग का था पर बुढ़ापे में कुछ कुछ भूरा पड़ गया था। उस का बाप तुर्क था और उस की माँ ईरानी थी जिस से वह आधा तुर्क और आधा ईरानी था। उस के शरीर में बड़ा बल था; उस का लड़कपन काबुल के ठण्डे पहाड़ी देश में बीता था जिस से वह बड़ा बली हो गया था। उस को पैदल चलने और घोड़े पर चढ़ने का बड़ा अभ्यास था। दिन में तीस चालीस मील तक पैदल चला जाता और सौ मील तक दिन भर में घोड़े पर जा सकता था। वह तैरना जानता था और ऊँची से

ऊँची पहाड़ी पर चढ़ जाता था। देश में कोई उस के बराबर गोली नहीं चला सकता था। उस की बन्दूकों और तलवारों के अलग अलग नाम थे और सब को अपना विश्वासी मित्र मानता था। उस ने सब से अच्छी बन्दूक का नाम दुरुस्तअन्दाज रखा था और उस से उस ने दो हज़ार जङ्गली जीव मारे थे।

१६—अकबर ने सिंहासन पर बैठने के बहुत दिन पीछे लिखना पढ़ना सीखा। उस को किताबों से बड़ी प्रीति थी और जब उस के राज्य में शान्ति रहती और उसे समय मिलता तो वह नित्य एक किताब सुना करता। उस के यहाँ हाथ की लिखी किताबों का बहुत अच्छा संग्रह था क्योंकि तब तक छापे का प्रचार न हुआ था।

१७—अकबर को चित्रों में भी बड़ी प्रीति थी। उस के दरबार में १८ प्रसिद्ध चित्रकार थे। वह गाना बजाना भी सुन कर प्रसन्न होता था। उस समय में तानसेन नाम का बड़ा प्रसिद्ध हिन्दू कलावन्त था। वह अकबर को गाना सुनाने को बुलाया जाता था। सामने के चित्र में तानसेन बैठा सितार बजा रहा है और गा रहा है, और अकबर ध्यान लगा कर सुन रहा है ; यह उस समय के बड़े पुराने चित्र की नकल है। यह चित्र जब बना था तो अकबर इतना बुड्ढा न था। जैसा कि नवरत्नों के साथ चित्र खींचते समय था।

१८—अकबर बहुत भोजन न करता था। उस ने मद

अकबर के आगे तानसेन गा रहा है।

कभी पिया हो तो पिया हो पर अफ़ीम न खाता था। अबुलफ़ज़ल ने एक किताब लिखी है जिस में अकबर का सारा हाल लिखा है, क्या करता था, कैसे रहता था, और कैसे हुकूमत करना था। अबुलफ़ज़ल लिखता है, "बादशाह दिन रात में एक बार खाते हैं, थोड़ी भूख रहने पर खाने से हाथ खींच लेते हैं। शोरे से ठण्डा किया हुआ गङ्गा-जल पीते हैं।" रात को छः घण्टे सोता, दिन भर काम किया करता और रात को विद्वानों की एक सभा करता था। वह सब की सुनता और फ़िर अपना कर्त्तव्य निश्चय करता था।

३०—रसिक जहांगीर।

१—अकबर के बेटे सलीम ने सिंहासन पर बैठ कर जहाँगीर (संसार का लेनेवाला) की पदवी धारण की। यह चौथा मुग़ल बादशाह था। उसकी माँ राजपूत राजकुमारी थी इस से यह आधा राजपूत था। पंहिले तो उस का व्याह एक राजपूत कुमारी जोधबाई के साथ हुआ था पीछे उस ने एक ईरानी महिला नूरजहाँ को अपनी मलका बना लिया। नूरजहाँ की गिनती भारत के शासन करनेवाली बहुत बड़ी महारानियों में है।

२—जहाँगीर भी हिन्दुओं पर ऐसी कृपा करता था जैसी अकबर ने की थी और उस का राज भी अच्छा ही

रहा। जब वह तख़्त पर बैठा तो उस ने न्याय की एक ज़ञ्जीर बनवाई। यह ज़ञ्जीर सोने की थी और यह चालीस हाथ लम्बी थी; इस का एक सिरा महल के एक कमरे में था और दूसरा सिरा खिड़की में होकर बाहर लटकता था। इसमें साठ घंटियाँ बंधी थीं। जिस किसी को किसी ने कोई दुख दिया हो या उस के साथ अन्याय किया हो, वह ज़ञ्जीर खींच लेता और घण्टी बजा देता तो बादशाह आ जाते थे।

जहाँगीर।

पर हम ने कभी नहीं सुना कि किसी का बादशाह को बुलाने का साहस हुआ हो।

३—अकबर के राज में तुर्किस्तान में ग़यास बेग नाम एक ईरानी रहता था। उस का बाप एक बड़े प्रान्त का हाकिम था पर उस का सरबस जाता रहा और उस का बेटा ऐसा कङ्गाल हो गया कि उसे अपने और अपनी जवान स्त्री के पेट की रोटियों का भी सहारा न रह गया। पर वह पढ़ लिख सकता था। किसी ने उस से कहा कि हिन्दुस्थान को चले जाओ वहाँ तुम ऐसे लोगों को काम मिल जाता

हैं। ग़यास ने अपनी स्त्री को एक टट्टू पर चढ़ाया और आप पैदल उस के साथ हिन्दुस्थान की ओर चला। घर से निकलते ही एक लड़की पैदा हुई। वह ऐसी सुन्दर थी और उस की मुस्कराहट में ऐसी चमक थी कि उस के बाप ने उस का नाम मिहर (सूर्य) रख दिया।

योध बाई।

४—भारत बहुत दूर था। राह में ठण्डी बयार चलती थी और दर्रे में बरफ़ भरी थी। खाने पीने की जो सामग्री थी सब चुक गई। टट्टू गिर कर मर गया और उस की स्त्री इतनी दुर्बल हो रही थी कि उस के लिये चलना कठिन हो गया था। ग़यास से कैसे हो सकता था कि अपनी स्त्री और बच्चा दोनों को अपनी पीठ पर लाद ले। इस से उस ने मिहर को एक झाड़ी में छिपा दिया। वह यह समझा था कि कोई बटोही उसे उठा लेगा। पर दोनों बहुत दूर न गये थे कि माँ ने जान लिया कि बच्चा छोड़ दिया गया। उस ने वहीं से ग़यास को भेजकर लड़की मंगा ली।

५—ग़यास झाड़ी के पास पहुचा तो देखता क्या है कि एक बड़ा काला साँप फन फैलाये मुँह बाये लड़की को

निगलना ही चाहता है। गयास ने साँप को मार डाला, ईश्वर को धन्यवाद दिया कि भले अवसर पर बच्चे को बचाने के लिये मुझे भेज दिया और बच्चे को उठाकर माँ के पास ले गया। उसी समय ऊँटों पर सवार कुछ लोग उधर से आ निकले। उन्हों ने गयास को खाने को दिया और उसे स्त्री बच्चे समेत हिन्दुस्थान पहुँचा दिया।

६—दिल्ली पहुँचने पर ईरानी को चटपट नौकरी मिल गई। वह बुद्धिमान् मनुष्य था। वह जल्दी जल्दी बढ़ता गया। अन्त में अकबर ने उसे अपने दरबार में एक बड़ा सरदार बना दिया और उसे एतमादुद्दौला (राज का विश्वास पात्र) की पदवी दी। मिहर बढ़ते बढते दिल्ली की सारी स्त्रियों में सुन्दर और मोहनी हो गई।

७—उस समय दरबार में एक बड़ा वीर इरानी जवान था। उसका नाम शेर अफ़गन था क्योंकि उस ने एक शेर को तलवार के एक हाथ से मार था। उस ने मिहर के साथ ब्याह की इच्छा जनाई। मिहर मान गई और उस के बाप ने आज्ञा दे दी। कुछ दिन पीछे अकबर के बड़े बेटे सलीम ने भी उसे देख लिया और उस के बाप से कहला भेजा कि मिहर मुझ को ब्याह दो। उस का बाप बोला कि मैं शेर अफ़गन को वचन दे चुका हूँ, तुम बादशाह के बेटे हो तो क्या मैं अपनी बात न पलटूँगा। मिहर का ब्याह शेर अफ़गन के साथ हो गया और वह बङ्गाल में चली गई।

८—सिंहासन पर बैठते ही सलीम को कोई रोक टोक न रही। उस ने आदमी भेज कर शेर अफ़गन को मरवा डाला और उस की स्त्री को दिल्ली पकड़ मंगाया। मिहर के साथ उस की छोटी लड़की भी थी। जहाँगीर ने मिहर का नाम नूरमहल रख दिया और उस से कहा कि तुम मेरी मलका बन जाओ।

९—स्वामी के मारे जाने पर नूरजहाँ बहुत दुखी थी। बादशाह ने उस के पति को मरवा डाला था इस से वह बादशाह से बहुत रुष्ट थी। उस ने बहुत दिनों तक जहाँगीर से बात तक न की और न उस की ओर ताका। जब छः बरस बीत गये तो उस ने भी समझ लिया कि बहुत दिन सोच किया और जहाँगीर के साथ व्याह करने पर राजी हो गई।

१०—जहाँगीर बहुत प्रसन्न हुआ और उस का नाम बदल कर नूरजहाँ "संसार की ज्योति" रख दिया। दोनों का बड़ी धूमधाम से व्याह हो गया और उसी समय से नूरजहाँ बादशाही करने लगी। जहाँगीर ने उस को पूरा अधिकार दे दिया। वह जानता था कि नूरजहाँ मुझ से अच्छा शासन करेगी। जहाँगीर को खाने को अच्छे भोजन पीने को अच्छे मद की चिन्ता रह गई। वही सब हुकुम देती थी। उस ने अपने बाप और भाई को दरबार में बड़े पद दिये। देखो कि छोटी लड़की जो झाड़ी में छिपा दी गई थी पीछे से एक बड़ी बुद्धिमती मलका हो गई।

नूरजहां बेगम ।

११—सामने के पृष्ठ पर इसी समय के बने हुए एक चित्र की नक़ल है। नूरजहाँ अपने कमरे में बैठी है उस के सिर पर मुकुट और चेहरे पर बुरक़ा है। पीछे एक लौण्डी मोर्छल कर रही है। एक स्त्री उस से मिलने आई है वह उस के आगे बैठी है। सामने एक रण्डी नाच गा रही है और रण्डी के पीछे उस के मीरासीन डफ़ और बासुरी बजा रहे हैं। कुछ लौण्डियाँ थालियों में मिठाई ला रही हैं।

चित्र के ऊपर फ़ारसी अक्षरों में "तस्वीर नूरजहाँ बेगम बेटी ग़यास बेग एतमादुद्दौला" लिखा है।

१२—नूरजहाँ बड़ी चतुर थी और उस के लिये कोई भी काम कठिन न था। उस ने फ़ारसी के सारे काव्य पढ़ डाले थे और आप बहुत अच्छी कविता करती थी। वह हाथी पर चढ़ कर लड़ाई में सेना की कमान भी कर सकती थी और उस ने कई बार अपने पति के साथ शिकार में अपने हाथ से शेर मारे।

१३—यह प्रसिद्ध है कि उस ने सब से पहिले गुलाब का अतर निकाला। उस के हम्मान में गुलाब के फूल भरे रहते थे। एक दिन उस ने देखा कि गुलाबों में से कुछ तेल सा निकल कर पानी के ऊपर तैर रहा है। यह अतर है जिस के बराबर हिन्दुस्थान में कोई सुगन्ध नहीं।

१४—जहाँगीर के दरबार का बहुत सा ब्यौरा हम लोग जानते हैं। वह जो कुछ करता था और जैसे रहता था सब

जहाँगीर और सर टमास रो।

लिखा हुआ है। इङ्गलिस्तान के बादशाह ने जिस का नाम प्रथम जेमूस था जहाँगीर के पास सर टमास रो नाम का एक अङ्गरेज़ी सरदार को इस अभिप्राय से भेजा था कि अङ्गरेज़ी व्यापारियों को हिन्दुस्थान में व्यापार करने की बादशाह से आज्ञा मिल जाय। उस ने अपनी भारत-यात्रा पर एक किताब लिखी है।

१५—वह दिल्ली में तीन बरस रहा और कई बार बादशाह के सलाम को दरबार में गया। दूसरे पृष्ठ पर एक चित्र की नक़ल है जो उसी समय में बनाया गया था। जहाँगीर के सिंहासन के आगे सर टमास रो हिन्दुस्थानी कपड़े पहने पगड़ी बांधे सलाम कर रहा है। नित साँझ को बड़ा भारी भोज होता था। सर टमास रो लिखता है कि बादशाह बहुत सी शराब पी जाता था।

१६—जब उस ने बादशाह से व्यापार की आज्ञा मांगी तो उस से कहा गया कि मलका शासन करती है उस के पास जाओ। यह आज्ञा नूरजहाँ से मिली और तब वह इङ्गलिस्तान को लौट गया।

३१—शाहजहाँ।

ताजमहल का रौज़ा।

१—मुग़ल बादशाहों में सब से बढ़कर राजसी ठाठवाला पांचवां बादशाह था। उस का नाम था शाहजहाँ "संसार

का बादशाह"। उस ने बड़े शहर बसाये और भारत में सब से सुन्दर महल मकबरे और मसजिदें बनवाईं।

शाहजहाँ।

२—सिंहासन पर बैठते ही उस ने अपने सब भाइयों और उन की अनाथ सन्तान को बड़ी निठुराई से मरवा डाला जिस में कोई राज का दावादार न रह जाय। पहिले तो उस ने ऐसी निठुराई की पर पीछे अपने राज्य का प्रबन्ध बहुत अच्छा किया और जहाँगीर से बहुत बढ़कर निकला। वह न जहाँगीर ऐसा आलसी न उतना शराबी था।

३—शाहजहाँ का व्याह मुमताज़ महल नाम की एक ईरानी महिला के साथ हुआ था यह नूरजहाँ की भतीजी थी। मुमताज़ महल अपने पति से बड़ा प्रेम रखती थी। चौदह बरस के सुहाग के पीछे वह बहुत बीमार हो गई। जब उसकी मृत्यु का समय आया तो अपने पति से बोली कि तुम और व्याह न करना

मुमताज़ महल।

ताजबीबी का रौज़ा।

और मेरी समाधि ऐसी बनवाना कि जिस में संसार में मेरा नाम रहे।

४—शाहजहाँ रो रहा था पर उसने यह दोनों बात स्वीकार की और अपने बचन पर अटल रहा। उसने दूसरा व्याह न किया और मुमताज़ महल की क़बर पर ताजमहल बनवाया जो संसार की सारी छत्रियों से बहुमूल्य और सुन्दर है। यह आगरे में यमुना जी के किनारे बना है और देखने में ऐसा जान पड़ता है कि मानो आज ही बन कर तैयार हुआ है। इसके बनवाने में तीस बरस लगे थे और लगभग तीस लाख रुपया ख़र्च हुआ था।

५—शाहजहाँ ने एक बड़ी मसजिद दिल्ली में बनवाई जिस को जामा मसजिद कहते हैं। एक मसजिद आगरे में भी बनवाई जो मोती मसजिद के नाम से प्रसिद्ध है। संसार में कोई पूजा-गृह इसकी सुन्दरता को नहीं पहुंचता।

६—शाहजहाँ का अन्तिम समय बड़े दुख से बीता। उस के एक बेटे औरङ्गज़ेब ने राज छीन लिया और अपने बूढ़े पिता को उस के मरने तक क़ैद रखा।

३२—औरङ्गज़ेब।

मुग़लों की शक्ति का अन्त।

१—छठां मुग़ल सम्राट् औरङ्गज़ेब था। औरङ्गज़ेब शब्द का अर्थ है "सिंहासन की शोभा देनेवाला।" वह अन्तिम

मुग़ल सम्राट् था जिस को वास्तव में कुल शक्ति थी। वह बड़ा प्रबल प्रतापी राजा था और उस ने अकबर की भाँति पचास बरस राज किया। पर अकबर में और उस में बड़ा भेद था। उस की माँ राजपूत राजकुमारी न थी। बरन मुमताज महल थी जिस का हाल हम तुम को अभी बता चुके। वह कट्टर मुसलमान थी और कदाचित् यही कारण है जिस से औरङ्गज़ेब अपने बाप और दादा की भाँति हिन्दुओं पर दया न करता था। उस ने हिन्दुओं और राजपूत राजाओं के साथ ऐसा कड़ा बर्ताव किया कि वह उस से बिगड़ गये और बहुत से हिन्दू राजा स्वतन्त्र बन बैठे।

२—तुम यह पढ़ चुके कि अकबर हिन्दुओं के साथ बड़ी प्रीति करता था। वह बहुत ही अच्छा और बड़ा दयालु राजा था और राजपूत और और हिन्दू जातियाँ उस के राज में बहुत प्रसन्न थीं। अकबर के राज में औरों को बिना दुख दिये जिस का जो जी चाहता था कर सकता था। अकबर ने कभी इस बात का उद्योग न किया कि लोग अपने बाप दादों का धर्म छोड़ कर मुसलमान हो जायँ। अकबर के बेटे जहाँगीर और उस के पोते शाहजहाँ ने भी हिन्दुओं के साथ ऐसा ही बर्ताव किया।

३—पर औरङ्गज़ेब मुसलमानों ही का विश्वास करता था। उस ने अपनी नौकरी से बहुत से हिन्दू छुड़ा दिये। उस ने हिन्दुओं पर एक कर लगा दिया जो मुसलमान धर्म के

अनुसार काफिरों पर लगाना उचित है पर जिसे औरङ्गज़ेब के परदादा अकबर ने बुद्धिमानी से उठा दिया था। उस ने काशी तीर्थ का प्रसिद्ध मन्दिर खुदवा डाला और उस की जगह पर एक मसजिद बनवा दी। इन बातों से हिन्दू बहुत चिढ़ गये। राजपूत राजाओं ने औरङ्गज़ेब का साथ न दिया और एक एक करके अलग हो गये।

औरङ्गज़ेब की वृद्धावस्था।

४—और बातों में औरङ्गज़ेब बड़ा न्यायकारी शासक था। उसे न मद पीने की लत थी और न वह व्यर्थ मनबहलावों में अपना समय गंवाता था। वह वही काम करना चाहता था जिसे वह उचित समझता था और अपने राज का प्रबन्ध अच्छा करता था; अपने निज के कामों में उस ने एक पैसा भी न लगाया और पहिले कुछ दिनों तक उस ने गुलाम वंश के बादशाह नसीरुद्दीन की भाँति टोपियाँ सीकर और कुरान नकल करके अपनी रोटी कमाई। वह बड़ा विद्वान्

था। वह और धर्मवालों पर निठुराई न करता तो उसे भी लोग अकबर की भाँति बहुत मानते और उस का राज छिन्नभिन्न न होता। यह चित्र औरङ्गज़ेब के बुढ़ापे का है। उसकी दाढ़ी सफेद हो गई थी और नव्वे बरस की उमर में उस की कमर झुक गई थी और वह लाठी के सहारे चलता।

५—औरङ्गज़ेब के पिता शाहजहाँ ने उसे एक बड़ी सेना दी थी और इसी सेना से उस ने विन्ध्याचल के दक्षिण बहुत से पठान राज परास्त कर दिये थे।

६—पर दक्षिण देश के पश्चिम का पहाड़ी देश जिस को अब बम्बई कहते हैं उसके हाथ न आया। उस समय में इस देश में सड़कें न थीं और पहाड़ पहाड़ियों के ऊपर घने वन लगे थे। हर पहाड़ी के ऊपर एक गढ़ी रहती थी जिस में एक राजा सामन्त रहता था और वही आस पास के गावों का शासन करता था।

७—इस पहाड़ी देश के रहनेवाले महरठे थे। यह डील के छोटे पर बहुत ही चञ्चल, बड़े वीर परिश्रमी थे और छोटे छोटे घोड़ों पर सवार रहते थे। यह घोड़े भी बड़े परिश्रमी थे और बड़ी बड़ी दूर का धावा मारने पर भी नहीं थकते थे। दक्षिण के मुसलमान बादशाहों की सेना में बहुत से महरठे सिपाही रहते थे। मुसलमानों की दक्षिण में पांच बादशाहतें दो सौ बरस पहिले स्थापित हो चुकी थीं। और दक्षिण और हिन्दुस्थान दोनों पर मुसलमानों का

अधिकार था। मुग़ल सम्राट् ने इन बादशाहों पर चढ़ाई की जिस से वह दिनों दिन बलहीन होते गये और हिन्दू राजाओं को अवसर मिला कि फिर सिर उठायें और देश में राज करें। जब मुसलमान बादशाहतें नष्ट हो गईं तब औरङ्गज़ेब ने जाना कि इन से मेल कर लेते तो अच्छा था क्योंकि ये ही महरठों को दबाये रहते थे और इन्हीं के बलहीन होने से महरठे फिर बली हो गये।

८—महरठे, एक सरदार जिस का नाम शिवाजी था उस को अपना नेता मान कर एक हो गये। अपने शासनकाल के पिछले आधे पचीस बरस तक औरङ्गज़ेब शिवाजी को परास्त करने के लिये दक्षिण में पड़ा रहा। वह नव्वे बरस का होकर अहमदनगर में मर गया, और जैसी उस की इच्छा थी उस की बहुत ही सादी कबर बनाई गई। उस का अन्तिम पत्र जो उस ने अपने एक बेटे को लिखा था अब तक है; उस में लिखा है, "अब मैं बहुत बुड्ढा हो गया। मैं संसार में नंगा आया था अब भी नंगा ही जाऊँगा; केवल पापों का बोझ सिर पर रहेगा; मेरा जीवन अकारण गया। मैं ने जैसा मुझे उचित था अपनी प्रजा का पालन नहीं किया। मैं नहीं जानता ईश्वर मुझे क्या दण्ड देगा। मुझे ईश्वर की दया का भरोसा है पर मेरे कर्म बुरे रहे हैं इसी से मैं डरता हूँ। जो हुआ सो हुआ खुदा हाफ़िज़, खुदा हाफ़िज़, खुदा हाफ़िज़।" *

* ईश्वर तुम्हारी रक्षा करे।

उसके मरने के पीछे महरठे प्रबल होते गये और मुग़लराज का एक एक भाग दबाते गये यहाँ तक कि मुग़ल वंश के नाम मात्र के बादशाहों के पास बहुत थोड़ा ही सा राज रह गया।

९—औरङ्गज़ेब ने मुग़लराज को जितना बढ़ाया उतना कभी न था। पृष्ठ १०६ में जो नक़शा दिया है उस से तुम १५५० ई० में जब अकबर सिंहासन पर बैठा था इस राज का बिस्तार जानोगे।

१०—पचास बरस में अकबर ने इसे बहुत बढ़ा दिया जैसा कि पृष्ठ ११० के नक़शे से प्रगट होगा जिसमें १६०० ई० में इस का विस्तार दिखाया गया है।

११—पृष्ठ १३५ पर जो नक़शा दिया गया है उस से सौ बरस पीछे १७०० ई० में इस का विस्तार जाना जाता है। और उस समय में एक बादशाह इतने बड़े राज का शासन नहीं कर सकता था चाहे वह कितना ही बली क्यों न हो। औरङ्गज़ेब के पीछे जो बादशाह हुए वह सब बलहीन थे। उनके शासन में राज की धज्जियाँ उड़ गईं।

३३—महरठा राजा शिवाजी।

१—शिवाजी का बाप एक महरठा सरदार था। वह घर बहुत कम रहता था। उस ने अपने बेटे को पूना में एक बुड्ढे ब्राह्मण के पास छोड़ दिया था जो कहता था कि पढ़ना

लिखना इस के किस काम आयेगा और इसे घोड़ा चढ़ना, कुश्ती लड़ना, तीर चलाना, कटार और बरछे का काम सिखाता था। वह ब्राह्मण, राम कृष्ण की कथा सुनाया करता और पुराने बीर हिन्दू राजाओं के गीत गाता था। वह शिवाजी से यह भी कहा करता था कि तुम भी पुराने राजाओं की भाँति बीर हो जिसमें तुम्हारा नाम भी संसार में रह जाय।

२—महरठे सरदार कभी कभी पहाड़ियों पर से उतर कर देश में लड़ाई करने जाते थे। शिवाजी भी उन के साथ जाया करता था। अब वह बीस बरस का हो चुका था उस के साथ बहुत से जवान थे जो उसी की भाँति बीर और पराक्रमी थे। अब उस ने जाना कि हम बली हो गये और एक महरठा सरदार से पुरन्दर का गढ़ ले लिया।

३—इस के पीछे वह गढ़ी पर गढ़ी लेता गया। वह दिन दिन बली होता जाता था और उस का यश देश में फैलता रहा। हर बरस वह अपनी सेना देश में ले जाता और जो गाँव राह में पड़ते उन्हें लूटता जाता था। लूटपाट करके फिर वह अपने किसी पहाड़ी गढ़ में घुस जाता और वहाँ वह निःशङ्क हो जाता था।

४—उन दिनों दक्षिण में बीजापुर में पठान बादशाह रहता था। उस ने जो सुना कि शिवाजी ने उस के कुछ गाँव लूटे तो उस ने अपने एक सरदार अफ़ज़ल खाँ को शिवाजी को दमन करने के लिये भेजा।

५—शिवाजी जानता था कि मेरे सिपाही न इतने गिनती में हैं और न ऐसे बली हैं जैसे अफ़गान के पठान बीर हैं और इन के साथ खुले मैदान लड़ाई में कल्याण न होगा। उसने कहला भेजा कि मैं आपसे डरता हूँ, जो आप मुझ से अकेले मिलें तो मैं अधीनता स्वीकार कर लूँ। पठान ने उस की बात मान ली और एक सीपाही साथ लेकर अपने और रक्षकों को छोड़ उन से मिलने को गया।

६—शिवाजी ने अपने गढ़ से पठानों को आते देखा तो उस ने अपनी माँ से कहा कि मुझे आसीस दो कदाचित् मैं फिर तुम्हारा दर्शन न कर सकूँ। उस ने अपने कपड़ों के नीचे लोहे का कबच पहिना और पगड़ी के नीचे लोहे की टोपी रख ली। कपड़े की बाँह में एक टेढ़ी कटार थी जिस को बिछुआ कहते हैं और दहिने हाथ में लोहे का तीक्ष्ण पञ्जा छिपा था जो बाघनख कहलाता है। इस बाघनख में दो छल्ले होते हैं जो हाथ की दो अँगुलियों में पहिन लिये जाते हैं। मुट्ठी बांधने पर ऐसा जान पड़ता है मानो लोहे के दो छल्ले पहने हुए हैं क्योंकि छल्ले ही देख पड़ते हैं।

बाघनख।

७—जब खाँ शिवाजी के पास आया तो प्रत्येक ने एक दूसरे का विश्वास नहीं किया। उन दोनों के दरमियान झगड़ा हुआ। पठान शिवाजी से अधिक बलवान और फुरतीला

शिवाजी अफ़ज़ल को मार रहा है।

था। शिवाजी अपना हाथ खोला और उस के बदन में अपना बाघनख भोंक दिया और बिछुये से मार डाला। इसी समय शिवाजी के सिपाही जो झाड़ियों में छिपे थे मुसलमानों पर टूट पड़े। मुसलमान न जानते थे कि महरठे उनके सिरपर हैं और न लड़ने को तैयार थे, सब भाग खड़े हुए।

८—अब शिवाजी को रोकनेवाला तो कोई था नहीं वह अपने सिपाही लिये देश भर में फिरा। और महरठा सरदारों ने जो सुना कि अफ़ज़ल खाँ मारा गया और उस की सेना भाग गई तो बहुतेरे शिवाजी के साथ हो लिये। शिवाजी ने सारे देश में यह प्रसिद्ध करा दिया कि हम मुसलमानों से हिन्दुओं को बचाने आये हैं। दक्षिण के मुसलमान बादशाह उन दिनों औरङ्गज़ेब से लड़ रहे थे और शिवाजी को दबा न सके। अन्त को बीजापुर के बादशाह ने शिवाजी से सन्धि कर ली और पश्चिम का सारा दक्षिण देश उस के अधीन कर दिया।

९—इस समय औरङ्गज़ेब दिल्ली के सिंहासन पर बैठ चुका था। उस ने जो सुना कि शिवाजी बढ़ता जाता है तो अपने मामा शाइस्ता खाँ को दक्षिण का नायब बना कर और एक बड़ी भारी सेना देकर शिवाजी के दमन को भेज दिया। शाइस्ता खाँ अपनी सेना समेत पूना में आया। शिवाजी जानता था कि ऐसे बली बैरी से खुले खेत में लड़ाई नहीं हो सकती। उस ने साधु के कपड़े पहने पर कपड़ों

के नीचे लोहे का कवच भी छिपा था और बाँह में कटार छिपी थी। वह अपने साथ इसी रूप में बीस वीर लेकर एक बड़ी भारी बरात के साथ पूना में घुस गया।

१०—जब शिवाजी और उसके साथी उस घर के पास पहुंचे जिस में शाइस्ता खाँ ठहरा हुआ था तो अचानक उसमें घुस गये और शाइस्ता खाँ को मार ही डालते जो वह खिड़की की राह कूदकर न भाग जाता। इसपर भी शिवाजी ने जब वह खिड़की की चौखट पकड़े हुए था उसकी उँगलियाँ काट डालीं। पहरे के सिपाही हल्ला सुनकर दौड़े पर महरटे दूसरी खिड़की से कूद कर झट पट भाग गये और भीड़ में मिल गये। शाइस्ता खाँ ऐसा डरा कि वह पूना छोड़ कर भाग गया और शिवाजी फिर देश में लूट मार करने लगा।

शाइस्ता खाँ।

३४—शिवाजी का दरबार में बुलावा।

१—औरङ्गज़ेब को राज करते अब सातवां बरस लग गया। उसके साथ अब भी कुछ राजपूत राजा थे क्योंकि

शिवाजी।

अभी तक उस ने ऐसी निठुराई न की थी जसी वह पीछे करने लगा था। औरङ्गज़ेब का एक लड़का दक्षिण की सेना का नायक था। उस ने अपने बाप से कहला भेजा कि शिवाजी ने सूरत को लूट लिया और गढ़ पर गढ़ लेता चला जा रहा है और देश का राजा बनकर अपने नाम का सिक्का चला रहा है। औरङ्गज़ेब अब तक शिवाजी को तुच्छ समझता रहा और उसे पहाड़ी चूहा कहता था पर अब उस ने जाना कि शिवाजी दबाया न गया तो सारे दक्षिण को अपने अधीन कर लेगा।

२—ऐसा निश्चय करके उस ने जैपुर के राजा जयसिंह को जो एक बहुत बड़ा राजपूत सरदार था शिवाजी को परास्त करने के लिये भेजा। जयसिंह दक्षिण देश को जानता था। उस ने शिवाजी को भगाया और शिवाजी को अपने ही गढ़ में बन्द कर दिया और उस को घेर कर बैठा। जयसिंह ने दूसरा गढ़ भी घेर लिया जिस में शिवाजी की स्त्री और बच्चे भाग कर छिपे थे। जब शिवाजी ने जाना कि मैं बच नहीं सकता और स्त्री और बच्चे भी सङ्कट में हैं तो उस ने कहला भेजा कि जयसिंह अपना वचन दें कि मेरे साथ भलमंसी का बर्ताव होगा तो मैं अधीन हो जाऊँ।

३—जयसिंह ने वचन दिया कि शिवाजी का कुछ न बिगड़ेगा। तब शिवाजी अपने गढ़ से निकल आया और सन्धि कर ली गई। शिवाजी ने बारह गढ़ियाँ अपने पास रख लीं, और सब छोड़ दीं और यह प्रतिज्ञा की कि अपने

बेटे शम्भूजी के साथ औरङ्गज़ेब की सेवा करूँगा और उसके बैरियों से लड़ूँगा। उधर से जयसिंह ने यह प्रतिज्ञा की कि शिवाजी दरबार में चले तो उस की ऐसी ही प्रतिष्ठा होगी जैसी हिन्दू राजा की होती है और उसे बादशाह की सेना में एक बड़ा पद दिया जायगा और उस का बेटा सम्भूजी पञ्चहज़ारी कर दिया जायगा।

४—शिवाजी की सहायता लेकर जयसिंह ने बीजापुर के मुसलमान बादशाह पर चढ़ाई कर दी और उस को परास्त किया। औरङ्गज़ेब ने जब यह समाचार सुना तो ऐसा जान पड़ा कि वह भी प्रसन्न हो गया। उस ने शिवाजी को एक चिट्ठी लिखी और उसे दरबार में बुलाया और कहा कि जो जो प्रतिज्ञायें जयसिंह ने की हैं सब पूरी की जायँगी।

५—उन दिनों औरङ्गज़ेब का दरबार आगरे में था। शिवाजी ५०० सवार और १००० पैदल लेकर आगरे को चल खड़ा हुआ। उस के साथ उसका लड़का शम्भूजी भी था जो नवहो वर्ष का बच्चा था। जयसिंह ने भी अपने बेटे रामसिंह को जो दरबार में था यह लिख भेजा कि हम वचन दे चुके हैं शिवाजी की मान-हानि न होने पाय।

६—पर जब शिवाजी आगरे पहुँचा और बादशाह को ३० हजार रुपयों की नज़र देने गया तब उस का आदर न किया गया। औरङ्गज़ेब यह दिखाना चाहता था कि हम बहुत बड़े हैं और शिवाजी को तुच्छ समझते हैं।

शिवाजी को बादशाही के बड़े बड़े सरदारों में जगह न दी गई। वह छोटे राजाओं के बीच में खड़ा किया गया और उसकी प्रतिष्ठा बहुत छोटे राजा की सी की गई।

७—शिवाजी अपने को किसी राजपूत राजा या मुग़ल सरदार से कम न समझता था। उसकी आँखें क्रोध से लाल हो गईं उसके मुंह से बात न निकलती थी, और वह धरती पर गिर पड़ा। जब वह संभला तो उस ने सब से पुकार के कहा कि मुझे धोखा दिया गया और मैं अपनी ऐसी अप्रतिष्ठा सह नहीं सकता। बादशाह उस को हुक्म दिया कि दरबार से चले जाओ और जब तक न बुलावें तब तक न आना। शिवाजी दरबार से ऐसा ही अकड़ता हुआ चला गया मानो यह न बादशाह को कुछ समझता था न दरबार के सरदारों को।*

८—बादशाह ने यह चरित्र देखा पर कुछ न बोला। जो लोग वहाँ खड़े थे सब महरठा राजा की ढिठाई पर अचरज करने लगे और समझे कि शिवाजी यहीं मार डाला जायगा। उस समय के एक लेखक ने लिखा है कि औरङ्गज़ेब की सुन्दरी कन्या अन्य बेगमों के साथ बरामदे

---

* सबन के ऊपर ही ठाढ़ो रहन जोग जाहि
ताहि खड़ो कियो जाय जारिन के नियरे।
जानि गैरमिसिल गुसीले गुसा धरि मन
कीन्हीं ना सलाम न बचन बोले सियरे॥ भूषण।

में बैठी चिक के आड़ से यह चरित्र देख रही थी। इस कोमलचित शाहज़ादी को शिवाजी की वीरता और उस की ढिठाई ऐसी अच्छी लगी कि उस ने अपने बाप से बिनती की कि शिवाजी के प्राण बचा लिये जायँ और इसी से शिवाजी से उस समय कोई न बोला। इस स्त्री का नाम ज़ेबुन्निसा था।

ज़ेबुन्निसा।

६—ज़ेबुन्निसा बड़ी सुन्दर और बड़ी चतुर थी और औरङ्गज़ेब उसे बहुत मानता था। उस ने फ़ारसी भाषा में एक कविता लिखी है जो अब भी पढ़ी जाती है। उसे अपने बूढ़े बाप के साथ रहने और सेवा करने में बड़ा सुख मिलता था। इस से उस ने अपना व्याह नहीं किया। जब शिवाजी और उस का बेटा दोनों मर गये तब उसी ने उस के पोते साहू को पाला था। साहू औरङ्गज़ेब के पास पकड़ कर लाया गया था।

३५—शिवाजी।

औरङ्गज़ेब के हाथों से उसका छुटकारा।

१—ज्योंही शिवाजी उस घर में घुसा जो उसके रहने के लिये दिया गया था उस पर कड़ा पहरा बैठा दिया गया।

उसके नौकर आ जा सकते थे पर न वह और न उस का बेटा घर से निकल सकता था। दो दिन पीछे रामसिंह उस के पास आया और उस से कहने लगा, 'आप बड़े सङ्कट में पड़ गये हैं; आप सावधान रहिये, मैं भर सक आप की सहायता करूँगा क्योंकि मेरे पिता आप को वचन दे चुके हैं कि आप की कोई हानि न होने पायेगी।' शिवाजी ने अब जाना कि अपने को मुग़ल बादशाह के बस में करके मैं ने बड़ी भूल की। उस ने समझ लिया कि जो मैं निकल न सका तो मेरी यहीं जान जायगी। लड़ाई होने पर उस के पास इतने सिपाही कहाँ थे जो बादशाही सेना से लड़ सकते। अब वह यही विचारने लगा कि किसी उपाय से इस सङ्कट से निकलना चाहिये। उस ने बादशाह को लिख भेजा, कि "हिन्दुस्तान की आबोहवा महरठों का स्वास्थ्य बिगाड़ रही है इस से आज्ञा हो तो अपनी सेना अपने देश को भेज दूँ।

२—बादशाह ने तुरन्त आज्ञा दे दी। उस ने अपने मन में सोचा कि यह महरठा बड़ा उल्लू है जो अपना सिपाही भेज रहा है। अब इस का कोई बचानेवाला न रह जायगा और मैं जो चाहूँगा सो करूँगा। और उन के जाने पर शिवाजी और उस के बेटे पर शाही पहरा ढीला कर दिया गया।

३—शिवाजी तब रोगी बन गया। वह कराहता था

और हाय हाय करता था मानो उसे बड़ी पीड़ा हो रही है और वह पलङ्ग पर पड़ गया। दो तीन दिन पीछे शिवाजी बोला मैं अब अच्छा हूँ पर पलङ्ग पर से उठ नहीं सकता। उस ने कई बड़े बड़े टोकरों में मिठाईयाँ भरी और मक्खी से बचाने के लिये उन्हें कपड़े से ढाँक दिया। शिवाजी के नौकर नित्य दो तीन टोकरे बाहर ले जाते थे और कहते थे कि राजा की आज्ञा से उनके अच्छे होने पर कङ्गालों को बांटने के लिये मिठाइयाँ आ रही हैं।

४—पहरेवालों ने नित्य मिठाईयों के टोकरे देख कर बे रोक-टोक उन को जाने दिया। शिवाजी डीलडौल में छोटे और दुबला पतला आदमी था। वह एक दिन एक टोकरे में बैठ गया और अपने बेटे शम्भूजी को दूसरे टोकरे में बैठा दिया। नौकर दोनों टोकरों को बाहर ले गये और पहरेवालों ने भी उन्हें मिठाई से भरे समझ कर जाने दिया।

५—शिवाजी का एक भक्त नौकर उसी की भाँति छोटा दुबला पतला था। वह उसी पलङ्ग पर लेट गया जिस पर शिवाजी पड़ा था। उसका नाम हीराजी था उसने एक मलमल की चादर ओढ़ ली और ऐसा जान पड़ा कि वह सो रहा है। उस ने शिवाजी की सोने की अंगूठी पहन ली थी और उस हाथ को बाहर निकाल दिया था जिसमें देखनेवाले जानें कि शिवाजी सो रहा हैं।

६—शिवाजी और उसका बेटा टोकरों में बहुत दूर

पहुचा दिये गये। वह आगरा नगर के बाहर एक वन में पहुँचे जहाँ रामसिंह ने उन के लिये घोड़े खड़े कर दिये थे। दोनों बाप बेटे रातों रात चलकर एक दूर के शहर में पहुंचे। यहाँ शिवाजी ने अपनी दाढ़ी मोंछ मुड़ा डाली और अपने और अपने बेटे के चेहरों पर राख मल कर दोनों संन्यासी बन गये। जो सेवक उसके साथ थे उन्हों ने भी वैसा ही किया। उन के पास हीरा मोती और अशर्फियां छड़ियों में भरीं थीं। एक बड़ा हीरा और एक माणिक्य जिन का दाम एक एक लाख रुपया था मोम में लपेट कर शिवाजी अपनी छड़ी में लिये हुए था। एक जगह उसे फ़ौजदार ने पकड़ लिया। शिवाजी ने उसे हीरा और माणिक्य घूस देकर उस से छुटकारा पाया।

७—दूसरे दिन पहरेवालों के पास एक दूत ने आकर कहा कि मैं ने शिवाजी को वन में देखा है। एक पहरेवाला घर के भीतर चला गया और तुरन्त आकर बोला कि तुम झूठ बोलते हो शिवाजी सो रहे हैं। दो तीन घण्टे पीछे एक दूत और आया और बोला कि मैं ने शिवाजी को सड़क पर घोड़े पर सवार जाते देखा है। दूसरा पहरेदार भीतर गया और बड़े ध्यान से देख कर लौट आया और अपने अफ़सर से बोला कि मैं ने शिवाजी का हाथ और उस की अँगूठी बड़े ध्यान से देखी है। हीराजी ने अब समझ लिया कि जाग जाना चाहिये, स्वामी तो बच कर निकल गये। उस ने अपने

कपड़े पहन लिये और पहरेदार से बोला कि मेरे स्वामी का जी अच्छा नहीं है मैं उनके लिये बाज़ार से औषधि लाने जाता हूँ। वह फिर लौट कर न गया। साँझ को तीसरा दूत आया और कहने लगा कि मैं ने शिवाजी को यहाँ से ४० मील पर देखा है। इस पर पहरेवालों का अफ़सर आप भीतर गया कि सोनेवाले को जगा दें। तब उस ने जाना कि शिवाजी निकल गया और उस ने बादशाह से कहला भेजा कि चिड़िया पिंजड़े से उड़ गई।

८—शिवाजी, उस का बेटा और नौकर रातभर झपटे हुए आगे चलते और दिन को सोते थे। अब बनारस पहुँचे तो गङ्गा में नहाने गये। यहाँ उन को कुल-गुरु मिला जो पूना से इतनी दूर की यात्रा करके गङ्गा नहाने आया था। शम्भूजी लड़का था और बहुत थक गया था वह सबका साथ न दे सकता था; इसलिये कुल गुरु को सौंप दिया गया। वह एक गाँव से दूसरे गाँव और एक नगर से दूसरे नगर को चले गये। नित्य अपने कपड़े बदलते थे और वन में छिप रहते थे। उन्हों ने बड़ा फेर खाया और नव महीने में फिर अपने देश में पहुँचे। जब शिवाजी चले थे तो राजसी कपड़े पहने हुए हाथी पर सवार थे और सैकड़ों महरठा सवार उन के आगे पीछे थे। अब लौटे तो उन के शरीर पर वस्त्र न था और राख मली हुई थी। यहाँ वह अपनी माता के चरणों पर गिर पड़े पर उस ने उस को तभी पहचाना जब

वह बोले। तब उन को छाती से लगा लिया। कुछ दिन पीछे शम्भूजी भी कुल-गुरु के साथ आ गया। शिवाजी उस को चार लाख रुपयों की भेंट दी।

९—थोड़े दिन पीछे शिवाजी ने महरठा देश की राजा की पदवी धारण की और उस का राज्याभिषेक हुआ। औरङ्गज़ेब जीता ही था जब वह ५२ बरस की उमर में मर गया। औरङ्गज़ेब उस को कई बरस पहिले घृणा से पहाड़ी चूहा कहा करता था। अब औरङ्गज़ेब ने कहा कि "शिवाजी लड़ाई के गुणों में पक्का और वीर योद्धा था, मैं अपनी सारी शक्ति से उसे अधीन नहीं कर सका।" शिवाजी ने जो गुण सिखाये थे उन्हें महरठा सरदार कभी न भूले। हर साल वह अपनी सेना लूट मार करने ले जाते और कई राजाओं से इन लोगों ने चौथ ली जिसका अर्थ मालगुज़ारी का चौथा भाग है। अन्त को उन्हों ने दिल्ली ले ली और बहुत दिनों तक उन के एक सरदार सधिया ने मुग़ल बादशाह को बन्द रख कर उस के नाम से बादशाही की।

१०—अन्त में महरठा सरदारों ने दक्षिण और हिन्दुस्थान के दक्षिण-पश्चिम में पांच राज्य स्थापित किये। इनमें से तीन अब भी हैं; होलकर जिसकी राजधानी इन्दौर है, सेंधिया जो ग्वालियर में और गायकवाड़ जो गुजरात में शासन करता है। पूना और बरार के दो राज्य नष्ट हो गये।

३६—अङ्गरेजी राज से पहले भारत की दशा।

लूट-मार।

१—औरङ्गज़ेब के मरने के सौ बरस पीछे तक बड़ी भयङ्कर लड़ाइयाँ होती रहीं। कोई ऐसा अच्छा बली राजा या बादशाह न था जो भारत के बहुत से हिस्सों में शान्ति रखता। बहुत से हिन्दू राजा और मुसलमान नबाब थे और सब एक दूसरे से लड़ा करने थे।

२—भारत के उत्तर में निर्दयी अफ़गान और ईरानी सरदार हिन्दुस्थान के मैदानों पर धावा मारते थे, लोगों के प्राण लेते गाँव और नगर जलाते और माल असबाब ढो ढो कर ले जाते थे।

नादिरशाह।

३—इन में सब से भयङ्कर और सब से निठुर एक ईरानी था जिसका नाम नादिरशाह था वह ईरान का बादशाह था। औरङ्गज़ेब के मरने के ३० वर्ष पीछे एक बड़ी सेना लेकर भारत में उतर आया। वह बड़े डील डौल का मनुष्य था। उस के चेहरे का रङ्ग काला, उस की मूँछ घनीं, बोली में बादल की सी गरज और उस की

आँख बिजुली की नाईं चमकती थीं। उस की कमर में कटार कसी रहती थी और वह हाथ में तलवार लिये रहता था। वह और उस के सिपाही दिन भर दिल्ली में मार काट मचाते रहे। वह शाहजहाँ का तख़्त ताऊस और पुराने मुग़ल बादशाहों के मुकुट और रतन सब ईरान को उठा ले गया।

४—दक्षिण और मध्य-भारत में मुसलमान बादशाह हिन्दू राजाओं और सरदारों से लड़ते रहे। लाखों आदमी मारे गये और बहुत सा देश उजाड़ कर दिया गया। सरदारों के दल के दल देश में फिरते थे, अपने घोड़ों के लिये किसानों की खड़ी खेतियाँ काट डालते थे और प्रजा को लूटते मारते थे। इस समय में लोग हर गाँव के आस पास दृढ़ कोट बनाते थे और चारों ओर कांटों की बाड़ लगाते थे जिसमें लुटेरे न घुस आयें।

५—किसान हल जोतने जाते थे तो अपनी तलवार साथ ले जाते थे। जगह जगह ऊँचे मचानों पर रखवारे बैठाये जाते थे जो चारो ओर देखते रहें कि कहीं डाकू तो नहीं आ रहे हैं। हर गांव में एक धौंसा रहता था जिसकी धमक आध कोस तक सुनाई देती थी। जहां डाकू आते दिखाई दिये धौंसा पर चोट पड़ी, और उसे सुनते ही लोग खेतों से भाग कर कोट के भीतर चले जाते थे।

६—राह चलते लुटते थे। बिना सिपाही साथ लिये कोई राह न चलता था। बहुत से इलाके उजाड़ पड़े थे, जो कुछ

सड़कें पहले से बनी थीं उनकी देख भाल न होती थी और यह चौपट हो गईं थीं।

मचान।

७—दक्षिण-भारत में मैसूर के मुसलमान बादशाह अपने निर्दयी सवारों को पूर्व, दक्षिण और पश्चिम लिये फिरते थे।

प्रजा को मारते काटते, उनके गाँव जलाते, और उन का माल उठा ले जाते थे। यह जान पड़ता था कि भारत उजाड़ हो जायगा और इसके प्रान्तों में कोई जीता न बचेगा।

३७—पानीपत की लड़ाई।

अफ़ग़ानों से लड़ने के लिये महरठों को तयारी।

१—पानीपत का बड़ा मैदान दिल्ली से लगभग पचास मील उत्तर की ओर है। यह बड़ी पुरानी सुप्रसिद्ध रणभूमि है।

२—यहाँ हम ऊपर लिख चुके हैं कि काबुल के बादशाह बीर बाबर ने तेरह हज़ार तुर्की सेना लेकर दिल्ली के पठान सम्राट् की भारी सेना को धूल की भाँति बहार डाला था और सन् १५२६ ई० में मुग़ल राज्य स्थापित कर दिया।

३—इस स्थान पर मुग़ल राज्य के तुर्की संरक्षक बैराम ने अकबर के साथ जो उस समय तेरह ही बरस का था हिन्दू सेनापति हेमू के ऊपर विजय पाई और अपने छोटे स्वामी अकबर को दिल्ली के सिंहासन पर बैठा दिया। पानीपत की दूसरी लड़ाई पहली लड़ाई से तीस बरस पीछे १५५६ ई० में हुई थी।

४—और इसी बड़ी रणभूमि पर काबुल के एक दूसरे बादशाह ने लगभग दो सौ वर्ष पीछे हिन्दुओं की एक बड़ी

सेना को मार भगाया और महरठों के बल का जो मुग़लों के पीछे भारत के राजा हो जाते सत्यानाश कर डाला। यह तीसरी लड़ाई सन् १७६१ ई० में हुई थी।

५—औरङ्गज़ेब के मरने के पीछे महरठों का बल बढ़ता गया। शिवाजी के पीछे जो राजा हुए वह उस के बराबर वीर और पराक्रमी न थे। कुछ काल के पीछे उस के बड़े मन्त्रियों ने जो ब्राह्मण थे अपने हाथ में राजा का सारा अधिकार ले लिया और आप राजा बन बैठे। इन मन्त्रियों ने पेशवा अर्थात् नेता की पदवी ली। जब एक पेशवा मर जाता तो उसका लड़का उस पद को पाता था।

६—पेशवा लोग पूना में राज करते थे। इन के सिवा चार और महरठे सेनापति थे, जो कुछ दिनों पीछे राजा हो गये और जिन्हों ने राज्य स्थापित किये। वह सेंधिया, होलकर, गायकवाड़ और भोंसला के नाम से प्रसिद्ध हुए।

७—औरङ्गज़ेब के मरने के बीस बरस पीछे दूसरे पेशवा बाज़ीराव ने देखा कि मुग़ल बादशाही बहुत ही बलहीन हो गई है और उस ने समझ लिया कि जैसे हज़ार बरस पहले बिक्रमादित्य ने शकों को निकाल दिया था वैसे ही अब महरठे मुसलमान बादशाही को नष्ट भ्रष्ट कर सकते हैं। वह कहता था "मुसलमान बादशाहत पुराने पेड़ के सूखे तने सी है। इस की जड़ में कुल्हाड़ी मारो डालियाँ काटने का काम नहीं। डालियाँ आप से आप गिर पड़ेंगी।" उस का

मतलब यह था कि महरठे दिल्ली को अपने अधिकार में कर ले और बादशाह को मार डालें तो सूबे आप से आप उन के हाथ में आ जायंगे और उस को यह उचित जान पड़ा कि मालवा प्रान्त अपने अधिकार में कर लिया जाय जो महरठा देश और दिल्ली के बीच में था। इस प्रान्त के उत्तर का खण्ड सधिया ने ले लिया और उसने ग्वालियर को अपनी राजधानी बनाई। दक्षिण का खण्ड होलकर के पास रहा और उस की राजधानी इन्दौर हुई।

८—इस के पीछे बाजीराव ने कई बरस तक अपनी सेना को क़वायद सिखाने और प्रबल बनाने में बिता दिये। पर वह दिल्ली पर चढ़ाई न कर सका और मर गया। उसका बेटा बालाजीराव उसकी गद्दी पर बैठा।

९—इधर तो महरठे सरदार उस बादशाहत के लेने की तयारी कर रहे थे और उधर एक और शक्तिमान् बादशाह उन के भी आगे बढ़ चला। नादिरशाह के बड़े सेनापतियों में एक अहमदशाह भी था। नादिरशाह के मरने के पीछे अहमदशाह ने काबुल पर अपना अधिकार कर लिया जो इस समय ईरानी बादशाहत के अधीन था और वहीं रहा करता था। वह दुर्रानी वंश का था और अफ़गानिस्तान के दुर्रानी बादशाहों में सब से पहिला वही हुआ। वह नादिरशाह के साथ दिल्ली आया था और उस ने अपनी आँखों देखा था कि मुग़ल बादशाह कैसा शक्तिहीन हो रहा है।

वह हिन्दुस्थान में मारने लूटने और आग लगाने, छः बार आ चुका था। दिल्ली में जो कुछ नादिरशाह से बचा था उसे वह काबुल उठा ले गया पर अपने बेटे को पञ्जाब पर शासन करने को छोड़ गया।

१०—ज्योंही उस की पीठ फिरी एक नये बड़े पठान सरदार ने मुग़ल बादशाह को मार डाला और दिल्ली का हाकिम बन बैठा। शाहज़ादा शाह आलम अवध को भाग गया और उस प्रान्त के नवाब शुजाउद्दौला की शरण में रहा।

११—नये पेशवा बालाजीराव ने अब जान लिया कि वह अवसर आ गया है जो पेशवा बाजीराव ताक रहा था। अब सब सामग्री ठीक है। शिवाजी के समय से अब महरठी सेना बहुत बड़ी और प्रबल हो गई थी। पहले यह सेना सवारों और बल्लम बरदारों की एक भीड़ थी जिनके पास लम्बे लम्बे बरछे रहते थे। उन की झोलियों मे आठ दिन के खाने को चबेना भरा रहता था और वह पचास मील का धावा मारते थे। उन दिनों महरठे कभी कोई लड़ाई नहीं लड़े। वह भारी हथियार से लदी हुई मुग़ल सेना के आस पास घूमा करते थे, खेत काट ले जाते थे जिस में बैरियों को अन्न न मिले, कुओं और तलाबों में बिष डाल देते जिस में मुग़ल सिपाही पानी को तरसें, कोई सिपाही भटक कर निकल आता तो उसे मार डालते, आधी रात को चुपचाप पहुँच जाते और पहरेवालों को मार के हट जाते और जहाँ

तक होता उनको इतना सताते कि वह घबरा कर वहाँ से चले जाते।

१२—अब महरठा सरदारों के पास भारी हथियारों से सजी पलटन तोपें और बन्दूक थीं। उन के पास हाथी थे और जहाँ पर पड़ाव पड़ता ऊँचे ऊँचे डेरे खड़े कर दिये जाते जिनमें रेशमी कपड़े लगे रहते थे। अब वह धीरे धीरे कूंच करते और स्त्रियाँ भी साथ लिये रहते थे। पेशवा के पास दस हज़ार ज़बरदस्त पैदल सिपाही थे जिन के पास अच्छे से अच्छे हथियार थे और जिनको इब्राहिम नामी एक पठान ने पलटन की क़वायद् सिखाई थी। उसने यह गुण फरासीसियों से सीखा था। वह दक्षिण के फ़रासीसी सेनापति की सेना का एक नायक था। इसी से उस ने अपना नाम गारदी या गारद् रख लिया था। उसके पास दो सौ तोपें भी थीं।

१३—पेशवा ने पहला काम यह किया कि होलकर और सेंधिया के दो बेटों की कमान में एक प्रबल सेना इसलिये भेजी कि पञ्जाब से अफ़ग़ानों को निकाल दे। अहमद्शाह तुरन्त काबुल से चला आया; महरठी सेना पर टूट पड़ा और उसे काट डाला। सेंधिया का एक लड़का मारा गया और होलकर अपने देश को भाग गया। शाह दिल्ली पहुँचा पर जब उस ने सुना कि महरठों की बड़ी सेना आगे बढ़ी चली आ रही है तो वह गङ्गा पार आ गया और रुहेलखण्ड की ओर चला; रुहेले मुसलमान थे

और अहमदशाह चाहता था कि हिन्दुओं से लड़ने के लिये उनको भी मिला ले।

१४—पेशवा ने भी सारे हिन्दू राजाओं से सहायता मांगी। कई राजपूत राजा अपनी सेना लेकर आये। भरतपुर का चतुर बूढ़ा राजा सूर्य्यमल भी बीस हजार जाट लिये हुए पहुँच गया; बहुत से पिण्डारे भी आ गये जो हिन्दू भी थे और मुसलमान भी थे और जो जहाँ कहीं लूटने का अवसर मिलता वहीं जाने को तैयार थे।

सूरजमल।

१५—यह सारी सेना एक ब्राह्मण की कमान में थी। इसका नाम शिवदासराव था पर इसे सब भाऊ कहते थे क्योंकि यह पेशवा का भाई था। यह जवान था, वीर था, चतुर था, पर बड़ा अभिमानी था और यह समझता था, कि मैं सेंधिया और होलकर से भी बढ़कर युद्धनीति जानता हूँ। सेंधिया और होलकर दोनों उस से बहुत बड़े थे और कई लड़ाइयाँ लड़ चुके थे। भाऊके साथ पेशवा का बेटा बिश्वासराव भी आया था जो सत्रह ही बरस का निरा लड़का था।

१६—बड़ी सेना दिल्ली पर चढ़ गई। क़िले की रक्षा

करनेवाला तो कोई था नहीं, महरठों ने इस को ले लिया। जब भीतर घुसे तो लूट की चिन्ता हुई पर वहाँ कुछ बचा ही न था क्योंकि अहमद शाह सब उठा ले गया था। एक वस्तु उस ने छोड़ दी थी। यह दरबार के कमरे की छत थी। कदाचित् अहमद ने यह समझा हो कि एक दिन मैं भी हिन्दुस्थान का बादशाह हो जाऊँगा इसी से उस ने उसे नहीं लिया था यह छत चाँदी की थी। महरठों ने इस को तोड़ डाला और गला दिया तो उस में से सत्तर लाख रुपये का माल निकला।

१७—दिल्ली की यात्रा में महरठे सरदारों में कई वार झगड़ा बखेड़ा हो गया। होलकर और सूर्य्यमल ने लड़ाई में अपना जन्म बिता दिया। इन्हों ने जब भाऊ की सेना देखी जिस में कवायद सिखाई हुई पैदल, भारी तोपें और हाथी, रेशमी डेरे और सेनापतियों की स्त्रियाँ और नौकर चाकर थे तो वह बोले, "तुम समझते हो कि हम पठानों से जमकर लड़ाई लड़ सकते हैं। न यह महरठों की पुरानी रीति है और न शिवाजी ने कभी ऐसी लड़ाई लड़ी थी। हमारी जान में सब से अच्छी बात यह है कि भारी तोपें, डेरे, स्त्रियाँ और नौकर चाकर किसी सुरक्षित गढ़ में छोड़ दिये जायँ जिसमें कदाचित् तुम हार जाओ तो तुम को भी शरण मिले। हलके घोड़े और पैदल साथ ले लो, जो जल्दी से इधर उधर भाग सकें और महरठों की पुरानी

रीति से लड़ो। जब तक बरसात न आ जाय वैरी को हलकान करते रहो। वह आप से आप देश छोड़कर भाग

मल्हारराव होलकर।

जायँगे। आमने सामने की जमी लड़ाई में हम लोग हार जायँगे क्योंकि पठान हम से डील डौल में बड़े हैं और बल भी उन में अधिक है।"

१८—पर भाऊ ने किसी की न सुनी। इब्राहिम गार्दी ने

कहा "इस रीति से फ़रासीसी नहीं लड़ते। आप मुझ को मेरे सिखाये हुए पैदल सिपाहियों और भारी तोपों पर छोड़ दीजिये और मैं आप को दिखा दूंगा कि अफ़गान ऐसे मारे जाते हैं।" भाऊ ने उत्तर दिया कि "होलकर गड़ेरिया है और सूर्य्यमल एक छोटा ज़मीन्दार है, राजा नहीं। दोनों बूढ़े और मूर्ख हैं, लड़ाई का ढङ्ग नहीं जानते और अफ़गानों का सामना करने से डरते हैं।" राजपूत और और सरदार जो पास खड़े थे उस समय तो कुछ न बोले पर सभा हो जाने पर आपस में कहने लगे "अच्छा हो जो यह ब्राह्मण भाऊ अफ़गानों को मार खा जाय। तब यह ऐसे योद्धाओं का कहना मानेगा जो इस से बड़े और बुद्धिमान् है।"

१६—इतने में अहमद शाह ने रुहेलों के सरदार नजीबुद्दौला को भी अपनी ओर कर लिया और वह तीस हजार हिन्दुस्थानी पठानों को लेकर पहुंच गया।

२०—शुजाउद्दौला जो अवध का नवाब था अब तक न शाह से मिला था न भाऊ से। दोनों ने उस से सहायता मांगी। शाह मुसलमान था और शुजाउद्दौला भी मुसलमान था। भाऊ हिन्दू था पर भाऊ हिन्दुस्थान का रहनेवाला था, वहाँ नवाब का भी घर था और शाह अफ़गान था। नवाब दुबधे में पड़ गया। उस ने यह निश्चय किया कि उधर ही चलना चाहिये जिधर जीत की आशा हो पर

वह क्या जानता था कि कौन जीतेगा। वह इसी विचार में था कि शाह ने नजीबुद्दौला को उस के पास भेज दिया।

२१—उस समय जो घटना हुई उस का पूरा ब्यौरा लिखा हुआ है। यह ब्यौरा एक दक्षिणी ब्राह्मण ने लिखा था जिसका नाम काशी-राव था और जो शुजा-उद्दौला का नौकर था। वही सब हिसाब किताब लिखता था और उसी ने सब चिट्ठियाँ लिखी थीं जो शुजाउद्दौला की ओर से अहमद शाह और नजीबुद्दौला के पास भेजी गई थीं।

शुजाउद्दौला।

२२—नजीबुद्दौला ने नवाब को यह सलाह दी कि "अहमद शाह आप ही के जाति के हैं और आप ही के धर्म के हैं, हिन्दुस्थान के रहनेवाले नहीं तो क्या हुआ। जो पठान भगा दिये गये तो भाऊ पेशवा के बेटे विश्वास राव को दिल्ली के सिंहासन पर बैठा देगा और हम तुम दोनों की जान बची तो उसके शासन में रहना पड़ेगा।" नवाब ने उत्तर दिया कि "भाऊ सब कुछ कहे पर वह हमारा कट्टर बैरी है

और हमारे प्राणों का गाहक है। उसके वादे सब झूठे हैं हम उस की बातों में नहीं आते। उस के बस चले तो हम तुम दोनों को मार डाले और एक भी मुसलमान न बचे। पर हम उस को यह नहीं दिखाना चाहते कि हम उस का विश्वास नहीं करते उस की चिट्ठियाँ आने दीजिये।"

२३—तब नवाब ने अपनी बेगमों और बच्चों को लखनऊ भेज दिया और आप नजीबुद्दौला के साथ शाह के पास चला गया। शाह ने उस की बड़ी आवभगत की और उस के सेनापति वली खाँ ने नवाब को अपना बेटा बना लिया। नवाब भी समझे कि हम अपने भाई बन्दों में आ गये।

२४—जाट राजा सूर्य्यमल ने सुना कि शुजाउद्दौला शाह से मिल गया तो वह बोल उठा, "यही अन्त का आदि है। अब मैं देख रहा हूँ परिणाम क्या होगा।" अंधेरा होते ही वह अपने सिपाहियों को लेकर अपने देश को लौट गया। भाऊ बोला, "जाने दो, अच्छा हुआ। एक जमीन्दार की सहायता से क्या होता है।

३८—पानीपत की लड़ाई।

भाऊ का फन्दे में फँसना।

१—कातिक का महीना आने वाला था। बरसात बीत चुकी थी। दस दिन का बड़ा त्योहार दशहरा भी आ पहुँचा। सब हिन्दुओं का विश्वास है कि जो काम इस दिन उठाया

जाता है वह सिद्ध हो जाता है। भाऊ भी दिल्ली से निकला और पानीपत के बड़े मैदान की ओर चला। मैदान के पास ही पानीपत का नगर भी है। यहीं पर उस ने डेरा डाल दिया। अपने पड़ाव के चारों ओर उस ने एक बड़ी ६० फुट चौड़ी और १२ फुट गहरी खाई खुदवाई। खाई की मट्टी किनारे डाल कर एक मोर्चा बांध दिया जिस के ऊपर उस ने तोपें रखवा दीं। काशीराव कहता है कि उसके पास ५५००० सवार १५००० पैदल सिपाही इब्राहीम गार्दी की कमान में २०० तोपें और अनगिनत हवाइयाँ थीं। इनके साथ हज़ारों पिण्डारी और लश्करी थे।

२—जब शाह ने सुना कि भाऊ ने दिल्ली से कूच कर दिया तो वह भी रुहेलखण्ड से पश्चिम की ओर चला और यमुना पार कर पानीपत से दस मील पर डेरा डाला। उस ने अपने पड़ाव की चारों ओर लट्ठों और पेड़ों की भीत बनाई जिसे लाम बांधना कहते हैं। उस के साथ नजीबुद्दौला, शुजाउद्दौला और रुहेले सरदारों की जिन में सब से बड़ा रहमत खाँ था सेनायें थीं। सब मिलाकर कुल ८०००० सिपाही थे। जिनमें ४२००० सवार, ३८००० प्यादे और तोपें थीं; और बहुत से सवार भी थे जो देश में इधर उधर घूमते फिरते थे और महरठों के पास रसद न पहुँचने देते थे। शाह का लाल डेरा उस की सेना के आगे पड़ा था जिस के सामने कैसे कसाये घोड़े दिन रात खड़े रहते थे।

दिन भर शाह पड़ाव भर में घूमा करता और देख भाल किया करता और रात भर ५००० अफ़गानी सवार पहरा देते थे। शाह शुजाउद्दौला और और सरदारों से साफ़ कहा करता कि "निश्चिन्त सोओ तुम हमारे मिहमान हो, हम तुम्हारे बचाने का प्रबन्ध करेंगे।

३—तीन महीने तक शाह और भाऊ की सेनायें आमने सामने पड़ी रहीं। नित थोड़े बहुत सिपाहीं दोनों ओर के लड़ते थे और मारे जाते थे। पठान और रुहेले सरदार घबरा गये पर शाह उन को रोके रहा। उस ने कहा "अभी समय नहीं है। अभी चुप बैठे रहो मैं जान बूझ कर ऐसा कर रहा हूँ अन्त में हमारी ही जीत होगी, जल्दी में सब बिगड़ जायगा; महरठे दिन दिन निर्बल होते जाते हैं।"

४—शाह का कहना ठीक था। महरठों की बड़ी सेना को कई अठवारे से खाने को बहुत कम मिला था। अब वह अपने देश दक्षिण में न थी। हिन्दुस्थान में थी। भाऊ को अपने नौकरों चाकरों और लश्करियों को भी खाना देना पड़ता था जो किसी सिपाही से कम न खाते थे। अफ़गानी सवार देश भर में घूमते फिरते थे और महरठों के पास कोई सहायता न पहुँचने देते थे। एक दिन २०० लश्करियों को जो जङ्गल में लकड़ी और घोड़ों के लिये घास लेने गये थे ५००० अफ़गानी सवारों ने काट डाला। एक दिन अफ़गान सिपाही कोई २००० महरठों पर जो दिल्ली से

भाऊ के पास रुपया ला रहे थे और एक एक सिपाही के पास दो दो हज़ार रुपया था टूट पड़े और सब को मार कर रुपया छीन लिया।

५—उधर रुहेलों का देश पूर्व की ओर पास ही था और रुहेले अफ़गानियों के मित्र थे। वह असल में अफ़गानी और तुर्की थे, पर हिन्दुस्थान में बसने से हिन्दुस्थानी भाषा बोल सकते थे। जो रुहेले शाह के साथ थे वह अपने और अफ़गानियों के खाने का सामान अपने देश से लाते थे। जब महरठे शिवाजी के साथ औरङ्गज़ेब की कमान में मुग़लों से लड़ते थे तब वह दक्षिण में अपने ही देश में थे! वह अपने लिये खाना सहज ही पा जाते थे और मुग़लों तक रसद न पहुँचने देते थे। वह अब दक्षिण से दूर हिन्दुस्थान में थे।

६—भाऊ ने अब जाना कि मैं बड़े सङ्कट में हूं। उसने शुजाउद्दौला को फिर लिखा और उस ने उस को एक बड़ी भेंट भेजी और शाह से सन्धि करने का उद्योग करने को कहा। काशीराव ने उसकी पत्री पढ़ कर सुना दी उसमें लिखा था कि मैं सब बात मान जाउंगा जो मुझे अपने देश लौट जाने दें। तब शुजाउद्दौला और काशीराव उस की पत्री शाह के पास ले गये। शाह ने कहा कि मैं यहाँ हिन्दुओं से नजीबुद्दौला और पठानों को बचाने के लिये उन के बुलाने से आया हूँ उन से पूछा जाय कि आप क्या

कहते हैं मैं आप के लिये लड़ता हूँ। शुजाउद्दौला और काशीराव तब नजीबुद्दौला के पास गये और उस को पत्री सुनाई। नवाब ने उस से पूछा "आप क्या कहते हैं क्या हम को सन्धि करनी चाहिये।" रुहेले सरदार ने कहा "नहीं इस समय बैरी दुर्बल और सङ्कट में हैं; वह सब मान जाय और कसम भी खायँ पर कसम भी जंजीर नहीं है, वह बांधती नहीं निरी बातें हैं। आप छोड़ देंगे तो क्या वह अपना वचन रखेगा? क्या आप समझते हैं कि वह जब आपको अपने हाथ में पायेगा तो छोड़ देगा? यह महरठा हमारी बगल का काँटा है, इस को निकाल कर छोड़ना चाहिये।"

७—इस पत्री का कुछ जबाब न भेजा गया। भाऊ ने देखा कि मैं फन्दे में फँस गया और निकाल नहीं सकता। अन्त में उस की सेना के सब सरदार उस के पास आये और उससे बोले कि "हम को दो दिन से कुछ खाना नहीं मिला है और ऐसा ही रहा तो हम लोग सब मर जायँगे, यदि मरना ही है तो हम को लड़ने दीजिये और लड़कर मरने दीजिये।" भाऊ ने भी कहा कि अब लड़ाई के सिवा दूसरा चारा नहीं। जब रात आई अब अनाज जितना बचा था लाया गया और लोगों को दे दिया गया कि वह अन्तिम बार पेट भर खाकर दूसरे दिन लड़ने जायँ पर अनाज बहुत न था और बहुतेरे सिपाहियों को कुछ न मिला।

८—उसी दिन रात को भाऊ ने शुजाउद्दौला को फिर लिखा कि मैं फिर भी आशा रखता हूँ कि आप मेरी सहायता करेंगे। पर यह डूबते के लिये तिनके का आसरा था। काशीराव के पास यह पत्र तीन बजे सबेरे पहुँचा इसमें यह लिखा था "अब कटोरा मुँहा मुह भर चुका और एक बुंद भी ज्यादा नहीं आ सकता जो कुछ हो सकता है जल्दी कीजिये। नहीं तो जवाब दीजिये। अब लिखने या कहने का अवकाश नहीं मिलेगा।"

९—नवाब यह पत्री शाह के पास ले गया। वह जल्दी से उठा और पूछा, क्या समाचार है? नवाब ने कहा समाचार यह है कि काशीराव कहता है कि महरठे हमारे ऊपर चढ़ आये। उसी समय शाह जल्दी से उठ कर घोड़े पर सवार हो मैदान में आया और सेना को तैयार होने का हुक्म दिया। जब मैदान में पहुँचा तो उस ने अपने फ़ारसी हुक्के के लाने का हुक्म दिया और जब तक काशीराव पत्र सुनाता रहा वह हुक्का पीता रहा। वह पढ़ भी नहीं चुका था कि तोपों की बाढ़ सुनाई दी और तड़के के फीके उजाले में महरठे सवार दायें बायें आते दिखाई पड़े। शाह ने तब अपना हुक्का हुक्केवाले को दिया और धीरता से कहा, "तुम्हारे नौकर का समाचार बहुत ठीक है" और वह सेना की ओर ठीक ठाक करने गया।

२६—पानीपत की लड़ाई।

भाऊ की हार।

१—इस समय शाह की सेना तैयार हो गई। पलटनें अपनी अपनी जगह पर खड़ी थीं। सेनापतियों को कई दिन पहले अपना अपना काम बता दिया गया। पृष्ठ १७४ पर लड़ाई का एक नक़शा दिया हुआ है। १०० बरस से अधिक बीते जब यह नक़शा काशीराव ब्राह्मण ने बनवाया था। काशीराव वहीं था और उस ने सारी घटना देखी थी।

२—नक़शे के पश्चिम अफ़ग़ान-सेना पूर्व की ओर मुंह किये खड़ी है। इसके तीन खण्ड हैं, मध्य भाग, दहिना अङ्ग और बायाँ अङ्ग। एक चौथा खण्ड सब के पीछे है और इस खण्ड का नाम कोतल है।

३—दहिने अङ्ग में पठान सरदार रहमत खाँ की कमान में सत्रह हज़ार रुहेले और एक बेग की कमान में ईरानी रिसाला था। मध्य भाग में बीस हज़ार अफ़ग़ान पैदल और सवार वली खाँ की कमान में थे जो शाह का प्रधान सेनापति था। बायें अङ्ग में पहिले शुजाउद्दौला की कमान में चार हज़ार पठान पैदल और सवार थे और उसी पांति में नजीबुद्दौला पन्द्रह हज़ार रुहेले लिये खड़ा था। बाईं ओर कुछ दूर एक पठान सरदार पसन्द खाँ की कमान में पाँच हज़ार सवार थे। यह दूसरी कोतल थी।

४—सेना के आगे ८० भारी तोपें, उनके पीछे दो सौ ज़म्बूर ऊँटों पर बंधी हुईं और सात हज़ार ईरानी पैदल बन्दूकें लिये हुए थे। नीचे प्रसिद्ध तोप ज़मज़मा का चित्र दिया हुआ है। इस भारी तोप को अहमदशाह के प्रसिद्ध

ज़मज़मा तोप।

सेनापति और वज़ीर शाह वली खाँ ने १७६१ ई० में बनवाया था। यही तोप पानीपत की लड़ाई में काम लाई गई और आज कल लाहौर के अजायब घर के आगे एक ऊँचे चौतरे पर रखी है।

५—सारी सेना के पीछे शाह के डेरे थे और उसी के साथ कोतल थी। कोतल में चुने हुए योद्धा २०,००० अफ़गान सरदार कवच पहने हुए थे।

६—अब नक़शे के पूर्व में महरठों की सेना को देखो।

अफ़गानों की भाँति इसके भी तीन खण्ड हैं मध्य भाग, दहिना अङ्ग और बायां अङ्ग। बायां अङ्ग सब से शक्तिमान् था। इसमें १५००० सिपाही अच्छे से अच्छे हथियार बांधे सीखे सिखाये इब्राहीम गार्डी की कमान में थे। यह सब फ़रासीसी युद्धनीति सीखे हुए थे। बाईं ओर बली कुमक थी और दहिनी ओर १०,००० गुजराती लिये हुए गायकवाड़ था।

७—मध्य भाग में महरठी सेना का सब से प्रधान अंग था। ४०,००० सवार भाऊ और विश्वासराव की कमान में थे। दहिनी ओर ५००० सवार लिये होलकर और दस हज़ार सवारों के साथ सेंधिया खड़ा था।

८—आगे महरटों ने तोप सजीं। पर पीछे कोतल न रखी। यह उस की बड़ी भूल थी जैसा आगे हम तुम को बतायेंगे।

९—जो नक़शा पृष्ठ पर दिया हुआ है उसमें सेनानायकों के वह स्थान दिखाये गये हैं जिन स्थानों पर वह सूर्य उदय के समय थे जब लड़ाई होने लगी। थोड़ी देर तक दोनों ओर से गोले बरसाये गये उस के पीछे महरठों ने अफ़गानों पर धावा मार दिया और अफ़गान अपने को बचाने में लग गये महरठों का बायाँ अङ्ग सब से पहले अफ़गानों के दहिने अङ्ग से भिड़ गया। इब्राहीम गार्डी ज्यों ही अफ़ग़ानों के पास पहुंचा उस ने गोलन्दाज़ों और बन्दूक़चियों से गोला गोली

बरसाना बन्द करा दिया और सिखाये सिपाहियों को लेकर सङ्गीनें चढ़ा चढ़ाकर रुहेलों पर टूट पड़ा ; रुहेला सरदार रहमत खाँ और उस के आधे आदमी मारे गये। बहुत से महरठे भी कटे और उन का सेनापति इब्राहीम गार्डी घायल हो गया।

१०—उधर भाऊ और विश्वासराव ने महरठा सवारों को दौड़ा कर अफ़गानी मध्य भाग पर धावा मारा। नक़्शे में जो तीर दिखाये गये हैं उसे हार गये थे। महरठे ज़म्बूरों से लदे हुए ऊँटों की कतार चीरते हुए पहुँचे ईरानी बन्दूकचियों को भगा दिया और वली खाँ की कमान में जो रिसाले थे उन पर टूट पड़े। उनको चाहिये था कि पठानों के ऊपर दौड़ते चले जाते पर उन्हों ने यह भूल की कि खड़े हो गये और पठानों के बचने का आसरा देखने लगे। फिर हर हर महादेव कहते हुए वह पागल की भाँति अपने बैरी पर टूटे और बहुतेरों को काट डाला और बहुतेरों को भगा दिया।

११—हज़ारों घोड़ों के दौड़ने से उस रेतीले मैदान में इतनी धूर उड़ी कि शुजाउद्दौला ने जो अब तक चुपचाप खड़ा था यह भी न जाना कि मेरी दाहिनी ओर क्या हो रहा है और उस ने अपने नौकर काशीराव को देखने के लिये भेजा। काशीराव लिखता है, "मैंने वली ख़ाँ को घबराया हुआ इधर उधर दौड़ता देखा। वह क्रोध और दुख से

पागल हो रहा था और अपने भागते हुए सिपाहियों से पुकार पुकार कहता था "भाइयो! कहाँ भागे जा रहे हो, तुम्हारा देश बहुत दूर है" मुझ को देखते ही वह बोल उठा "मेरे बेटे शुजाउद्दौला से कह दो कि मेरी सहायता को आ जाय नहीं तो हम लोग कहीं के न होंगे।" काशीराव यह सन्देसा पाते ही दौड़ गया पर शुजाउद्दौला अपनी जगह से न टला।

१२—पश्चिम की ओर सेंधिया और होलकर नजीबुद्दौला की ओर बढ़े थे पर उस तक दोनों न पहुँच सके। यह चतुर बूढ़ा योद्धा सवेरे से धीरे धीरे आगे बढ़ रहा था; पहले उस ने अपने बेलदारों को सौ गज़ आगे भेज दिया कि खाई खोद के छाती भर ऊँची भीत बना दें; जब यह बन गई तो नजीबुद्दौला आगे चला आया और जब उसके सिपाही उस मोरचे के पीछे आ गये तो उस ने बेलदारों को ऐसी ही दूसरी खाई खोदने को आगे बढ़ा दिया। काशीराव उस के पास गया तो वह बोला, "मैं जोखम में पड़ूँगा अफ़गानों का देश है वह वहाँ जा सकते हैं मैं भाग कर कहाँ जाऊँगा, मेरा तो घर यहीं है, मैं भूल चूक न करूँगा।" जब सेंधिया और होलकर आगे बढ़ते देख पड़े तब उसने दो दो हज़ार बान एक साथ छोड़वा दिये। उसके सिपाही मोरचों के पीछे खड़े रहे; हवाइयों के छूटने और चिनगारियों की बौछार से महरठों के घोड़े डर गये और न बढ़े।

१३—अब तक महरठे बढ़े चढ़े रहे पर वह छः घण्टे से लड़ रहे थे। लड़ाई से पहले भी वह भूखे थे, थक भी गये थे और भूख प्यास से भी व्याकुल थे। शाह के पास अब भी दो पलटनें ताज़ी बैठी थीं। इनमें उसकी सेना के चुने हुए वीर थे; डील डौल में बड़े लोहे के कवच पहने और बड़े बड़े तुर्की घोड़ों पर सवार थे। उन्हों ने और उन के घोड़ों ने भी सबेरे पेट भर खाना खाया था।

१४—एक बजे शाह को उठने और बिजय पाने का अवसर देख पड़ा। उस ने पहले दो हज़ार सवार दौड़ाये और यह आज्ञा दी कि वली खाँ के पास से जो लोग भागे जा रहे हैं उन को रोको और जो लौट कर लड़ने न आये उन्हें मार दो। इस रीति से उन्हों ने आठ हज़ार आदमी फेरे। इस के पीछे उस ने दहिने अङ्ग में रुहेलों की सहायता के लिये चार हज़ार सवार भेज दिये। फिर उसने दस हज़ार चुने हुए सवार वली खाँ की कमान में करके भाऊ और विश्वासराव के ऊपर धावा मार दिया। मुसलमान दीन दीन चिल्लाते हुए थके हुए महरठों पर झपटे। वह डील-डौल में बड़े और बली थे, बड़े भारी घोड़ों पर सवार थे और महरठों की भाँति थके माँदे न थे।

१५—वली खाँ की राह नक़शे में बुन्दीदार लकीर से दिखाई गई है। सामने से वली खाँ आया। पसन्द खाँ की कमान में बांय अङ्ग में जो पांच हज़ार सवार कोतल खड़े

थे उन्हों ने और नजीब खाँ की रुहेला सेना ने जो मोर्चों के पीछे से निकल आई थके महरठों के दहिने पक्ष को छाप लिया।

१६—साथ ही साथ दो भारी धावे एक आगे से और एक दहिने अङ्ग पर पड़े तो महरठी सेना के छक्के छूट गये। फिर भी एक घण्टे तक बड़ी वीरता से लड़े। विश्वासराव अपने हाथी ही पर चढा चढ़ा मारा गया। भाऊ भाग खड़ा हुआ उस के पीछे उस के सिपाही भी भागे। पर दूर न जा सके। ताजे अफ़ग़ान घोड़ों पर सवार उन के पीछे पड़े। उस दिन तीसरे पहर तक चालीस हज़ार सिपाही काम आये। बेचारे लश्करी और कुछ पैदल पानीपत के नगर के भीतर भाग गये। पठानों ने नगर के चारों ओर कड़ा पहरा बिठला दिया और दूसरे दिन सब को बाहर निकाला। सब को थोड़ा थोड़ा चबेना चबाने को और थोड़ा पानी पीने को दिया गया। मर्द सब काट डाले गये और स्त्रियाँ और बच्चे दासी की भाँति हाँके गये। क्रूर अफ़गानों ने किसी पर दया न की। भाऊ की लोथ खेत में मिली। सेंधिया पकड़ लिया गया और मार डाला गया। इब्राहीम घायल हो गया था पीछे उन्हीं घावों से मर गया। होलकर और गायकवाड़ भाग गये। लोग कहते हैं कि पानीपत के खेत में दो लाख महरठों के प्राण गये।

१७—एक हिन्दू महाजन ने लड़ाई का समाचार एक

चिट्ठी में लिख कर दक्षिण में भेज दिया। यह चिट्ठी पेशवा को दिखाई गई इसमें यह लिखा था, "दो मोती गल गये सत्रह अशर्फ़ियाँ खो गईं चाँदी और तांबे की गिन्ती नहीं हो सकती।"

मोती भाऊ और विश्वासराव थे अशर्फ़ियाँ महरठा सरदार थे और चाँदी और तांबा सिपाही थे।

१८—पेशवाओं ने जो यह सोचा था कि दिल्ली में बैठ कर हिन्दुस्थान का शासन करेंगे, उसका यह परिणाम हुआ। बाजीराव थोड़े ही दिन में मर गया। लोग कहते हैं कि ऐसा कोई महरठा कुल न था जो पानीपत के खेत में अपनी किसी बन्धु के मारे जाने के लिये न रोया हो।

१६—अहमद शाह के पठान हिन्दुस्थान में न ठहरे और वह तुरन्त काबुल लौट गया। दिल्ली से जाने के पहले उसने शाह आलम को तख़्त पर बैठाया और उस के बादशाह होने की डौंड़ी पिटवा दी और नजीबुद्दौला को वज़ीर बना गया।

४०—अङ्गरेज़ों के भारत में आने का कारण।

फ़रान्सीसियों से लड़ाई।

१—अङ्गरेज़ पहले पहल भारत में व्यापार करने आये थे। वह ऐसी चीज मोल लेने आये थे जो विलायत में नहीं

मिलती थीं और ऐसी चीजें बेचने जो यहाँ नहीं होतीं। जैसे चावल, मिर्च, रूई, अद्रक, गरम मसाले, और पोस्ता जिस में से अफ़ीम निकलती है और गन्ना विलायत से ठण्डे देश में नहीं उपजते और उस समय में यहाँ के से अच्छे सूती और रेशमी कपड़े भी विलायत में नहीं बुने जाते थे। इन सब के बदले में वह लोग यहाँ मख़मल, ऊनी कपड़े, तांबे, पारे, लोहे और फ़ौलाद की चीजें लाते थे जो यहाँ नहीं मिलती थी।

एलिज़बेथ।

२—सन् १६०० ई० में आज से ३०० बरस पहले से अङ्गरेज व्यापारियों ने भारत से व्यापार करने का विचार किया। इंगलिस्तान की महारानी एलिज़बेथ ने उनको इस काम के करने की आज्ञा दे दी। उन्हों ने पहले अपने जहाज़ सूरत नगर में जो पश्चिमी घाट पर मुग़लों का बन्दरगाह था भेजे और अपनी मण्डली का ईस्ट इण्डिया कम्पनी नाम रखा। इन सौदागरों को पीछे बहुत से नगर समुद्र-तट पर मिल गये जिन में से मुख्य कलकत्ता, मद्रास और बम्बई थे; उस समय यह नगर छोटे छोटे गाँव थे पर अब

बढ़ते बढ़ते यह भारतवर्ष के सब से बड़े और धनी शहर हो गये हैं।

३—अङ्गरेज़ी ईस्ट इण्डिया कम्पनी को वहाँ के व्यापार से इतना लाभ हुआ कि उन की देखा देखी दूसरी सौदागरों ने कम्पनियाँ खड़ी कीं और भारत से व्यापार करने लगे। सौ बरस बीतने पर यह सब कम्पनियाँ एक में मिल गईं और सन् १७०० ई० में इनका नाम संयुक्त ईस्ट इण्डिया कम्पनी रखा गया। इङ्गलिस्तान के बादशाह ने भारत से व्यापार करने का सारा अधिकार इनको दे दिया।

४—यूरोप की दूसरी जातियों ने भी अपने सौदागर हिन्दुस्थान भेजे। यह जातियाँ पुर्तगाली डच और फ़रान्सीसी थीं। फ़रान्सीसियों का मुख्य नगर मद्रास के दक्षिण पाण्डीचेरी था।

५—एक सौ सत्तर बरस हुए यूरोप में फ़रान्सीसियों और अङ्गरेज़ों में लड़ाई छिड़ गई। इस कारण जहाँ कहीं अङ्गरेज़ और फ़रान्सीसी थे आपस में लड़ने लगे। यह एक दूसरे को भारतवर्ष से निकाल देना चाहते थे। यह लड़ाई बीस बरस तक होती रही; अन्त में अङ्गरेज़ों की जीत हुई; फ़रान्सीसियों का प्रधान अफ़सर डूपले था और अङ्गरेज़ों के लारेन्स और क्लाइव थे।

४१—राबर्ट क्लाइव ।

(अङ्गरेज़ी राज का स्थापन करनेवाला)

१—राबर्ट क्लाइव एक बहुत बड़ा अङ्गरेज़ हो गया है। उसके घरवाले उसे बाब अथवा बाबी कहकर पुकारा करते थे। जब वह छोटा था तो वह और लड़कों से लड़ा करता था, और इस कारण उसका बाप उस से तङ्ग रहता था। बालक क्लाइव स्कूल में भरती कर दिया गया। पर वहाँ भी वह लड़ा ही करता था; छोटे लड़कों के एक झुण्ड का सरदार बन कर वह गांव के दूकानदारों से लड़ता और उनकी खिड़कियाँ तोड़ा करता था जब तक वह उसे कुछ दे न देते थे। मुदर्रिस उससे डरते थे पर लड़के उसे प्यार करते थे क्योंकि वह उन की दुष्टता में उन का साथ देता था। पढ़ना लिखना उस ने न सीखा।

राबर्ट क्लाइव ।

२—एक बार जब वह स्कूल में था उस ने एक दूकान घेर ली और एक नाली में बैठ गया जिस से उस का पानी उस के बदन से रुक कर दूकान में भर जाय। स्कूल के

मुदर्रिस यही कहते थे कि यह किसी अर्थ का न होगा। ऐसा अभागा लड़का कभी स्कूल में नहीं आया। निदान उस ने स्कूल छोड़ा और घर चला आया। उसका बाप जो एक अच्छे कुल का था बहुत ऋणी था। यही कहा करता था कि मैं इस बाबी को क्या करूँ अच्छा होता जो इसका नाम बुबी होता क्योंकि यह निरा गदहा है और इसका मस्तिष्क बुद्धि से रहित है। उस के एक मित्र ने सलाह दिया कि इस को हिन्दुस्थान भेज दो और अपना पीछा छुड़ाओ। उस के बाप ने यह सलाह अच्छा समझा और लड़के से छुटकारा पाने के निमित्त उसे ईस्ट इण्डिया कम्पनी में बाबू की जगह दिलवा दी और वह हिन्दुस्थान भेज दिया गया।

३—उन दिनों जहाज़ से यहाँ आने में साल भर लगता था क्योंकि तब तेज चलनेवाले स्टीमर नहीं थे। बारह महीने में राबर्ट क्लाइव मद्रास पहुँचा। उस समय वह उन्नीस बरस का था और उस की कोई पूछ आछ करनेवाला नहीं था। कम्पनी के दफ़्तर में उस को मुहर्रिर की जगह मिल गई। वहाँ पर वह दिन भर बैठे बैठे चिट्ठियाँ लिखा करता था। आये हुए माल की फ़िहरिस्तें तैयार करता। भला यह काम उसको कब भाता। मद्रास की गर्मी और बैठे बैठे काम करने से वह बीमार पड़ गया; उस ने घर को लिखा कि जब से मैंने विलायत छोड़ा एक दिन भी सुख से नहीं बिताया। वह इतना घबरा गया था कि उसको जीने की

इच्छा न थी। एक दिन उस का मित्र उस को देखने आया। उस ने देखा कि एक पिस्तौल मेज़ पर रखा है; क्लाइव ने उस से कहा कि यह पिस्तौल खिड़की की ओर करके छोड़ दो। उस के मित्र ने वह पिस्तौल दाग दिया। पिस्तौल के दगते ही क्लाइव उछल पड़ा और बोला मैं समझता हूँ कि मेरे भाग्य अच्छे हैं मैंने दो बार पिस्तौल अपने सिर पर सीधा किया पर दोनों बार न दगा।

४—क्लाइव अपनी नौकरी से बहुत चिढ़ता था। अभिमानी होने के कारण वह अपने अफ़सरों से भी मिलना ही न चाहता था। एक बार उस ने गवरनर के सेक्रेटरी के साथ अनुचित बर्त्ताव किया। गवरनर ने उसे हुक्म दिया कि सेक्रेटरी से क्षमा मांगो। क्लाइव जानता था कि गवरनर की आज्ञा माननी ही पड़ेगी। उसका जी तो नहीं चाहता था पर वह सेक्रेटरी के पास गया और कहा कि मैं अपनी गुस्ताख़ी की क्षमा चाहता हूँ। सेक्रेटरी जो इस जवान मुहर्रिर पर कड़ाई नहीं करना चाहता था बोला, 'बहुत अच्छा," तुम इस बात को भूल जाओ आज साँझ को खाना हमारे ही साथ खाना। क्लाइव ने उत्तर दिया, "नहीं साहब, यह मुझ से नहीं होगा, गवरनर ने मुझे आप के साथ खाना खाने की आज्ञा नहीं दी है।"

५—कौन जानता था कि यह अभिमानी नटखट लड़का दस ही बरस में अपने समय का सब से बड़ा आदमी

हो जायगा ; बादशाहों को जीतेगा और ऐसा नाम पैदा करेगा जो कभी भूला नहीं जा सकता ।

६—कुछ ही महीने बीतने पर फ़रान्सीसियों से लड़ाई छिड़ गई। इस समाचार ने क्लाइव में नई जान डाल दी। वह तुरन्त गवर्नर के पास पहुँचा और उस ने सेना में भरती होने की आज्ञा मांगी। गवर्नर जान ही चुका था कि यह लड़का दफ़्तर के काम का नहीं है। इस से उस ने क्लाइव को सेना का एक छोटा अफ़सर बना दिया। निदान क्लाइव का मनमाना हो गया क्योंकि वह जन्म का लड़ाका था या यों कहना चाहिये कि वह क्षत्रिय था जिसका काम लड़ने और हुक्म करने का है न कि वैश्य जिस का काम व्योपार करने का है। यह नियम है कि हर एक अफ़सर को लड़ाई का काम सीखना पड़ता है उसको लड़ना सिपाहियों को क़वायद कराना और उन को सेना पर कमान करने के हुनर सिखाये जाते हैं, पर क्लाइव को यह सब जानने की आवश्यकता नहीं थी। उस ने शीघ्र दिखा दिया कि मैं कितनी उत्तमता से सिपाहियों की अफ़सरी कर सकता हूँ। वह शङ्कट को हँसी में उड़ाता था और डर का तो नाम ही नहीं जानता था। देशी सिपाही उसे बहुत चाहते थे और उसकी अफ़सरी में हर जगह जाने को तैयार थे ; वह उसको साबितजङ्ग कहते थे यानी 'वह पुरुष जो लड़ाई में धीर रहे।

७—सेना में भर्ती होने के थोड़े ही दिन पीछे वह एक बार कुछ छोटे अफ़सरों के साथ तास खेल रहा था। वह लोग रुपयों की बाज़ी लगाते थे। क्लाइव हार गया पर उस ने जान लिया कि एक अफ़सर बेईमानी करता था। वह बोला कि मैं बेईमान आदमी को रुपया नहीं दूंगा। उन दिनों अगर कोई सभ्य पुरुष किसी दूसरे को बेईमान या झूठा कहता तो उस से लड़ना भी पड़ता था। जो वह न लड़े तो लोग उसे कायर कहते थे। ऐसे दो आदमियों की लड़ाई को डुयेल कहते थे। छोटे अफ़सर ने चटपट पुकार कर क्लाइव से कहा कि "हमारा तुम्हारा डुयेल तमंचों से होगा।" वह दोनों पन्द्रह पग की दूरी पर खड़े हुए। पहला फ़ायर क्लाइव को करना था। उस ने तमंचा छोड़ा। निशाना बहक गया। अब दूसरे अफ़सर की बारी आई। वह क्लाइव के पास तक चला गया और उसके सिर पर तमंचा ठोंक कर बोला, "जो कुछ तुम रुपया हारे हो अभी रख दो और मुझे बेईमान बनाने की क्षमा मांगो नहीं तो मैं तमंचा छोड़ता हूं।" क्लाइव ने कहा, "दागो, मैंने तुम्हें पहले बेईमान कहा था और अब भी बेईमान कहता हूं।" अफ़सर ने तमंचा नहीं छोड़ा और यह कह कर कि क्लाइव पागल है तमंचा फेंक दिया।

८—फ़रान्सीसी सरदार डूपले जो बहुत दिनों तक हिन्दुस्थान में रह चुका था बड़ा चालाक आदमी था। वह

चाहता था कि अङ्गरेज़ सौदागरों को हिन्दुस्थान से भगा दो जिसमें यहाँ का सारा व्यापार फ़रान्सीसियों ही के हाथ रहे। उसके यहाँ चार हज़ार देशी सिपाही थे जो सीपाय कहलाते थे और जो फ़रान्सीसी अफ़सरों की कमान में रह कर लड़ना सीख चुके थे।

६—पहले फ़रान्सीसी अङ्गरेज़ों से बलवान थे। डूपले ने मद्रास छीन लिया पर कुछ ही दिनों पीछे मेजर लारेन्स जो एक बहादुर अङ्गरेज़ अफ़सर था कुछ सेना ले कर विलायत से आया और उस ने डूपले को मद्रास से भगा दिया। उसी समय यूरोप में अङ्गरेज़ और फ़रान्सीसियों में सन्धि हो गई और फिर अङ्गरेज़ और फ़रान्सीसी हिन्दुस्थान में खुल्लम खुल्ला न लड़ सके।

डूपले।

४२—अरकाट का प्रसिद्ध घेरा।

१—फ़रान्सीसी अङ्गरेज़ों से खुले खुले न लड़ सकते थे। पर डूपले ने अङ्गरेज़ों के निकाल बाहर करने का विचार अपने मन से न हटाया। वह अब भी अपनी सेना इस लिये रखता कि कदाचित् उसे कभी अङ्गरेज़ों से भिड़ जाने का

अवसर मिल जाय और सिपाहियों के वेतन के निमित्त उस ने यह उपाय सोचा कि उनको कभी कभी वहाँ के देशी सरदारों को किराये पर दे दिया जाय।

२—इस समय दक्षिण भारत में दो मुसलमान सरदार थे और वह दोनों अपने को नवाब और करनाटक का हाकिम बतलाते थे। उनमें से एक का नाम चन्दा साहब था और दूसरे का महम्मद अली। महम्मद अली करनाटक में कुछ दिनों से राज करता था और चन्दा साहब उसका राज छीनना चाहता था। चन्दा साहब का प्रधान नगर अरकाट था और महम्मद अली का त्रिचनापल्ली।

मेजर लारेन्स और महम्मद अली।

डूपले ने अपनी सेना चन्दा साहब को किराये पर दी और चन्दा साहब ने उसकी सहायता से महम्मद अली को भगा दिया और उस को त्रिचनापल्ली में घेर लिया। महम्मद अली ने देखा कि बैरी का पल्ला बहुत भारी है और उसने मद्रास के अङ्गरेज़ों से सहायता मांगी।

३—मद्रास का गवर्नर भी कुछ सेना रखता था क्योंकि

वह जानता था कि फ़रान्सीसी अवसर पाते ही भिड़ पड़ेंगे। सिपाहियों का वेतन भी उस को कहीं न कहीं से देना पड़ता क्योंकि ईस्ट इण्डिया कम्पनी के व्यापार से जो लाभ होता था वह इतना न था कि अङ्गरेज़ सौदागरों में बाँटा भी जाय और सेना का वेतन भी दिया जाय। उस समय अङ्गरेज़ों की कोई ज़मीन्दारी नहीं थी, जिस से उन्हें कोई कर अथवा मालगुज़ारी मिलती। मद्रास का नगर और उस का कोट ही उन की कुल जायदाद थी। इस कारण गवरनर को वही करना पड़ता जो डूपले ने किया था और उस ने भी अपनी सेना को किराये पर देना स्वीकार किया।

४—[illegible] ने तुरन्त थोड़ी सी सेना महम्मद अली की सहायता को भेजी। इस सेना का अफ़सर क्लाइव था। यह बहादुर लड़ता भिड़ता त्रिचनापल्ली के भीतर घुस गया और फिर बाहर निकल आया। इस वीरता के बदले में उस को कप्तानी का पद दिया गया। उस ने अङ्गरेज़ गवरनर से कहा "महम्मद अली दो चार दिन से अधिक अब नहीं ठहर सकता। और मेरी समझ में इस से बढ़ कर और कोई उपाय नहीं कि अरकाट जो चन्दा साहब का प्रधान नगर है छीन लिया जाय और वह अपने नगर के छिन जाने का समाचार सुन कर ज़रूर त्रिचनापल्ली का घेरा तोड़ देगा।"

५—अङ्गरेज़ गवरनर ने ऐसा ही किया। उस समय वह केवल पांच सौ सिपाही दे सकता था, जिन में दो सौ

अङ्गरेज़ और तीन सौ देशी सिपाही थे और यह सब ऐसे थे जिन्हों ने कभी लड़ाई न देखी थी। पर कप्तान क्लाइव को

चन्दा साहब।

वही बहुत थे। उस को अरकाट पहुँचने में छः दिन लगे। यह स्थान मद्रास से पछत्तर मील की दूरी पर था। उस के सिपाही क़वायद अच्छी तरह नहीं जानते थे इस

लिये यह उनसे नित क़वायद करता था। जब अरकाट थोड़ी ही दूर पर रह गया तो बड़ी आंधी आई, बिजली चमकी, बादल गरजे पर क्लाइव और उसके आदमी बड़ी सावधानी से बढ़े जाते थे मानों आकाश निर्मल था। अरकाट के सरदार ने यह जानने के लिये, कौन आदमी आ रहे हैं कुछ चर भेजे। वह लोग भागते हुए उसके पास पहुंचे और बोले कि "यह असुरों का झुण्ड मालूम होता है जिस पर आंधी पानी का भी असर नहीं होता।"

६—यह समाचार सुन कर सरदार घबरा गया। एक फाटक से क्लाइव के सिपाही अरकाट के भीतर आते थे और दूसरे से चन्दा साहब के सिपाही भागे जाते थे। क्लाइव ने नगर निवासियों के साथ बहुत अच्छा बरताव किया। उनसे कोई चीज़ नहीं छीनी; बरन जो कुछ उस के सिपाहियों ने उन से मोल लिया उस का पूरा दाम दिया। जब उन लोगों ने देखा कि क्लाइव उन पर कैसी कृपा करता है तो उनसे जहाँ तक हो सका उस की सहायता की और क़िले की दीवारें जो बहुत जगह पर टूट गई थीं मरम्मत करा दी।

७—ज्योंही चन्दा साहब ने सुना कि अरकाट ले लिया गया, उस ने तुरन्त दस हज़ार आदमी अपने बेटे रज़ा साहब के साथ अरकाट विजय करने को भेज दिये। रज़ा साहब के साथ डेढ सौ फ़रान्सीसी सिपाही भी थे। दो महीने तक चन्दा साहब अपना सिर मारता रहा पर उस से क़िला न

सर हुआ। जब कभी वह चढ़ाई करता क्लाइव और उसके सिपाही उसे मार भागते। क्लाइव के आधे सिपाही काम आ चुके थे और उन के पास खाने को भी कुछ न था। पर किसी को भी हार माननी स्वीकार न थी; क्लाइव ही का तेज हर एक सिपाहियों में भरा था। देशी सिपाही वैसे ही बहादुरी से लड़ते थे जैसे अङ्गरेज़ सिपाही। जब खाने का बहुत थोड़ा सामान रह गया तो देशी सिपाहियों ने कहा कि "पका हुआ चावल साहब लोगों को दे दिया जाया करे और उसका मांड़ हम लोगों को, हम लोग इसी पर निर्बाह कर लेंगे।

८—निदान गवरनर ने कुछ और आदमी क्लाइव की सहायता को भेजे। ज्यों ही रज़ा साहब ने उन्हें आते देखा उस ने क़िले पर धावा कर दिया। जिस में उस के चार सौ आदमी काम आये और भाग खड़ा हुआ। पर क्लाइव ने उस का पीछा न छोड़ा। अन्त में वह क्लाइव से इतना डर गया कि उस का सामना करना तो दूर रहा उस के आने का समाचार पाते ही कूच बोल देता था।

९—मेजर लारेन्स और क्लाइव तब त्रिचनापल्ली को रवाना हुए और घोर संग्राम के पीछे फरान्सीसियों को भगा दिया। उन्हों ने महम्मद अली को करनाटक के सिंहासन पर बैठाया। चन्दा साहब तानजोर भाग गया वहाँ के राजा ने उसको मरवा डाला।

१०—यह १७५२ ई० का अरकाट का घेरा बहुत प्रसिद्ध है। कारण यह कि इसी में अङ्गरेज़ों की हिन्दुस्थान में पहली जीत हुई। इस ने भारतवासियों को दिखा दिया कि अङ्गरेज़ कैसी बहादुरी से लड़ते हैं; इस ने यह भी दिखा दिया कि हिन्दुस्थानी सिपाही जो उन को अच्छे हथियार दिये जायं और चतुर अफ़सरों की कमान में रखे जायं तो कैसा पराक्रम दिखा सकते हैं। यहीं से फरान्सीसियों की काया पलट हुई। अङ्गरेज़ ज़ोर पकड़ते गये और फ़रान्सीसी निर्बल होते गये यहाँ तक कि वह कुछ भी न रह गये।

११—कप्तान क्लाइव इङ्गलिस्तान लौट गया। वहाँ पहुँचते ही उस ने अपने बाप का सारा ऋण चुका दिया। अब तो बूढ़े बाप को उस का बेटा ही सब कुछ था। वह कहा करता था कि हमारा बूबो तो बड़ा समझदार निकला। इङ्गलिस्तान के बादशाह ने उसे फ़ौज का करनल बना दिया और ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने उस को ५०० पाउण्ड दाम की एक तलवार भेंट दी। पर उस ने यह तलवार न ग्रहण की जब तक कि उन्हों ने वैसी ही एक दूसरी तलवार मेजर लारेन्स को न दी। क्लाइव ने कहा "वह मेरा सरदार है मैं उस की आधीनता में लड़ा हूं" अपने काम में वह मुझ से घट कर नहीं है। इस कारण उसे भी वही पुरस्कार मिलना चाहिये।" इसके पीछे क्लाइव बहुत प्रसिद्ध हुआ और अरकाट का वीर कहलाया जाने लगा।

४३—कलकत्ते की काल कोठरी।

बङ्गाल के नवाब की अङ्गरेज़ों पर चढ़ाई।

१—अरकाट के प्रसिद्ध घेरे के कुछ ही समय पीछे बङ्गाल में जो अब भी नाम मात्र को मुग़ल राज का एक भाग कहलाता था एक नव युवक शाहज़ादा सिराजुदौला तख़्त पर बैठा। सिराजुदौला का अर्थ हिन्दी में राज का दीपक है। वह नवाब कहलाता था। वह पचीस बरस का था। उस का पालन पोषण बहुत बुरी तरह हुआ था और जो कुछ मांगता था उसकी माँ उस को देती थी। वह निर्बल; क्रूर, मूर्ख और हठी था और अपने महल के बाहर की कोई बात न जानता था। उस ने कभी सुना था कि कलकत्ता एक धनी शहर है। इस कारण उस की इच्छा हुई कि वहाँ लूट मार करे।

सिराजुदौला।

२—सिंहासन पर बैठते ही उस ने अङ्गरेज़ों को आज्ञा दी कि अपने क़िले की दीवारें ढाह दो; जब उन्हों ने न माना तो उस ने पचास हज़ार आदमी लेकर कलकत्ते पर चढ़ाई कर दी। कलकत्ते में केवल १७० अङ्गरेज़ सिपाही थे और उनके यहाँ कोई

क्लाइव ऐसा बहादुर अफ़सर न था। उन्हों ने विचार किया कि हम इतनी बड़ी सेना का सामना नहीं कर सकते यह सोच कर अपने बाल बच्चों को जहाज़ पर भेज दिया और क़िला नवाब को इस शर्त पर सौंप दिया कि उन के प्राण बचा दिये जायं।

३—सिराजुद्दौला जब सो गया तो उस के सिपाहियों ने अङ्गरेज़ कैदियों को जो गिनती में १४६ थे एक छोटी सी कोठरी में बन्द कर दिया। यह कोठरी एक ही आदमी के बन्द करने को बनाई गई थी। वह इतनी गर्म और अंधेरी थी कि उस को लोग काल कोठरी कहते थे। यहाँ वह लोग रात भर रखे गये। उन्हों ने क्रूर सिपाहियों की बहुत कुछ बिनती की हमें बाहर कर दो पर सिपाहियों ने कुछ भी न सुना। और वह एक एक करके गिरते गये और मर गये। सबेरे जब किवाड़ खुले तो उसमें से केवल २३ जीते निकले।

४—जब यह दुख का समाचार मद्रास पहुँचा तो अङ्गरेज़ों को बड़ा क्रोध और शोक हुआ। उसी समय कर्नल क्लाइव नई सेना लेकर विलायत से फिर आया था। वह तुरन्त बङ्गाल को समुद्र की राह से चल पड़ा। पर उसे वहाँ पहुँचते पहुँचते तीन महीने लग गये। आज काल इस यात्रा में समुद्र मार्ग से चार दिन और रेल से दो दिन लगते हैं। पर उस समय न तो स्टीमर थे न रेल ही थी। जहाज़ से उतरते ही क्लाइव ने बिना कुछ मार काट किये हुए कलकत्ता फिर अपने हाथ में ले लिया।

४४—पलासी की लड़ाई।

अङ्गरेज़ों का बङ्गाल पर अधिकार पाना।

१—जब सिराजुदौला ने सुना कि बहादुर कर्नल क्लाइव साबित जंग ने बङ्गाल में आकर कलकत्ते को फिर अपने अधिकार में ले लिया तो वह बहुत डरा। अभी उस को गद्दी पर बैठे साल ही भर हुए थे पर उस का शासन ऐसा बुरा था कि उस की प्रजा उस से घबरा गई थी और उस से छुटकारा-पाना चाहती थी। कुल उसी के आदमियों ने एक बार यह सलाह की कि इसे गद्दी से उतार कर दूसरे को बैठा दें। इस षड्यन्त्र का मुखिया उसी का सेनानायक मीरज़ाफर था। उसने क्लाइव को यह भी लिखा कि "तुम मेरी सहायता करो तो मैं सिराजुदौला पर धावा कर दूं।"

मीरज़ाफर।

२—क्लाइव कलकत्ते के उत्तर सेना लेकर बढ़ा। उस के साथ केवल ११०० अङ्गरेज़ सिपाही २००० देशी सिपाही और १० तोपें थीं। नवाब के यहाँ ५०००० पैदल १८००० तिलगे और ६०० तोपें थीं। पलासी के स्थान पर १७५७ ई० में

युद्ध हुआ। मीरज़ाफर ने अङ्गरेज़ों का साथ नहीं दिया पर सेना सहित निकट ही खड़ा देखता रहा कि किसकी जीत होती है। सन्ध्या समय सिराजुद्दौला की सेना भाग गई। मीरज़ाफर नवाब बनाया गया और सिराजुद्दौला मीरज़ाफर के बेटे मीरन के हाथ मारा गया। मीरज़ाफर का चित्र देखो कैसे कैसे महंगे मोतियों का हार पहने हुए है और जड़ाऊ सरपेच सिर पर लगाये हुए है।

३—पलासी का युद्ध भी वैसाही प्रसिद्ध है जैसा कि अरकाट का घेरा। यह कोई बहुत बड़ी लड़ाई न थी क्योंकि इसमें केवल ७० आदमी एक ओर के काम आये और ६०० दूसरी ओर के पर इसके बड़े बड़े परिणाम हुए। यह अङ्गरेज़ों की पहली जीत उत्तरी हिन्दुस्थान में थी और इस के पीछे अङ्गरेज़ों की जीत पर जीत होती गई यहाँ तक कि धीरे धीरे ईस्ट इण्डिया कम्पनी सारे हिन्दुस्थान का मालिक हो गई। यह एक ही मनुष्य की चतुराई और बहादुरी थी जिस ने अरकाट और पलासी के मैदान सर किये और यह मनुष्य राबर्ट क्लाइव था।

४—थोड़े ही दिनों पीछे क्लाइव इङ्गलिस्तान लौट गया। वहाँ उसको बादशाह ने लार्ड बना दिया और वह एक बड़ा रईस और अमीर समझा जाने लगा।

५—मीरज़ाफर का शासन अच्छा न रहा। उसको अपने ही सुख चैन की चिन्ता रहती थी। पलासी की लड़ाई के

पीछे बङ्गाल में अङ्गरेज़ सब से प्रबल हो गये थे। उन्हों ने मीरज़ाफर की जगह उस के दामाद मीरक़ासिम को नवाब बना दिया और उस ने तीन चार बरस तक देश में राज किया। उस के पीछे उसे यह सूझी कि अङ्गरेज़ों से लड़ कर उन्हें देश से निकाल दें। मुग़ल बादशाह शाह आलम और अवध के नवाब शुजाउद्दौला भी उस से मिल गये। इसी के कुछ दिन पहले सन् १७६१ ई० में पानीपत की लड़ाई हुई थी। शुजाउद्दौला ने महरठों के परास्त करने में अहमद शाह की सहायता की थी और समझने लगा था कि हम अङ्गरेज़ों से भी लड़ सकते हैं पर बक्सर की लड़ाई में तीनों हार गये।

६—इसके पीछे लार्ड क्लाइव फिर बङ्गाल का गवरनर होकर आ गया। वह इलाहाबाद चला गया जहाँ शाह आलम और शुजाउद्दौला दोनों अङ्गरेज़ी लश्कर में बैठे थे और कहते थे कि हम से जो कहो वह करने को तैयार हैं दोनों परास्त हो चुके थे। क्लाइव चाहता तो दोनों का सारा राज ले लेता। ऐसा ही और मुग़ल बादशाह भी करते थे। पर इसके बदले उस ने एक सन्धि की जो इलाहाबाद का सुलहनामः कहलाता है। चित्र में चन्दवे के नीचे मुग़ल बादशाह बैठा है। उसके सामने लाड क्लाइव नंगे सिर खड़ा है। शाह आलम अब भी अपने को हिन्दुस्थान का शाहनशाह समझता था और उसी का आदर करने के लिये लार्ड क्लाइव ने अपनी टोपी उतार ली थी।

क्लाइव के हाथ में [illegible] का प्रसिद्ध सुलहनामा है जिस से ईस्ट इण्डिया कम्पनी को कहने को बङ्गाल की दीवानी और देश के महसूल और मालगुज़ारी पाने का अधिकार मिला है पर वास्तव में वह बङ्गाल का मालिक बन गई है। क्लाइव ने बादशाह को २६ लाख रुपया देना स्वीकार किया। बङ्गाल का शासन मीरज़ाफ़र के बेटे को

क्लाइव और शाह आलम।

दिया गया। उसका काम यह था कि मालगुज़ारी तहसील करके अङ्गरेज़ों को दे।

७—इस रीति से सन् १७६५ ई० में नवाब मीरक़ासिम की जगह पर अङ्गरेज़ बङ्गाल के हाकिम हो गये। यह बङ्गाल का हाता कहलाता है। इसके पहले क्लाइव ने फ़रान्सीसियों से

बम्बई

मद्रास

किला सेंट ड़ेविड़

हिन्द महासागर

७६° ग्रीनवृच से पूर्व ८०° द्राघिमान्तर

मद्रास के उत्तर सरकार ले लिया था, जिस से मद्रास हाते की नीव पड़ी। इसी से लार्ड क्लाइव भारत में अङ्गरेज़ी साम्राज्य का पहला बनानेवाला कहलाता है। इस ने मद्रास और बङ्गाल के हाते दोनों की नींव डाली।

८—सन् १७६५ ई० में भारत का नक़शा देखने से तुम जान लोगे कि लार्ड क्लाइव ने अङ्गरेज़ी भारत को कितना बढ़ा दिया था।

४५—वारेन हेस्टिङ्गस्।

बाप के बिके घर को फिर मोल लेने की प्रतिज्ञा।

१—हिन्दुस्थान में क्लाइव के पीछे वारेन हेस्टिङ्गस् सब से प्रसिद्ध अङ्गरेज़ था। वह क्लाइव से दो बरस छोटा था। उसने जो काम क्लाइव ने उठाया था उसे पुरा किया। क्लाइव ईस्ट इण्डिया कम्पनी की नौकरी में मद्रास में बाबू होकर आया था उस के छः बरस पीछे हेस्टिङ्गस् बङ्गाल में बाबू होकर आया।

२—क्लाइव की भाँति हेस्टिङ्गस् भी एक ग़रीब आदमी का लड़का था। इङ्गलैण्ड के पश्चिम भाग में एक गाँव डेल्सफोर्ड है। यह गाँव एक नदी के किनारे बसा है जो एक "डेल" अर्थात् घाटी में होकर बहती है और पास ही उस पर फ़ोर्ट अथवा चह भी है। इसी कारण गाँव का यह नाम पड़ा। यहाँ नारमन राजाओं के समय जो इङ्गलैण्ड में

उन दिनों राज करते थे जब ग़ज़नी में सुलतान महमूद था, हज़ार बरस से हेस्टिङ्गस् के पुरखों की ज़मीन्दारी थी। पर जिन दिनों हेस्टिङ्गस् पैदा हुआ उस के कुल के बुरे दिन आ चुके थे। उस के बाबा की अपनी सब जमीन ऋण चुकाने के लिये लण्डन के एक व्यापारी के हाथ बेचनी पड़ी थी।

३—जब हेस्टिङ्गस् सात ही बरस का लड़का था वह गाँव की नदी के किनारे जाया करता और वहाँ पड़ा रहता। एक दिन साँझ को उस ने मन में बिचारा कि जब मैं बड़ा हो जाऊंगा तो अपने पुरखों की ज़मीन को फिर मोल ले लूँगा। यह बचपन का विचार उसको कभी न भूला।

४—हेस्टिङ्गस् का बाप बहुत ग़रीब था। उस के एक चाचा ने उस को अपने पास बुला कर लण्डन के वेस्ट मिनीस्टर स्कूल में भरती करा दिया। यह इङ्गलैण्ड के प्रसिद्ध स्कूल में गिना जाता है और यहाँ के पढे हुए बहुत से लड़के बड़े बड़े आदमी हो गये हैं। लड़कपन में क्लाइव और उस की आदत में बड़ा भेद था। वह बड़ा चतुर था और पढ़ने में बहुत जी लगाता था। उसके सब गुरु उसे मानते थे। वह जब सोलह बरस का हुआ तो उसके एक और चाचा ने जो उस समय उसका रक्षक और ईस्ट इण्डिया कम्पनी का डाइरेक्टर भी था उस को हिन्दुस्थान में किरानी बना कर भेजना चाहा। उस स्कूल के हेड मास्टर ने कहा

"लड़का अभी बहुत छोटा है इसे अभी रहने दीजिये मैं इसका खर्च देकर इसको अक्सफोर्ड के कालिज में भेजूँगा, पढ़ कर यह बड़ा विद्वान् हो जायगा।" उसके चाचा ने जो व्यापारी था कहा कि नहीं अब इसको लिखना और हिसाब सीखना चाहिये क्योंकि इस को व्यापार करना है। उन दिनों अच्छे स्कूल में भी लड़के लेटिन या यूनानी भाषा के सिवा कुछ न सीखते थे। हेस्टिङ्गस् अब एक और ब्लू कोट स्कूल भेजा गया। यहां साल भर रह कर उसने लिखना और हिसाब किताब सीखा। तब उसके चाचा ने उसे ईस्ट इण्डिया कम्पनी के डाइरेक्टरों के पास किरानी की जगह के लिये अरज़ी देने को कहा। अगले पृष्ठ पर हम हेस्टिङ्गस् की अङ्गरेज़ी जैसी कि उसने अपने हाथ से लिखी थी उसका चित्र देते हैं। यह अरज़ी ईस्ट इण्डिया कम्पनी के दफ़्तर में रखी रही और अब भी देखी जा सकती है। उसको जगह मिल गई और वह बड़ा प्रसन्न हुआ। उसने विचारा कि जब मैं हिन्दुस्थान जाऊँगा तो मैं बड़ी मेहनत करूँगा और अपनी तनख़ाह बचाऊँगा और लौट कर डेलस्फोर्ड मोल ले लूँगा।

५—क्लाइव बीस बरस की अवस्था में मद्रास पहुँचा। हेस्टिङ्गस् की आयु और भी कम थी जब वह कलकत्ता सन् १७५० ई० में पहुँचा, वह सत्रह ही बरस का था। इसके चौबीस बरस पीछे यह सत्रह बरस का लड़का भारतवर्ष का गवरनर जेनरेल हो गया।

To the Hon.ble the Court of Directors of the United East India Company

The humble Petition of Warren Hastings aged Sixteen Years & upwards.

Sheweth

That your Petitioner has been bred up to Writing & Accounts, & being very desirous of Serving your Honours as a Writer in India

He therefore humbly prays your Honours will please to entertain him in that Station, which he promises to discharge with the greatest Diligence & Fidelity, & is ready to give such Security as your Honours shall require.

And your Petitioner (as in Duty bound) shall ever pray

Warren Hastings.

वारेन हेस्टिङ्गस की अर्जी।

६—यह पहले [illegible] को जो मुर्शिदाबाद के पास गङ्गाजी के किनारे छोटा सा नगर है भेजा गया था। सात बरस तक वह माल मोल लेने और बेचने का काम करता था। जब सन् १७५७ ई० में सिराजुद्दौला ने अङ्गरेज़ों से लड़ाई की तब वह काल कोठरी में नहीं बन्द हुआ था पर [illegible] में क़ैद था। वह वहाँ से भाग कर क्लाइव के साथ हो लिया जो मद्रास से सेना लेकर आ रहा था; वह सिपाही न था पर फिर भी बड़ी वीरता से लड़ा और क्लाइव को ऐसा भाया कि उसने मीरजाफ़र के यहाँ जिसको कि उसने नवाब बनाया था हेस्टिङ्गस् को रेजिडेंट बनाकर भेजा। इसके तीन बरस पीछे हेस्टिङ्गस् कलकत्ते की कौंसिल का मेम्बर बनाया गया।

७—अब ऐसा समय आया कि कम्पनी के किरानियों को भी राज काज में सहायता देने की आवश्यकता हुई। यह ऐसा काम था जिस को वह कुछ भी न जानते थे। उन दिनों हिन्दुस्थान में एक ऐसी रीति मुद्दतों से चली आती थी कि प्रजा अपने राज करनेवालों को भेंट दिया करती थी और यह भेंट कभी कभी बहुत बड़ी होती थी। अब भेंट लेना मना है पर तब वैसा कोई नियम न था। सो बहुत से कम्पनी के नौकर भेंट लेकर बड़े धनी बन गये थे। हेस्टिङ्गस् उस समय बड़े पद पर था और वह चाहता तो

वह भी धनी हो जाता पर वह भेंट लेना ठीक न समझता था और न कभी लेता था।

८—सन् १७६४ ई० में हेस्टिङ्गस् हिन्दुस्थान में १४ बरस रहने के पीछे इङ्गलैण्ड आराम करने के लिये लौट गया। उन दिनों कम्पनी के नौकरों को जब तक वह हिन्दुस्थान में रहते थे तभी वेतन दिया जाता था। इङ्गलैण्ड छुट्टी पर जाने से वेतन या पेनशन मिलने का कोई नियम न था। इसी से जब हेस्टिङ्गस् इङ्गलैण्ड लौटा तब उस के पास जो कुछ उस ने अपनी तनख़ाह से बचाया था उस के सिवा और कुछ न था। यह कुछ बहुत न था और वह डेलसफोर्ड न ले सका। चार ही बरस में उसका सब रुपया ख़र्च हो गया। उस ने ईस्ट इण्डिया कम्पनी से फिर भारत के जाने की प्रार्थना की। उन लोगों ने भी उस को अच्छा चतुर मेहनती आदमी पाया और उस को अब की मद्रास की कौंसिल का प्रधान मन्त्री बना कर भेजा जो गवरनर से कुछ ही घट कर पदवी थी।

४६—वारेन हेस्टिङ्गस्।

किरानी से भारत का गवरनर जेनरल।

१—हेस्टिङ्गस् दो बरस मद्रास में रहा। उस ने ऐसा अच्छा काम किया और उस के मालिक उस से इतना प्रसन्न

रहे कि उन्हों ने उसे फिर बङ्गाल में गवरनर बनाकर भेज दिया।

२—बङ्गाल की दशा ऐसी बिगड़ रही थी कि उस जो सुधारना एक बड़े दृढ़ और चतुर अफ़सर का काम था। सन् १७६५ ई० में क्लाइव के भारत से जाने के पीछे सब बिगड़ गया। क्लाइव ने बङ्गाल का शासन मीरजाफ़र के हाथ में दे दिया था। उस के मरने पर उसका बेटा नवाब बनाया गया। इन दोनों का शासन बहुत बुरा था। मालगुज़ारी और महसूल बहुत कड़े थे पर उस से भी राज का ख़र्चा पूरा न पड़ता था। १६ लाख रुपया साल में शाह आलम को भी कम्पनी देती थी। वह कहाँ से दिया जाता। देश कङ्गाल होता गया; कम्पनी का व्यापार से लाभ भी घट गया और उसे अपना काम काज करने के लिये रुपया उधार लेना पड़ा।

वारेन हेस्टिङ्गस्।

३—हेस्टिङ्गस् एक साल तक बङ्गाल का गवरनर रह चुका था; जब कम्पनी ने बड़ा उलट फेर कर दिया। अब तक तीन गवरनर होते थे, एक कलकत्ते में एक मद्रास में

और एक बम्बई में। यह लोग पहले व्यापारी कारखानों के अफ़सर थे पर अब कम्पनी दो बड़े बड़े देशों का शासन करती थी, एक मद्रास का उत्तर सरकार और दूसरा सारा बङ्गाल देश। अब गवरनरों को राज भी करना पड़ता था और व्यापार भी। अङ्गरेज़ व्यापारी भी थे और नवाब भी थे। मुग़ल बादशाह उन का नाम मात्र का अधिराजा था। इन गवरनरों को किसी से लड़ाई और किसी से सन्धि करनी पड़ती थी। इस से यह उचित समझा गया कि सब मिलकर वह कार्य करें जिससे उनके मालिक ईस्ट इण्डिया कम्पनी का भला हो और एक की चाल दूसरे के बिरुद्ध न पड़े उचित ही था कि सब मिल कर एक ही नियम पर चल, सब के मित्र एक ही रहें और बैरियों से लड़ने भिड़ने में सब एक दूसरे की सहायता करें; तीनों गवरनरों में बङ्गाल के गवरनर के शासन में सब से बड़ा देश था और यहाँ व्यापार भी बहुत था इस लिये कम्पनी ने उसे तीनों का अफ़सर बना दिया, और उसका नाम गवरनर जेनरल रख दिया, और उस की सहायता के लिये चार सभ्यों की एक कौंसिल बना दी गई।

४—सन् १७७४ ई० में वारेन हेस्टिङ्गस् पहला गवरनर जेनरल बनाया गया और इस पद पर वह ग्यारह बरस तक रहा। उसे बहुत कड़ा काम करना पड़ता था। ऐसा काम उसके पीछे किसी गवरनर जनरल ने नहीं किया। वह

व्यापारी का भी काम करता था और राजा का भी। भारत में पहले यह रीति थी कि क्षत्रिय राज्य करते थे, ब्राह्मण उनको राज्य करने की रीति बताते थे और वैश्य व्यापार करते थे। हेस्टिङ्गस् को तीनों काम एक साथ करने पड़े। वह इस बात का उद्योग करता था कि इंगलिस्तान और भारत के व्यापार से लाभ हो जिसमें इंगलिस्तान के व्यापारी प्रसन्न रहें और उसे बंगाले का शासन करना था जिसमें वहाँ के रहनेवाले सुखी रहें। उसे नये अंगरेज़ी किरानियों को सिखाना पड़ता था कि राज भी करें और व्यापार भी कर। उसे मद्रास और बम्बई के गवरनरों के काम की जांच करनी थी ; उन्हें सलाह देता था और काम पड़ने पर उनके पास रुपया और सेना भेजता था। इस पर भी दुष्ट लोग उसको बुरा कहते थे उसके कामों में विघ्न डालते थे और उसका सर्वनाश करने का यत्न करते थे।

५—उसकी कौंसिल के मेम्बर (सभ्य) जो अंगरेज़ थे अच्छे और सच्चे होते तो उस का काम इतना कड़ा न होता। एक ही मेम्बर ऐसा था जो बंगाल में रह चुका था। वह हेस्टिङ्गस् का साथ देता रहा। कम्पनी के भेजे हुए इंगलिस्तान से और तीन आये थे। वे न बंगाल देश को समझते थे न वहाँ के रहनेवाले आदमियों को। इन तीनों में एक फ्रांसिस था जो समझता था कि मुझ को गवरनर जेनरल होना चाहिये था और उसने हेस्टिङ्गस् के बिगाड़ने में

कोई कसर न रखी। यह समझा था कि हेस्टिङ्गस् निकाल दिया जायगा तो मैं ही उसका पद पाऊँगा। और दो मेम्बर उसके साथ थे; वह हर बात में गवरनर जेनरल से विरोध किया करते थे और जो उपाय वह देश की भलाई के लिये करना चाहता था उसके बिगाड़ने का उद्योग करते थे।

६—इस से हेस्टिङ्गस् का काम और भी कठिन हो गया। उसका बर्ताव बहुत ही कोमल और सभ्य रहता था, वह शान्त रहता था, पर वह बड़ा दृढ़ था और जो उस से विरोध करते थे उन से कभी हार न मानता था। फ्रांसिस उसे रोकता ही रहा पर हेस्टिङ्गस् सात बरस तक अपने विचारों के अनुसार अपना काम करता गया, अन्त को उस से सहा न गया। एक दिन फ्रांसिस ने अपनी प्रतिज्ञा के प्रतिकूल किया। तब हेस्टिङ्गस् ने कौंसिल की किताब में लिखा कि मुझे इस का विश्वास नहीं है, यह सच नहीं बोलता। फ्रांसिस ने कहा कि इस ने मेरा अपमान किया और उस समय की रीति के अनुसार जैसा कि हम क्लाइव के बारे में पढ़ चुके हैं उस ने गवरनर जेनरल से कहा कि मेरे साथ डुएल लड़ो। हेस्टिङ्गस् भी तैयार हो गया और दोनों में तमञ्चों से डुएल ठहरी; दूसरे दिन सबेरे दोनों इकट्ठा हुए और १४ पद का अन्तर देकर आमने सामने खड़े हुए। फ्रांसिस ने तमञ्चा चलाया पर उसका वार खाली गया, हेस्टिङ्गस् ने तमञ्चा नहीं चलाया; फ्रांसिस ने दूसरा तमञ्चा उठाया दोनों ने साथ

साथ गोली चलाई फ्रांसिस के गोली लग गई और वह गिर पड़ा। हेस्टिङ्गस् बच गया। फ्रांसिस आठ दिन में अच्छा हो गया और चार महीना पीछे इंगलिस्तान लौट गया और वहाँ हेस्टिङ्गस् का सत्यानाश करने के लिये जो कुछ उस से बन पड़ा करता रहा। थोड़े ही दिनों में दो मेम्बर जो फ्रांसिस के साथ थे वह भी कलकत्ते में मर गये और हेस्टिङ्गस् के लिये कम्पनी और देश की भलाई करने में कोई बाधा न रही।

७ हेस्टिङ्गस् गवरनर जेनरल हुआ तो उस ने पहिला काम यह किया कि मीरजाफ़र के बेटे और उस के अधिकारियों का बुरा शासन बन्द कर दिया और बंगाल को पूरा अंग्रेज़ी शासन में कर लिया। उस ने हर ज़िले में अंग्रेज़ी कलक्टर नियुक्त कर दिया; अंग्रेज़ी जज रख कर दीवानी के मुकद्दमे करने के लिये अदालतें खोलीं और जजों की सहायता करने को हिन्दू पण्डित और मुसलमान क़ाज़ी नियत किये। इन लोगों को व्यापार से कुछ काम न था। यह व्यापारी न थे, शासक (हाकिम) थे। इन की बड़ी बड़ी तनख़ाहें थीं और यह किसी से नजर भेंट न ले सकते थे। महसूल घटा दिये गये और इन की संख्या कम कर दी गई पर सब ठीक समय पर लिये जाते थे और सरकारी कामों में खर्च करने के लिये पहिले से अधिक रुपया आने लगा। शासन अच्छा होने से प्रजा सुखी हो गई।

८—हम पहले कह चुके हैं कि मुग़ल बादशाह शाह

आलम नाममात्र को कम्पनी का अधिराजा था। अंग्रेज़ों से पहले जो नवाब बंगाल का शासन करते थे उन्हों ने बहुत दिनों से उस को नज़र देना बन्द कर दिया था और न उसे अपना बादशाह मानते थे पर क्लाइव ने १७६५ में इलाहाबाद की सन्धि से उसे २६ लाख वार्षिक देने की प्रतिज्ञा की थी और उस के बदले में कम्पनी को बंगाल की दीवानी मिली थी। बादशाह ने यह भी मान लिया था कि हम अंगरेज़ी सेना की रक्षा में इलाहाबाद रहेंगे और इस रीति से रहने पर उन को अधिकार दिया गया था कि गङ्गा-यमुना के दोआब पर इलाहाबाद को राजधानी बना कर शासन करें।

६—पर शाह आलम अंग्रेज़ों का पक्ष छोड़ कर महरठा सेंधिया के पास चला गया। उस की इस चाल से बङ्गाल का भला हो गया। अब तक उस देश पर कर लगा के शाह आलम को २६ लाख दिया जाता था और वह देश इस भार को उठा न सकता था। हेस्टिङ्गस् ने यह देना बन्द कर दिया और तब से मुग़ल बादशाह नाममात्र को भी ईस्ट इण्डिया कम्पनी का अधिराज न रह गया। इसी समय दोआब का देश जो शाह आलम को छोड़ दिया था अवध के नवाब शुजाउद्दौला को दे दिया गया और शुजाउद्दौला ने [illegible] को इसके लिये ५० लाख रुपये दिये।

१०—इस रुपये की बड़ी आवश्यकता थी क्योंकि इस

बीच में मैसूर के सुलतान हैदरअली ने अंग्रेज़ों पर चढ़ाई कर रखी थी। हेस्टिङ्गस् ने इस रुपये से मद्रास के गवरनर की सहायता की। अन्तमें हैदरअली से सन्धि कर ली गई; बम्बई के गवर्नर को भी महरठों से लड़ना पड़ा था। हेस्टिङ्गस् ने उस की भी सहायता रुपये और सेना से लड़ाई के अन्त तक की। इन दोनों लड़ाइयों में बहुत रुपया लगा। हेस्टिङ्गस् को रुपया इकट्ठा करना था, और वह काम यह केवल शाह आलम का वेतन रोक कर रुपया बचाने और बङ्गाल का देश अंग्रेज़ों के हाथ में देकर उसमें अदल बदल करने ही से कर सका।

४७—वारेन हेस्टिङ्गस्।

उसकी रूबकारी और उसका निर्दोष ठहराया जाना और डेल्स फ़ोर्ड का फिर मोल लेना।

१—हेस्टिङ्गस् ५२ बरस का हो चुका था। उसने ३० बरस से अधिक बड़ी मिहनत से काम किया था और वह थक गया था। अब उस ने सोचा कि अपने पुराने देश और अपने पुराने घर में जाकर सुख से बैठना चाहिये और उस ने नौकरी छोड़ दी और इंगलिस्तान चला गया।

२—घर पहुँचते ही उस के बैरियों ने उस पर बड़ी निठुराई से वार किया। फ्रांसिस चुपचाप न बैठा था। उस ने गवर्नर जेनरल के विरुद्ध कितनी झूठी बातें प्रसिद्ध कर रखी

थीं और लोग हेस्टिङ्गस् से इसलिये रुष्ट थे जो उस ने हिन्दुस्थानियों से नज़र भेंट लेना बन्द करवा दिया था, फ्रांसिस के सहायक हो गये। इन बरियों ने फ्रांसिस से मिल कर उस के विरुद्ध पार्लियामेण्ट में झूठी नालिश की और झूठे दोष लगाये। यह इङ्गलिस्तान में सब से प्रसिद्ध और बड़ी रूबकारी थी। रानी, राजकुमार, राजकुमारियाँ, ड्यूक बिशप, बड़े बड़े सामन्त और उन की स्त्रियाँ, जज लोग वहाँ उपस्थित रहते थे और वकीलों की बहस सुनते थे। उस समय के बड़े बड़े वकील वारेन हेस्टिङ्गस् पर दोषारोपण करने के लिये रखे गये थे और उन्होंने हेस्टिङ्गस् पर बड़े बड़े दोष लगाये और इस बात के सिद्ध करने का यत्न किया कि हेस्टिङ्गस् झूठ बोला, झूठी क़सम खाई, बरज़ोरी से औरों का धन छीना, निठुराई की, धोखा दिया और अत्याचार किया। उन्हों ने यहाँ तक कहा कि अंग्रेज़ी भाषा में ऐसे शब्द नहीं हैं जिनसे उन के अपराधों का पूरा बखान हो सके। मुख्य वकील की बहस ऐसी विचित्र थी और उस का व्याखान ऐसा प्रभवशाली था कि हेस्टिङ्गस् ने अपने एक मित्र से कहा "मैं आधे घण्टे तक उस की ओर अचरज से देखता रहा और समझा कि मेरे बराबर संसार में दूसरा दुष्ट नहीं है।"

३—इस रुबकारी के कई बरस पीछे वही वकील और हेस्टिङ्गस् दोनों इङ्गलिस्तान के युवराज के यहाँ खाना खाने को बुलाये गये। युवराज ने चाहा कि दोनों में मेल हो

पार्लामेण्ट का भवन।

जाय। वकील हेस्टिङ्गस् के पास चला गया और उस ने चाहा कि हेस्टिङ्गस् से हाथ मिलाये। वह बोला "हेस्टिङ्गस् साहब, आप यह न समझियेगा कि मैं आपको सचमुच दोषी समझता था बहस में जो कुछ मैं ने कहा था वह वकील की हैसियत से कहा था। वकील का काम है कि अपना मुक़दमा जीतने के लिये जो उस से हो सके कहे।" पर हेस्टिङ्गस् पीछे हट गया। उस की बात का उत्तर न दिया; उसकी ओर ताक कर सलाम किया और अपनी पीठ फेर ली। हेस्टिङ्गस् यह उचित न समझता था कि मुक़दमा जीतने के लिये वकील का धर्म है कि झूठ बोले और किसी के सर्वनाश करने की चेष्टा करे। इसी से उस ने न वकील से हाथ मिलाया न उससे मित्रता की।

४—जब यह प्रसिद्ध रूबकारी समाप्त हुई तो गवरनर जेनरल के ऊपर कोई अभियोग सिद्ध न हुआ और वह निर्दोष ठहराया गया। इस पर भी उसे सात बरस तक अपने वकीलों का ख़र्चा देना पड़ा और उस के पास कौड़ी न बची। पर ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने जिसकी उस ने इतने दिनों तक और ऐसी भक्ति से सेवा की थी उसे मुक़दमे का सारा ख़र्चा दे दिया और उसके जन्म भर के लिये एक अच्छी पेनशन कर दी।

५—इस के पीछे हेस्टिङ्गस् ने डेल्सफ़ोर्ड में अपने कुल का पुराना घर मोल ले लिया और वहाँ बहुत दिनों तक सुख चैन से रहा और उस की सब प्रतिष्ठा करते थे। वह

इङ्गलिस्तान की प्रिवी कौंसिल का सभासद बनाया गया और एक बार जब उसे पार्लियामेण्ट में जाना पड़ा था तो उस के भीतर आते ही लाट सभा और साधारण सभा के सारे मेम्बर उसका आदर करने के लिये खड़े हो गये और अपनी अपनी टोपियाँ उतार लीं।

६—सन् १७८५ ई० में जब हेस्टिङ्गस् हिन्दुस्थान छोड़ कर चला गया था अंग्रेज़ी भारत का कोई नया नक़शा नहीं बना, इस का क्या कारण है? कारण यह है कि सन् १७६५ ई० से जब इलाहाबाद की सन्धि हुई थी नक़शा बदला नहीं था। क्लाइव की भांति वारेन हेस्टिङ्गस् ने कोई नया देश नहीं जीता पर जो देश क्लाइव ने जीते थे उसमें उस से अच्छा प्रबन्ध किया। उस के समय में ईस्ट इण्डिया कम्पनी बङ्गाल की पूरा शासनकर्ता थी।

४८—हैदरअली।

सिपाही से मैसूर का सुलतान।

१—मैसूर का पठार भरतखण्ड के दक्षिण में है। उसके पूर्व और पश्चिम दोनों घाट हैं और इसके दक्षिण में नील गिरि की पहाड़ी है। यहाँ कनाडा जाति के लोग रहते हैं और आज कल जो इन का राजा है वह अङ्गरेज़ों का पक्का मित्र है। दो मुसलमान बादशाहों ने इस पर राज किया। पहले का नाम हैदरअली था और दूसरे का टीपू सुलतान।

२—दो सौ बरस हुए जब हैदरअली पैदा हुआ था। उसका बाप एक साधारण ग़रीब सिपाही था। हैदर पढ़ा लिखा न था ; उसने पहले सिपाही का काम सीखा था वह थोड़े से डाकुओं का सरदार था ; वह उनको तनख़्वाह न देता पर लूट के माल में साझी करता था। उस के साथी गांव से माल असबाब ढोर बकरियाँ और अनाज तक लूट ले जाते थे। वह लूट के माल में से आधा अपने साथियों को देता था और आधा आप रख लेता था।

हैदरअली।

३—हैदर के साथी बढ़ते गये और कुछ ही दिनों में वह इतना बली हो गया कि उस ने एक पहाड़ी गढ़ ले लिया अब वह अपने को सरदार कहने लगा। उस ने अपने सिपाहियों को क़बायद सिखाई। मैसूर के हिन्दू राजा ने उसका नाम सुना तो उसको अपने यहीं नौकर रख लिया। हैदर के आदमी भी रख लिये गये और वह मैसूर राज की सेना का सेनानायक बना दिया गया। वह दिन दिन बली और धनी होता गया और अन्त में प्रधान सेनापति हो गया।

४—उस समय मैसूर का राज बहुत छोटा था। वह

अपने चाचा से लड़ बैठा जो उस के सयाने होने तक राज का रक्षक कर दिया गया था। हैदर ने राजा का साथ देने के बहाने उस के चाचा से सब अधिकार छीन कर उसे क़ैद में डाल दिया। कुछ दिन वह राजा की ओर से राज करता रहा पीछे उस ने चुपके से राजा को भी क़ैद कर दिया और आप मैसूर का सुलतान बन बैठा।

५—हैदर ने मैसूर पर २२ बरस राज किया। वह सदा दक्षिण के मुसलमान बादशाहों निज़ाम, करनाटक के नबाब महम्मदअली, महरठे और अंग्रेज़ों से लड़ता रहा। वह सारा दक्षिण लेना चाहता था और ले भी लेता क्योंकि वह महम्मदअली से बली और वीर था और उस की सेना भी अच्छी थी। पर जब कभी हैदर ने चढ़ाई की सदा अंग्रेज़ों ने महम्मदअली की सहायता की।

६—एक समय हैदर अपने क्रूर सिपाहियों का दल ले कर पूर्वी और पश्चिमी घाट के बीच के मैदानों में होता हुआ मद्रास के निकट आ पहुँचा। वह उस देश के ऊपर ऐसाही आया जैसे उत्तर-भारत में अफ़ग़ान आये थे। वह मारता काटता गांव जलाता खेत रौंदता और ढोर हंकाता हुआ चला था। मद्रास के सेण्ट जार्ज क़िले से अंग्रेजों ने सारा देश जलता देखा।

७—वह यह न जानते थे कि हैदर का साहस मद्रास तक आने का होगा। इसी से उन के पास लड़ाई करने की

सेना भी न थी। उन्हों ने कलकत्ते से सेना बुलवाई। वहाँ वारेन हेस्टिङ्गस् जो गवरनर जेनरल था उस ने एक सेना एक वीर सरदार सर आयरकूट की कमान में भेजी। उसने हैदर को मैसूर भगा दिया। बरसों तक लोग हैदर के करनाटक की चढ़ाई और मैसूर के सवारों की क्रूरता की कहानियाँ कहते रहे।

४६—टीपू सुलतान।

अंग्रेज़ों से लड़ाई।

१—हैदरअली के मरने के पीछे उस का बेटा टीपू सुलतान हुआ। उस ने पचास बरस तक राज किया। वह हैदर ही सा वीर था पर न तो वह वैसा बुद्धिमान् ही था न उस ने वैसा अच्छा राज किया। हैदर मुसलमान था पर उस ने कभी हिन्दुओं को मुसलमान होने के लिये बाध्य न किया। उस ने उन को सदा अपने मत पर बे रोक टोक चलने दिया। पर टीपू ने हिन्दू राज्यों से जो मैसूर के आस पास थे लड़ता और हिन्दुओं को मुसलमान होने के लिये बाध्य करता और जो मुसलमान न हो जांयं उन को मार डालना अपना परम धर्म समझता था।

२—टीपू अंग्रेज़ों से बहुत चिढ़ता था। वह उनसे अपने बाप की सेना में लड़ चुका था और अच्छी तरह जानता था कि इन्हीं के कारण मुझ को करनाटक नहीं मिला

और इन्हीं ने मुझे वहाँ का बादशाह बनने न दिया। पर वह पहले उन से न लड़ा। उस ने पहले एक छोटी हिन्दू रियासत कुड़ग पर जो मैसूर के पास पश्चिमी घाट से मिली हुई है धावा किया और उन ने उसको जीत लिया और बहुत से कुड़गवासी को मार डाले और बहुतों को बन्दी बना कर मैसूर लाया।

टीपू सुलतान।

३—इस के पीछे टीपू पश्चिमी घाट के पहाड़ पार कर पश्चिम समुद्र के किनारे की ओर गया और कनाडा और मलाबार के देश जीत लिये। यहाँ भी उस ने लोगों के साथ बड़ी क्रूरता का व्यवहार किया और बहुतों को मुसलमान बना डाला। कालीकट के कुछ व्यापारी जितना रुपया टीपू ने मांगा उतना न दे सके सो उस ने उनको समुद्र में एक बड़ी चट्टान पर भेज दिया वहां वे भूखों मर गये।

४—आठ बरस टीपू को राज करते हो गये थे। उसका बल दिन दिन बढ़ता ही गया, उस के घमण्ड का वारापार न रहा और वह अपने को भारत में सब से बली समझने लगा। वह दक्षिण ट्रावनकोर की ओर चला और उस देश को भी

टीपू और मालाबार के सौदागर।

जीतना चाहा। ट्रावनकोर का राजा बहुत डरा। वह यह जानता था कि मैं टीपू ऐसे बली शत्रु का सामना नहीं कर सकता और उस ने उसकी मालावार और कुड़ग में लोगों के साथ क्रूरता का भी हाल सुना था। उस ने और कोई बचने की राह न पा कर अंग्रेज़ों से विनती की कि आप मेरी सहायता करें और मुझे टीपू से बचा लें।

५—उन दिनों लार्ड कार्नवालिस गवरनर जेनरल था। उस ने टीपू को ट्रावनकोर छोड़ देने के लिये लिखा। टीपू ने न माना तो अंग्रेज़ों ने उस से लड़ाई ठानी। निज़ाम और महरठों ने भी उनका साथ दिया क्योंकि उन्हों ने उसका बल बढ़ता देखा था और उन्हें डर था कि ट्रावनकोर लेने के पीछे हमारे ही ऊपर न टूट पड़े।

६—लार्ड कार्नवालीस आप कलकत्ते से मद्रास आया। वह अंग्रेज़ी सेना को अपनी कमान में लिये टीपू को खदेरता हुआ मैसूर के पठार पर जा पहुंचा। निज़ाम और महरठों की सेनाओं से कुछ लाभ न हुआ। उन्हों ने लड़ने के काम अंग्रेज़ी सेना के लिये छोड़ दिया और आप मैसूर के गांव लूटने में लग गये।

७—अंग्रेज़ी सेना ने बङ्गलौर जीत लिया और टीपू की राजधानी श्रीरंगपत्तन पर चढ़ाई कर दी। यह मैसूर के निकट कावेरी नदी के किनारे बसा है; इसके चारों ओर कावेरी बहती है। जब अंग्रेज़ी तोपें कोट पर गोले बरसाने

लगी तब टीपू डरा कि कहीं गढ़ छिन न जाय और उस ने सन्धि के लिये प्रार्थना की।

८—सन्धि कर ली गई और टीपू को लड़ाई का सब खर्च देना पड़ा और उस को अपना आधा राज भी देना पड़ा। निज़ाम और महरठों ने कोई काम न किया था तो भी यह देश निज़ाम महरठे और अंग्रेज़ों ने आपस में बांट लिया। अंग्रेज़ों को मालावार पश्चिमी समुद्र के किनारे के देश मदुरा और सलेम इसी में मिले।

९—इस लड़ाई के समाप्त होने पर लार्ड कार्नवालिस इङ्गलैण्ड लौट गया। सन् १७९२ ई० के भारतवर्ष के नक़शे से तुम जानोगे कि उस ने अंग्रेज़ी राज को कितना बढ़ाया। इस नक़शे को सन् १७६५ ई० के नक़शे से जैसा लार्ड क्लाइव ने छोड़ा था मिलाने से तुम जानोगे कि लार्ड कार्नवालिस ने राज में कितना राज बढ़ाया। यह नये देश मद्रास प्रेसीडेन्सी में थे। इस प्रेसीडेन्सी को लार्ड क्लाइव ने उत्तरीय सरकार को लेकर नीव डाली थी। लार्ड कार्नवालिस ने इसमें एक तिहाई और जोड़ा; उसी से उस को अंग्रेज़ी भारत का दूसरा बनानेवाला कहते हैं।

१०—सात बरस तक टीपू शान्त रहा। इस के पीछे वह फिर अंग्रेज़ों से लड़ाई करने का उद्योग करने लगा। उस ने फ्रान्स के बड़े बादशाह नेपोलियन को जो अंग्रेज़ों का बड़ा शत्रु था लिखा कि उनको भारतवर्ष से निकाल देने में मेरी

लाट कार्नवालिस के समय की ब्रिटिश इण्डिया।

सन १७९२ ईस्वी।

सहायता करो। उस ने महम्मद अली को भी अपना साथ देने के लिये लिखा।

कृष्णराजा।

११—उन दिनों लार्ड वेलेज़ली गवरनर जेनरल था। वह कलकत्ते से आया और अंग्रेज़ी सेना ने फिर मैसूर पर चढ़ाई की। टीपू श्रीरंगपत्तन में फिर घिर गया और थोड़ी ही लड़ाई के पीछे अंग्रेज़ों ने नगर ले लिया। टीपू

गढ़ के फाटक पर लड़ता मारा गया। मैसूर का वह भाग जो हैदरअली के पहले हिन्दू राज्य में था फिर एक राज्य बना दिया गया। बूढ़ा राजा मर चुका था। उसी कुल का एक छोटा लड़का जिस का नाम कृष्णराजा था बन्दी घर से निकाल कर सिंहासन पर बैठाया गया। यह घटना आज से ठीक १०० बरस पहिले की है।

५०—लार्ड वेलेज़ली।

अंग्रेज़ों को भारत का शासनकर्त्ता बनानेवाला।

१—कुछ कम सिवाय सौ बरस हुए एक बड़ा अंग्रेज़ी लार्ड जिसका नाम लार्ड वेलेज़ली था भारतवर्ष का गवरनर जेनरल होकर आया। अब तक अंग्रेज़ों के मन में यह समाया ही न था कि अकबर की भाँति सारे भारतवर्ष पर राज करेंगे। अंग्रेज़ों ने भारत के बहुत से भाग ले लिये पर उन की दशा यह थी कि अपनी इच्छा न रहने पर भी किसी के साथ लड़ना पड़ा और युद्ध समाप्त होने पर कई प्रान्त जीत लिये गये। अंग्रेज़ आप से आप किसी पर चढ़ाई न करते थे। हाँ, कोई उन्हें छेड़ता था तो अपने बचाव के लिये न लड़ते तो क्या करते। ईस्ट इण्डिया कम्पनी भारत में व्यापार करके रुपया कमाना चाहती थी।

२—एक कुल के सारे बच्चे कुलपति अर्थात् अपने बाप की आज्ञा मानते हैं और बाप उन से अच्छे काम कराता है।

बच्चा कोई बुरी बात करता है तो बाप उसे दण्ड देता है। बाप बच्चों की रक्षा करता है, दुख दर्द से बचाता है और वह बातें बताता है जिन का करना उचित है या जिन को न करना चाहिये और जिनसे बचना चाहिये।

लार्ड वेलेज़ली।

३—अच्छे राज्य में प्रजा अपने राजा की आज्ञा ऐसे ही मानती है जैसे बच्चे अपने बाप की। राजा या बादशाह अपनी प्रजा को दुख से बचाता है, अपराधियों को दण्ड देता है और निर्बलों की रक्षा करता है जिस से उस की प्रजा सुख चैन से रहती है।

४—इसी प्रकार भारत ऐसे बड़े देश में सब जगह शान्ति रखने और प्रजा की रक्षा के निमित्त यह परमावश्यक है कि एक शक्तिमान् न्यायपरायण और सुजन हाकिम या बादशाह हो; शक्तिमान् उसे इसलिये होना चाहिये कि सामन्तों और हाकिमों से अपनी आज्ञा पूरी करायें, चोरों और लुटेरों को दबाने की योग्यता उसमें हो जिस से सब जगह शान्ति रहे। उस के पास समुचित धन होना चाहिये जिस से अकाल पड़ने पर कङ्गालों और दीन दुखियों की सहायता कर सके।

वह अकबर की भाँति बुद्धिमान् और सुजन होगा तो प्रजा के लिये अच्छे और न्याय के क़ानून बनायेगा और सब को उस कानून के अनुसार चलने को बाध्य करेगा।

५--उस समय भारत में शासन करनेवालों में अंग्रेज़ अर्थात् ईस्ट इण्डिया कम्पनी ही सब से बली, सब से बुद्धिमान् और धनी थी। लार्ड वेलेज़ली ने देखा कि सब अंग्रेज़ों के लिये यह परमावश्यक है कि देश में जो लूट मार मची है उस का रोक और भारत को चौपट होने से बचायें। इस समय के बड़े बड़े शासनकर्त्ता यह थे, उत्तर भारत में अवध का नवाब, मध्य भारत में महरठों के सरदार और निज़ाम और दक्षिण-भारत में मैसूर का टीपू सुलतान। सिख लोग भी बलवान होते जाते थे पर उन की कार्यवाही पञ्जाब के बाहर न हुई थी। इनमें महरठे बड़े शक्तिमान् थे।

६—लार्ड वेलेज़ली ने सब शासनकर्त्ताओं को लिखा कि वह उस को प्रधान मानकर उस की आज्ञा मानें। उस ने कहा कि अगर तुम ऐसा करना स्वीकार करो तो तुम्हारे देश में एक शक्तिमान् सेना भेजी जायगी जो सब शत्रुओं को भगा देगी और देश भर में शान्ति रखने में सहायता देगी; सब को इस सेना का खर्च देना पड़ेगा; आपस में लड़ाई दंगा न करने और अपनी प्रजा को दुख न देने और देश का सुप्रबन्ध करने की प्रतिज्ञा करनी पड़ेगी।

८ निज़ाम सब से निबल था और महरठों से बहुत

डरता था। उस ने वेलेज़ली की बात तुरन्त स्वीकार कर ली। एक शक्तिमान् सेना निज़ाम के नगर हैदराबाद को भेजी गई। तभी से सब निज़ाम अंग्रेज़ों के मित्र और सहायक रहे हैं और सब ने निश्चिन्त होकर देश का शासन किया है।

८—टीपू सुलतान और महरठे भी वेलेज़ली की उस उत्तम नीति को मान लेते तो उन का भी भला होता और उन की सन्तान राज करती होती।

९—पर टीपू ने न माना। वह अंग्रेज़ों से लड़ बैठा और लड़ाई में मारा गया। मैसूर राज्य फिर हिन्दू राजा को दे दिया गया और उस की सन्तान अब मैसूर में राज करती है। मैसूर के राजा लोग अंग्रेज़ों के सहायक और परम मित्र हैं। जो देश पुराने मैसूर राज्य में न थे पर हैदर और टीपू ने जीते थे उन को अंग्रेज़ों महरठों और निज़ाम ने बांट लिया। मद्रास प्रेसीडेन्सी का वह भाग जो पश्चिम समुद्र के तट पर है और नीलगिरि पहाड़ के दक्षिण का कोयंबटूर ज़िला अंग्रेज़ों के हिस्से में आया। थोड़े ही दिन पीछे निज़ाम ने अपनी रक्षक सेना का ख़र्चा देने के बदले अपना हिस्सा लार्ड वेलेज़ली की आज्ञा लेकर कम्पनी को सौंप दिया। इस भाँति मैसूर और तुङ्गभद्रा नदी के बीच का देश जो समर्पित ज़िले कहलाते हैं और जिनमें बिलारी और कड़ापा के ज़िले हैं अंग्रेज़ों के हाथ आये।

१०—तञ्जौर का देश जिसके बीच में होकर कावेरी

नदी बहती है इतना उपजाऊ है कि वह दक्षिण का बाग कहलाता है। यह देश और करनाटिक जिस पर महम्मदअली शासन करता था और जिस को क्लाइव ने सन् १७५२ ई० में बरियों से बचाया था अङ्गरेज़ी राज में मिला लिये गये क्योंकि उन के राजा मर गये थे और उन की कोई सन्तान न थी। उन के नातेदारों की पेनशनें कर दीं गईं।

११—इस रीति से सन् १८०० ई० में मद्रास का हाता पूरा हो गया। १७६५ में लार्ड क्लाइव ने इसका आरम्भ किया। १७९२ ई० में लार्ड कार्नवालिस ने इसे बढ़ाया और १८०० ई० में लार्ड वेलेज़ली ने इसे पूरा कर दिया।

१२—कुछ ही दिन पीछे अवध के नवाब ने भी ईस्ट इण्डिया कम्पनी की अधीनता स्वीकार कर ली और जो अङ्गरेज़ी सेना उस की रक्षा के लिये रखी गई थी उस के खर्च के लिये गङ्गा यमुना के बीच का दोआबा अङ्गरेज़ों को दे दिया। यह देश वारेन हेस्टिङ्गस् ने नवाब के बाप शुजाउद्दौला को पचास लाख रुपया लेकर दिया था।

यह अङ्गरेज़ी भारत का पश्चिमोत्तर देश कहलाया इस की राजधानी इलाहाबाद थी।

१३—अब शक्तिमान् शासकों में महरठे ही बचे थे जो अङ्गरेज़ों के बस में न आये थे और जिन्हों ने ईस्ट इण्डिया कम्पनी की अधीनता स्वीकार न की थी। पांच महरठे सरदार थे जो शिवाजी के मरने के पीछे थे; इन के नाम

यह हैं, पूना का पेशवा, गुज़रात का गायकवाड़, ग्वालियर का सधिया, इन्दौर का होलकर, और नागपुर का भोंसला। लार्ड वेलेज़ली की शरतें गायकवाड़ ने मान ली और उस समय से गुज़रात में उस की सन्तान शान्ति पूर्वक राज्य करती है। पेशवा होलकर से हार कर अपनी जान लेकर बम्बई भागा। वह भी लार्ड वेलेज़ली की बातों को मान गया और अंग्रेज़ी सेना जो उस की सहायता को भेजी गई थी उसके खर्च के लिये अपने राज्य का कुछ भाग दिया। यह बम्बई हाते का एक टुकड़ा है। और तीन महरठा सरदारों ने न माना; उन्हों ने लड़ाई छेड़ दी। सधिया और भोंसला चार बड़ी लड़ाइयों में हराये गये और अन्त में उन्हों ने भी वेलेज़ली की शर्तें मान ली और सेंधिया ने अपने राज का यमुना के उत्तर का भाग और भोंसला ने उड़ीसा अंग्रेज़ों को सौंप दिया। यह देश सन् १७६५ ई० में इलाहाबाद की सन्धि में शाह आलम ने अंग्रेज़ों को दे दिया था पर अभी तक यह महरठों के हाथ में था।

१४—ईस्ट इण्डिया कम्पनी लार्ड वेलेज़ली के इन देशों के लेने से प्रसन्न न हुई। उन के व्यापार का सब मुनाफ़ा सब लड़ाई में खर्च हो गया था। उन्हों ने एक और गवरनर जेनरल भेजा और उस को हुकुम दिया कि चाहे जो हो जाय भारत के किसी राजा से न बोलें और महरठों या और किसी से लड़ाई न लड़े।

१५—सन् १८०५ ई० में वह इङ्गलैण्ड लौट गया। वह भारत में सात बरस रहा। उस ने मद्रास प्रेसीडेन्सी पूरी की और पश्चिमोत्तर प्रान्त बनाया। इस नक़शे से मालूम होगा कि उस ने अङ्गरेज़ी राज कितना बढ़ाया। पहले नक़शे के मिलाने से पता लगेगा कि उस ने लार्ड कार्नवालिस के पीछे सात बरस के भीतर कितने देश अंग्रेज़ी राज्य में मिलाये।

५१—लार्ड हेस्टिङ्गस्।

(उस ने अंग्रेज़ों को भारत का राजा कैसे बना दिया)।

१—सन् १८०५ से १८१३ ई० तक अर्थात् लार्ड वेलेज़ली के भारत छोड़ने के आठ बरस पीछे जो तक गवर्नर जेनरल आये उन्हों ने कोई लड़ाई नहीं लड़ी पर अंग्रेज़ी भारत ही में शान्ति रही और सारे देश में लड़ाइयाँ ही होती रहीं। महरठों ने राजपूतों पर आक्रमण किया। राजपूतों ने अंग्रेज़ों की सहायता मांगी। डाकुओं के झुण्ड जिन्हें लोग पिण्डारी कहते थे मध्य भारत के लोगों को लूटते मारते और उन के गांवों को जलाते फिरते थे और अंग्रेज़ी राज पर भी धावा मार दिया करते थे। अंग्रेज़ी भारत को छोड़ और कहीं कोई ऐसी बलवान् शक्ति न थी जो उन्हें दबा सकती और पेशवा और महरठा सरदार अंग्रेज़ी भारत पर चढ़ने की तैयारी कर रहे थे।

२—लार्ड हेस्टिङ्गस् इन दिनों गवर्नर जेनरल था। उस ने

बिलायत के ईस्ट इण्डिया कम्पनी को सब हाल लिखा। वह जानता था कि और सब राज्य बहुत जल्दी अंग्रेज़ी राज्य में मिल जायंगे इस से उस ने लार्ड वेलेज़ली की चाल चलने की आज्ञा मांगी और यह कहा कि सब हिन्दुस्थानी राजाओं की एक ही बार अंग्रेज़ी सरदार की अधीनता स्वीकार करने का हुक्म दिया जाय, और किसी उपाय से शान्ति नहीं हो सकती। ईस्ट इण्डिया कम्पनी लार्ड हेस्टिङ्गस् पर पूरा भरोसा करती थी। वह उसे बुद्धिमान् और दूरदर्शक समझती थी। कम्पनी ने अब जाना कि उस का कहना ठीक है और लार्ड वेलेज़ली ने भी ठीक ही किया था। इस से उस ने उत्तर दिया कि जो चाहो करो।

लार्ड हेस्टिङ्गस्।

३—इसी समय नैपाल के गोरखों ने पश्चिमोत्तर देश पर चढ़ाई की और नागपुर के राजा और पेशवा ने अङ्गरेज़ों के विरूद्ध हथियार उटाये और होलकर और सेंधिया को लेकर मध्य भारत में अङ्गरेज़ों पर चढ़ आये।

४—लार्ड हेस्टिङ्गस् सब के लिये तयार था। एक बड़ी अङ्गरेज़ी सेना ने नैपाल जा कर गोरखों को हराया।

उन के राजा ने अधीनता स्वीकार की। इस से उस के साथ सन्धि कर ली गई उस को अपने देश में राज्य करने की आज्ञा दे दी गई। हिमालय पर्वत के दक्षिण का देश पश्चिमोत्तर देश में मिला लिया। अब वह अङ्गरेज़ों का मित्र होके नेपाल में राज्य कर रहा है।

५—इस के पीछे कुछ पलटनें पिण्डारियों से लड़ने को भेजी गईं। यह डाकू लोग सिपाहियों की भाँति नहीं लड़ते थे। यह सदा भाग जाते थे तब भी यह जगह जगह खदेड़े जाते थे। कुछ दिन पीछे यह बिलकुल दब गये और अपने अस्त्र शस्त्र डाल कर खेतीबारी करने लगे।

६—अंग्रेज़ी सेनापति अब महरठों से लड़ने चले। कुछ घमसान लड़ाइयों के पीछे उन्हों ने महरठों पर विजय पाई। पेशवा का राज्य उस से छीन लिया गया और उसे पेनशिन दे दी गई। उस को राज्य उन देशों में मिला लिया गया जो उस ने लार्ड वेलेज़ली को दिये थे और वह सब मिल कर बम्बई हाता बना। होलकर, सेंधिया और भोंसला को अपने अपने राज्य में राज्य करने की आज्ञा दी गई और उन्हों ने भी अङ्गरेज़ों की अधीनता स्वीकार की। पांच बरस में लार्ड हेस्टिङ्गस् ने वह काम जो कि लार्ड वेलेज़ली ने आरम्भ किया था पूरा करके अङ्गरेज़ों को भारत का राजा बना दिया। उस ने बम्बई हाता पूरा कर दिया। वह अंग्रेज़ी भारत का चौथा बनानेवाला था।

लाट हेस्टिंग्स के समय की
ब्रिटिश इण्डिया
सन १८२३ ईस्वी

कश्मीर
पंजाब सिक्खों
राजपुताना
सिन्ध
गुजरात
नेपाल
अवध
गंगा
चम्बल नं
सिन्धिया
बंगाल
कलकत्ता
आसाम
नर्मदा नं
बरार
बम्बई
निजाम राज्य
मैसूर
मद्रास

सन् १८२३ ई० वाले नक़शे को देखने से यह जाना जाता है कि लार्ड हेस्टिङ्गस् ने लगभग दस बरस में सरकारी राज्य में कौन कौन से देश मिलाये।

४२—लार्ड विलियम बेण्टिङ्क।

सड़कों पर यात्रियों की रक्षा का प्रबन्ध।

१—पहले आठ गवरनर जेनरलों को बहुत सी लड़ाइयाँ लड़नी पड़ी थीं। जब लार्ड बेण्टिङ्क नवें गवरनर जेनरल हुए तो चारों ओर शांति थी। इसका कारण यह था कि वेलेजली ने अंग्रेज़ों को भारत का राजाधिराज बना दिया था। कोई राजा या सरदार किसी दूसरे से लड़ाई नहीं कर सकता था। करता तो गवरनर जेनरल उस को रोकता। सब प्रान्तों की प्रजा सुरक्षित थी। कोई राजा अपनी प्रजा को दुख नहीं दे सकता था और दुख देता तो गवरनर जेनरल उसे रोकता।

२—लड़ाई के दिनों में राजा का यह काम है कि सेना रखे और उस को बैरी से लड़ने के लिये सज्जित करे। लड़ाई में देश का रुपया बहुत सा नष्ट होता है। जब शांति रहती है तो राजा को अपने देश की दशा सुधारने और अपनी प्रजा को सुखी करने का अवकाश रहता है। लार्ड बेण्टिङ्क के समय में शांति रही। इस से उन को भारत की प्रजा के भलाई के लिये बहुत कुछ करने का अवकाश मिला।

३—पहला काम जो उस ने किया वह रास्तों और सड़कों पर की रक्षा थी। विना सिपाही साथ लिये कोई राह नहीं चल सकता था। देश में डकैत और ठग फैले हुए थे। डाकू रास्ते में लूटते और ठग बटोहियों का गला घोंट मार डालते थे और उन का माल असबाब ले जाते थे। बहुत से लोग जो परदेश करने जाते थे घर फिर कर नहीं आते थे। कारण यह था कि ठग और डाकू उन को लूट कर जान से मार डालते थे और उन के बाल बच्चे उन को फिर न देखते थे।

४—डाकू साधारण यात्रियों के भेष में तीस चालीस चालीस की टोलियों में फिरा करते थे; धनी लोगों के घरों का पता लगा कर रात को मशालें लेकर उनपर डाका डालते थे; उन का धन लूट लेते थे; और उन को नाना प्रकार के दुख देते थे, और कभी कभी उन को मार भी डालते थे।

५—ठग डकैतों से भी निठुर और भयंकर थे। डकैत तो पहले धन मांगते थे और धन न पाते थे तो मार डालते थे पर ठग तो सदा प्राण ही लेते थे। ठग काली को पूजते थे और यह समझते थे कि काली जीव मारने से प्रसन्न होती है। यह वही देवी थी जिसे चित्तौर के राजपूत राजा भीमसीं ने सपने में देखा था। यह दस दस बारह बारह की टोलियाँ बना कर निकलते थे। यह भी शान्त भले मानस गांववालों का भेष बनाते थे। रास्ते में कोई यात्री

मिलता था तो उसके मित्र बन जाते थे। जब वह अकेला रस्ते या घने बन में पहुंचता था तो उस के गले में रूमाल डाल कर ऐसा ऐंठते थे कि वह मर जाता था; फिर उस की लाश को गाड़ देते थे और उस का माल असबाब ले लेते थे;

ठग।

जब इस काम से छुट्टी पाते थे तो खेती बारी और दुकानदारी के धन्धे में लग जाते थे और किसी को यह सन्देह न होता था कि वह लोग पापी बदमाश हैं। ठगों की एक बोली और बन्धे इसारे थे जिन को उन के सिवा और कोई नहीं समझता था।

६—बेण्टिङ्क ने अङ्गरेज़ी अफ़सरों को आज्ञा दी कि जाओ ठगों और डाकुओं की जड़ खोद डालो। सात आठ बरस में पन्द्रह सौ ठग पकड़े गये। ऊपर कुछ

ठगों का चित्र है। देखो इन के चेहरे कैसे भयानक हैं। कुछ दिन पीछे एक भी ठग और डाकू न बचा। रास्तों और सड़कों पर ऐसा सुख चैन हो गया जैसा सैकड़ों बरस से किसी को न मिला था।

५३—लार्ड डलहौज़ी।

भारत में अंग्रेज़ी राज का स्थापन करनेवाला पांचवां पुरुष।

१—लार्ड डलहौज़ी तेरहवां गवरनर जेनरल था। उस ने बहुत से काम ऐसे किये जिन से यह देश पहले की अपेक्षा बहुत सुखी और धनी हो गया।

२—यह भारत में अंग्रेज़ी राज का स्थापन करनेवाला पांचवां पुरुष कहलाता है क्योंकि लार्ड क्लाइव, लार्ड कार्नवालिस, लार्ड वेलेज़ली और लार्ड हेस्टिङ्गस् की तरह इस ने भी बहुत सी रियासतों को अंग्रेज़ों के अधीन किया।

३—पहला देश पञ्जाब था जिस में सिक्ख रहते हैं। उन का सब से बड़ा राजा रणजीत सिंह था जो अंग्रेज़ों का मित्र था। उस के मरने के पीछे सिक्ख सरदार अंग्रेज़ों से लड़ बैठे पर हार गये और लार्ड डलहौज़ी ने इस अभिप्राय से कि फिर झगड़ा बखेड़ा न हो और देश पठानों की लूट मार से भी बचा रहे पञ्जाब को अंग्रेज़ी राज में मिला लिया।

बहादुर सिक्ख सिपाही अंग्रेज़ी अफ़सरों की कमान में अंग्रेज़ी सेना में भरती किये गये और अब वह भारत की अंग्रेज़ी सेना के सब से अच्छे सिपाही समझे जाते हैं।

४—हैदराबाद के उत्तर महानदी और गोदावरी के बीच का महरठा देश नागपुर के राजा भोंसला के शासन में था। राजा मर गया और उस के कोई सन्तान न थी इस लिये उस का राज अंग्रेज़ी अमलदारी में मिला लिया गया। और उसका नाम मध्यप्रदेश रखा गया।

रणजीत सिंह।

५—अवध के नवाब के राज्य में ऐसा कुप्रबन्ध और उपद्रव मचा हुआ था और वह अपनी प्रजा पर ऐसा अत्याचार करता था कि प्रजा ने गवरनर जेनरल से सिकायत की। कई गवरनर जेनरलों ने उस को समझाया और कहा कि देश का प्रबन्ध ठीक न होगा तो तुम्हारा देश छिन लिया जायगा। पर देश की दशा बिगड़ती गई। अवध को नष्ट होने से बचाने के लिये लार्ड डलहौज़ी ने उसे अंग्रेज़ी शासन में कर लिया। नवाब के लिये बड़ी पेनशन कर दी गयी और वह कलकत्ते भेज दिये गये।

लार्ड डलहौजी के समय की
ब्रिटिश इण्डिया।
सन् १८५६ ईस्वी

राजपूताना
बंगाल हाता
कलकत्ता
मध्य प्रदेश
बरार
बम्बई
निजाम राज्य
मद्रास

६—लार्ड डलहौज़ी के इन प्रान्तों को अंग्रेज़ी राज में मिलाने के कारण अंग्रेज़ी अमलदारी पहले से एक तिहाई बढ़ गई। पृष्ठ २४३ का नक़शा देखो और उस नक़शे को भी देखो जो पृष्ठ २३६ पर है और जिस में लार्ड हेस्टिङ्गस् के सामने अंग्रेज़ी राज का विस्तार दिखाया गया है तो तुम जानोगे कि लार्ड डलहौज़ी ने अंग्रेज़ी अमलदारी कितनी बढ़ाई। उन के समय से फिर कोई देश इस में नहीं जोड़ा गया। इतना ही हुआ कि ब्रह्मा देश का आकार बढ़ गया।

७—ब्रह्मा का राजा मूढ़ता से अंग्रेज़ों से लड़ बैठा और परास्त कर दिया गया और ब्रह्मा का वह भाग जो पेगू कहलाता है और जिस का प्रधान नगर रंगून है अंग्रेज़ी ब्रह्मा में मिला लिया गया।

५४—अंग्रेज़ी राज के लाभ।

१—आज कल कोई मद्रास से बम्बई या कलकत्ता जाना चाहे या किसी बड़े शहर से दूसरे शहर की यात्रा करना चाहे तो सुन्दर रेलगाड़ी में बैठ जाता है और घण्टे में १० कोस चला जाता है। साठ बरस पहले रेल गाड़ियाँ न थीं। जितनी अब एक दिन में यात्रा हो सकती है उतनी तब अठवारों में होती थी और कभी इतने में भी पूरा न पड़ती थी। साठ बरस हुए लार्ड डलहौज़ी ने सब से पहले रेल की सड़क बनवाई थी। यह सड़क पहले

२० ही मील लम्बी थी। अब भारत भर में २३६००० मील लम्बी रेल की सड़कें हैं।

२—उन दिनों में दूर दूर के गाँवों में अंग्रेज़ी माल मिलना बहुत कठिन था और बहुत महंगा मिलता था क्योंकि व्यापारियों को बैल-गाड़ियों पर लाद कर ले जाना पड़ता था। अब यह माल बहुत सस्ता हो गया है। रेल इसको सब जगह पहुँचा देती हैं और ख़र्चा भी कम पड़ता है।

३—पहले जब कभी अकाल पड़ता तो हज़ारों आदमी भूखों मर जाते थे क्योंकि वहाँ अनाज पहुँचाने में बड़ी कठिनाई पड़ती थी। अब जब कभी अकाल पड़ता है तो भारत, अमेरिका और इङ्गलिंस्तान के भी उदार लोग अनाज मोल लेने के लिये रुपया देते हैं और अनाज बड़ी सुगमता से भूखों के खाने के लिये सब जगह पहुँचा दिया जाता है।

लर्ड डलहौजी।

४—भारत की बड़ी बड़ी नदियों का पानी समुद्र में जाकर गिरता है और किसी काम नहीं आता। यह पानी ऐसी जगह पहुँचाया जाय जहाँ पानी नहीं है तो लोग

वहाँ खेती कर सकते हैं। लार्ड डलहौज़ी ने बहुत सी नहरें बनवाईं और सूखी धरती पर पानी पहुँचाया। उन्हों ने गङ्गा की नहर निकलवाई जिसके बराबर संसार में दूसरी नहर नहीं है। उन की निकलवाई नहरें तीन हज़ार मील तक देश में गई हैं उस को उपजाऊ बनाती हैं और जहाँ पहले चटियल मैदान रहता था वहाँ अब हरे भरे खेत पड़े हैं।

५—लार्ड डलहौज़ी की गवरनर जेनरली में अंग्रेज़ी और देशी भाषा पढ़ाने के लिये बहुत से मदरसे खुले। उस के समय में इस देश में पचीस हज़ार स्कूल थे अब बढ़ते बढ़ते २००००० हो गये हैं जिन में ८० लाख लड़के पढ़ते हैं।

६—लार्ड डलहौज़ी के समय से पहले विरला ही कोई चिट्ठी लिखता था। डाक महसूल बहुत था। रेल का तो नाम ही न था और सड़कें भी बहुत कम थीं। हरकारे चिट्ठियाँ ले जाते थे और बहुत धीरे धीरे चलते थे। चिट्ठियों पर ठिकट न होते थे। दूर की चिट्ठियों का महसूल भी अधिक देना पड़ता था। लार्ड डलहौज़ी ने आध आने के टिकट बनवा दिये। अब एक आने में चिट्ठी देश के एक सिरे से दूसरे सिरे तक दो हज़ार मील तक पहुँच जाती हैं और पोस्ट कार्ड दो ही पैसे में जाता है। कुल भारत एक शक्तिमान् राजा के शासन में न होता तो डाक का

प्रबन्ध नहीं हो सकता था। इस समय करीब ७०००० डाकखाने और लेटर बक्स भारतवर्ष में है और करीब १२३ करोड़ चिठियाँ और पारसल साल भर में भेजे जाते हैं।

७—मद्रास से कलकत्ते को डाक के द्वारा चिट्ठी जाने में दो दिन लग जाते हैं। मद्रास से कलकत्ते को कोई पांच ही मिनट में सन्देशा भेजना चाहे तो तार द्वारा भेज सकता है जो बिजली की भाँति दौड़ता है। इस रीति से छोटा सन्देशा भेजने में बारह आने लगते हैं। तार भी पहले पहले लार्ड डलहौज़ी के समय में लगा था। इस समय भारतवर्ष में करीब ३६०००० मील में तार फैला हुआ है।

५५—गदर।

१—राबर्ट क्लाइव को पलासी की लड़ाई जीते और भारत में अंग्रेज़ी राज्य स्थापन किये पूरे १०० बरस बीत चुके थे। बड़े बड़े अदल बदल हुए और नई नई बातें जारी की गईं। यह सब भारत की भलाई के लिये थीं पर भारतवासी इन को अच्छा न समझते थे।

२—हम लोग इस समय में रहते हैं। रेल और तार को बड़े काम का जानते हैं। रेल तार और न रहे तो हम को बड़ा दुःख होगा। ऐसे ही एक आने के टिकट में चिट्ठी भेजने अच्छे स्कूल अस्पताल और समाचार पत्रों के होने से हम प्रसन्न हैं। पर पहले भारतवासियों ने इन को सुना तो

था नहीं इन से डरते थे और समझते थे कि हमारी हानि करने के लिये अंग्रेज़ इन को लाये हैं।

३—कोई कोई कहते थे कि रेल की पटरी और तार धरती को बांधने के लिये एक प्रकार की जञ्जीरें हैं। जब अंग्रेज़ों ने धरती बांध ली तो एक दिन हम लोगों को भी बांध लेंगे। जब लोगों ने रेलें गाड़ियों को देखा कि बिना घोड़े या बैल के भारी भारी गाड़ियाँ चलीं तो वह समझे कि इसके भीतर भूत-प्रेत या भवानी हैं। जब उन्हों ने देखा कि तार के द्वारा ५० कोस सन्देशा एक पल में पहुँच जाता है तो उनके डर का वारापार न रहा।

४—अब हम यह जानते हैं कि अंग्रेज़ी भाषा जानना कैसा उपयोगी है, और ऐसे स्कूलों से जिनसे अंग्रेज़ी भाषा पढ़ाई जाय कितने लाभ हैं। पर जब पहले अंग्रेज़ी मदरसे खोले गये तो बहुत लोग हिन्दू और मुसलमान दोनों यह समझे कि अङ्गरेज़ी पढ़ने से लड़का कृस्तान हो जायगा। हिन्दू यह समझे कि स्कूल और अस्पताल खोलने से अंग्रेज़ उन का धर्म लेना चाहते हैं। यह तो जानते ही थे कि अंग्रेज़ उन को कृस्तान करना चाहते हैं।

५—ऐसी ही बेसिरपैर की बात जिन को अब हम झूठी जानते और हँसते हैं दुष्टों ने बङ्गाल और अवध के सिपाहियों में फैलाई। इनका मुखिया एक महरठा सरदार नाना साहब था जो आप बादशाह बनना चाहता था। अवध में

बहुत से ताल्लुक़दार थे जिन की अंग्रेजी राज होने से प्रतिष्ठा कम हो गई थी और वह अपने पास पड़ोस के गाँव को लूट पाट न सकते थे। इन्हों ने समझा कि अंग्रेज़ देश से निकाल दिये जायँ फिर हम जो चाहेंगे किया करेंगे।

६—एकाएक बहुत से सिपाहियों ने गदर मचा दिया और जिन हाकिमों की आज्ञा मानने के लिये उन्हों ने कसम खाई थी उन्हीं से लड़ने लगे। उन्हों ने अपने अंग्रेज़ी अफ़सरों को गोली मार दी और अंग्रेज़ स्त्री पुरुष बच्चा जो मिला उसे मार डाला मानो वह पागल हो रहे थे और मुग़लों की राजधानी दिल्ली को चले गये। यहाँ मुग़ल वंश का एक राज-कुमार रहता था जिसके साथ अंग्रेज़ों ने बहुत अच्छा बर्ताव किया था। वह इन बिगड़े सिपाहियों का नायक बन गया और अपने को हिन्दुस्तान का बादशाह कहने लगा।

सर जान लारेन्स।

७—पर भारत के और भागों के हिन्दुस्थानी सिपाही इन बागियों से न मिले। वह बोले "कि हम ने अपने अफ़सरों का नमक खाया है हम इन को न मारेंगे"। इन का अभिप्राय यह था कि हम ने अपने अफसरों की आज्ञा मानने की

शपथ की है और हम इस के विरुद्ध न करगे। थोड़े ही दिन पहले सिक्ख अंग्रेज़ों के कट्टर बैरी थे और उन से बड़ी वीरता से लड़े थे; पर जब उनका देश ले लिया गया और एक बड़े अच्छे अफ़सर सर जान् लारेन्स के शासन में कर दिया गया तब उन्हों ने जाना कि अंग्रेज़ी राज कैसा अच्छा होता है और जो सुख उन को अब मिलता है वह कभी अपने देश के राजाओं के राज में न मिला था। वह अंग्रेज़ों के साथ रहे और उन की ओर से ऐसी वीरता से लड़े जैसे कि पहले वह उन्हीं से लड़े थे।

जेनरल हैवलाक।

८—अंग्रेज़ी सेना कलकत्ता मद्रास और बम्बई से दिल्ली को चली। अंग्रेज़ों ने बागियों के सब नगर ले लिये और दो तीन महीना पीछे दिल्ली भी सर हो गई। जनरल हैवलाक ने नाना साहेब को परास्त किया। वह बन में भाग गया और आज तक उसका पता नहीं है। बरस दो बरस में चारों ओर शान्ति हो गई।

५६ इङ्गलिस्तान की महारानी का भारत की राजराजेश्वरी बन जाना।

१—इङ्गलिस्तान की महारानी ने अब इस बात का उचित अवसर जाना कि ईस्ट इण्डिया कम्पनी से सब अधिकार लेकर आप देश का शासन करें और १८५८ ई० में वह भारत की महारानी हो गईं। ईस्ट इण्डिया कम्पनी १५० बरस रह कर तोड़ दी गई।

२—बीस बरस पीछे १८७७ ई० में महारानी ने भारत की राजराजेश्वरी की पदवी धारण की। उन के बराबर अच्छा शासन करनेवाला भारत में बिरला ही कोई हुआ होगा। उन का बरताव सब के साथ अच्छा था और वह सब पर दया करती थीं। वह अपने भारत के कंगाल भिखमङ्गों को भी ऐसे ही मानती थी जैसा इङ्गलिस्तान के बड़े से बड़े सरदार को।

राजराजेश्वरी विक्टोरिया।

३—इङ्गलिस्तान की महारानी भारत में नहीं रह सकतीं। इस लिये उन्हों ने अपनी ओर से देश का शासन करने के लिये एक अंग्रेज़ी सरदार भेजा। इस को वाइसराय

(राजप्रतिनिधि) कहते हैं। लार्ड कैनिंग पहला वाइसराय था। उस के पीछे चौदह वाइसराय आ चुके। आज कल लार्ड इरविन हमारे वाइसराय हैं (१६२७)।

४—अब सब से बड़ी विपत्ति जो भारत पर पड़ सकती है अकाल है। पहले भो इतनी ही अकाल पड़ते थे जितने अब पड़ते हैं। पर लोगों के प्राण बचाने के निमित्त बहुत कम उद्योग किया जाता था। एक देश का राजा दूसरे देश पर जो बीत रही थी उसे जानता न था और जो जानता भी तो उस की परवा ही क्या थी। परवाह भी होती तो वह कर क्या सकता था क्योंकि पहले तो सड़क बहुत थोड़ी थीं और जो थीं भी तो वह किसी काम की नहीं। चारों ओर लड़ाई दंगा हुआ करता था। राजाओं और बादशाहों को इतनी छुट्टी न थी कि और बातों का विचार करते। जब कभी बड़ा अकाल पड़ता तो लाखों आदमी मर जाते थे। अपने देश में खाने को अन्न और पीने को पानी न रहता और दूसरे देश से लाने का कोई प्रबन्ध न था।

लार्ड हार्डिङ्ग।

हिन्दुस्थान

६० ७० ८० ९० १००

३० २० १०

अंगरेजी बिलूचिस्तान

हिमालय

राजपूताना

निज़ाम का राज्य

५—अब भारत एक सम्राट् के शासन में है और वाइसराय को भारत के एक खण्ड की वैसे ही चिन्ता रहती है जैसी दूसरे की। जब अकाल आनेवाला रहता है तो उसे इस का समाचार दिन दिन तार से मिला करता है। वह आज्ञा देता है कि रेलों के द्वारा अन्न उन स्थानों से जहाँ महंगी नहीं है उन जगहों को भेजा जाय जहाँ अकाल पड़ा है। जिन के पास अनाज मोल लेने को पैसा नहीं है उन्हें ऐसा हलका काम दिया जाता है जिस को करके पैसा कमायें और अन्न मोल ल। सारे भारत में एक शासन होने से यहाँ के रहनेवाले एक कुल के भाई भाई हो रहे हैं; सब एक दूसरे की सहायता करते और जहाँ कहीं अकाल पड़ता है वहाँ रुपया और अनाज भेजते हैं। इङ्गलिस्तान और अमेरिकावाले भी हम लोगों पर दया करते और अपने देश से लाखों रुपया और जहाज भर भर अन्न यहां वालों के लिये पहुंचाते हैं। इस लिये आज कल अकाल से उतनी हानि नहीं होती जितनी पहले हो जाती थ।।

६—तुम ने देख लिया कि कई राजाओं और बादशाहों के अधिकार में रहने से जो आपस में लड़ा करते थे, भारत के लिये एक शक्तिमान् और बुद्धिमान् बादशाह के शासन में रहना कैसा अच्छा है। अब भारत-वासी एक कुल के बच्चों की भाँति रहते हैं और जैसे अब सुखी हैं वैसे कभी नहीं रहे।

७—पहले पृष्ठ पर एक नक़शा दिया हुआ है। भारत में

अंग्रेज़ी राज का विस्तार इस में दिखाया गया है। इसको उस नक़शे से मिलाओं जो पृष्ठ २४३ पर छपा है और जिस में १८५६ ई० में अंग्रेज़ी राज का विस्तार है जब लार्ड डलहौज़ी वाइसराय थे और जिस के थोड़े ही दिन पीछे इङ्गलिस्तान की महारानी ने भारत का शासन अपने हाथों में लिया तो ६५ बरस में जो प्रान्त अंग्रेज़ी शासन में आये उनका पता लग जायगा।

८—जनवरी सन् १९०१ ई० में इङ्गलिस्तान की अच्छी और दयालु महारानी और भारत की राजराजेश्वरी का देहान्त हो गया। उन के बड़े बेटे जो प्रिन्स आफ़ वेल्स (वेल्स के राज-

कुमार) कहलाते थे एडवर्ड सप्तम के नाम से सिंहासन पर बैठे। उन्हों ने नौ बरस राज किया। वह भी बड़े अच्छे बादशाह थे और उन की प्रजा उन को बहुत चाहती थी। सन् १९१० ई० में वह भी मर गये और उन के बेटे जार्ज पञ्चम भारत के राज राजेश्वर और इङ्गलिस्तान के बादशाह हुए। इन्हीं के शासन में उत्तर-अमेरिका का आधा जिसे कनाड़ा कहते हैं, आस्ट्रेलिया महाद्वीप दक्षिण-अफ्रिका के बहुत से देश और और भी अनेक टापू और देश हैं।

चिरजीवे नृप जार्ज हमारा।
चिरजीवे यह भूप उदारा॥

श्रीमान् राजराजेश्वर जार्ज पञ्चम की जय।

हिन्दुस्थान के इतिहास की सरल कहानियां

(मानचित्र और चित्र समेत)

ई. मार्सडेन, बी. ए., एफ. आर. जी. एस., एम. आर. ए. एस.

और

लाला सीताराम, बी. ए., एफ. ए. यू., एम. आर. ए. एस.

रचित

विस्तृत संस्करण

मैकमिलन ऐण्ड कम्पनी, लिमिटेड

कलकत्ता, बम्बई, मद्रास, लण्डन

१९२७